

श्रीः ।

दुर्गासप्तशती ।

(कवचार्गलाकीलकप्रयोगविधिसहिता)

लघुजवणायचाग्रामनिवासिश्रीमत्पण्डितवदरीप्रसाद-
शास्त्रितनूजनिपण्डितमग्रीरामशास्त्रिविरचितया

शान्तनवीटीकानुसारिण्या भाषाटीकया

समलंकृता ।

Sa 25k
DURIM 101

सेयं

खेमराज श्रीकृष्णदासइत्यनेन

मुंबय्यां

स्वकीये “ श्रीवेङ्कटेश्वर ” मुद्रणालये

मुद्रयित्वा प्रकाशिता ।

संवद् १९५० शके १८१५

अस्य ग्रंथस्य पुनर्मुद्रणादयोऽधिकाराः १८६७ समवर्षिक २५

तमराजनियमानुसारेण प्रकाशकाधीनाः सति ।

अथ भुवनेश्वरी ।



पुस्तकमिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास.

“श्रीवेङ्कटेश्वर” छापखाना-मुंबई.

श्रीः ।

अथ सप्तशतीस्थविषयानुक्रमणिका

सख्या	विषय.	पृष्ठ
१	प्रयोगविधिः	१
२	शतचंडीविधिः	६
३	संकल्पः	८
४	सप्तशतीकवचम्	१
५	अर्गलास्तोत्रम्	१०
६	कीलकस्तोत्रम् ..	१४

शप्तशतीप्रारंभः ।

- ७ अध्याय प्रथम—सुरथराजा और समाधि वैश्यका सुमेधा ऋषिके आश्रममें समागम. ऋषि और उन्होंका संवाद तहां देवीमाहात्म्य का वर्णन. तिसमें मधुकैटभदैत्यवधवर्णन १
- ८ अध्याय दूसरा—महिषासुरके वधार्थ देवीकी सब देवतोंसे उत्पत्ति. देवोंने देवीको शस्त्रास्त्रादि देना. महिषासुरके सेनाके साथ देवीका युद्ध १४
- ९ अध्याय तीसरा—देवीका महिषासुरसें तुमुलयुद्ध. महिषासुरवध... २५
- १० अध्याय चतुर्थ—इंद्रादिदेवकृत देवीस्तोत्र. ३२
- ११ अध्याय पांचमा—शुभनिशुभसें त्रस्तहुए देवोंकरिकै देवीस्तोत्र, देवीसें शुभनिशुभदैत्यदूतसंवाद... ४१
- १२ अध्याय छठमा—देवीकृत धूम्रलोचनवध. ५६
- १३ अध्याय सातमा—देवीकृत चंडमुंडवध. ५७

- १४ अध्याय आठमा—ब्रह्मादिकोंकी शक्तियां देवीके सहायार्थ आई हैं. महोदेवजीको दूत करके शंभुके पास भोजना. दैत्योंसे युद्ध.
रक्तबीजवध ६३
- १५ अध्याय नवमा—देवीकृत निशुंभवध ७३
- १६ अध्याय दसमा—देवीकृत शंभुवधवर्णन ७८
- १७ अध्याय ग्यारमा—सर्वदेवकृत नारायणीदेवीका स्तोत्र, देवीने दे-
वोंको इष्टवर देना. ८३
- १८ अध्याय बारमा—देवोंसे देवीका वाक्य और स्तुतिमाहात्म्य ... ९२
- १९ अध्याय तेरमा—सुरथराजा और समाधि वैश्यने ऋषिके आज्ञा-
से तपकरना. देवीका प्रादुर्भाव. राजा और वैश्य दोनोंकूं वरदान.
राजाको पुनः स्वराज्यप्राप्ति, वैश्यको मोक्षलाभ देवीमाहात्म्य संपूर्ण ९९

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

पुस्तकमिलनेकाठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास
श्रीर्विकटेश्वर छापाखाना (मुंबई.)

श्रीः ।

अथ प्रयोगविधिः ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ प्रयोगान्तराणि कात्यायनीतन्त्रो-
क्तानि ॥ प्रतिश्लोकमाद्यन्तयोः प्रणवजपेन्मन्त्रसिद्धिः ॥ १ ॥
अग्रे सर्वत्र श्लोकपदं मन्त्रोपलक्षणं ॥ सप्रणवमतुलोम-
व्याहृतित्रयमादौ अन्तेतुविलोमतदित्येवं प्रतिश्लोकं कृत्वा
शतावृत्तपाठेऽतिशीघ्रं सिद्धिः ॥ २ ॥ प्रतिश्लोकमादौजातवे-
दस इत्यृचंपठेत्सर्वकामसिद्धिः ॥ ३ ॥ अपमृत्युवारणाय
व्यंक्कमन्त्रंपठेत् ॥ आदावन्तेचशतमित्यर्थः ॥ प्रतिश्लोकंतन्म-
न्त्रजपइत्यन्यत्र ॥ ४ ॥ प्रतिश्लोकंशूलेनपाहिनो देवीतिपाठाद-
पमृत्युनाशः अस्यकेवलस्यापि श्लोकस्यलक्षमयुतंसहस्रंशतं
वाजपे अपमृत्युवारणम् ॥ ५ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ प्रयोगान्तराणाङ्कात्यायनीतन्त्रोक्तानाम्भाषाटीके-
यम् ॥ सप्तशतीके पाठ करनेमें मन्त्रमन्त्रके आदि अन्तमें जो ॐकार पढ़े तो
जिसमन्त्रकी सिद्धिचाहै उसी मन्त्रकी सिद्धिहोय ॥ १ ॥ और जो भूर्भुवः
स्वः इसप्रकार सुलटे क्रमसे ॐकारसहित तीन व्याहृति मन्त्रमन्त्रके आदिमें
पढ़े और अन्तमें स्वःभुवर्भूः इसप्रकार उलटे क्रमसे पढ़े ऐसे सप्तशतीके शत
१०० पाठ करनेसे तत्काल कार्यकी सिद्धिहोय ॥ २ ॥ और जो सप्तश-
तीके पाठ करनेमें मन्त्रमन्त्रके आदिअन्तमें जातवेदसे इस ऋचाको पढ़े तो
सब काम सिद्धहोय ॥ ३ ॥ और अकाल मृत्यु हटानेके लिये सप्तशती पा-
ठके आदि अन्तमें व्यम्बकंयजामहे इस मन्त्रको शत १०० शत १००
जप करे अथवा मन्त्रमन्त्रके प्रति पढ़े तो अकालमृत्यु हटे ॥ ४ ॥ और जो
सप्तशती पाठमें मन्त्रमन्त्रके प्रति शूलेनपाहिनोदेवि इस मन्त्रको पढ़े अथवा
इस केवल मन्त्रका लक्ष १००००० अथवा दशहजार १०००० अथवा
हजार १००० अथवा शत १०० जपकरे तौभी अकाल मृत्यु हटताहै ॥ ५ ॥

प्रतिश्लोकं शरणागतदीनार्त्तंतिश्लोकं पठेत्सर्वकार्यसिद्धिः ॥ ६ ॥

प्रतिश्लोकं करोतुसानः शुभेत्यर्द्धं पठेत्सर्वकार्यसिद्धिः ॥ ७ ॥

स्वाभीष्टवरप्राप्तये एवं देव्यावरं लब्ध्वेति श्लोकं पठेत् ॥ ८ ॥ स-

र्वापत्तिवारणाय प्रतिश्लोकं दुर्गे स्मृतेति पठेत् ॥ अस्य केवलस्या-

पिश्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः ॥ ९ ॥

सर्वाबाधेत्यस्य लक्षजपे प्रतिश्लोकपाठे वा श्लोकोक्तम्फलम् ॥ १० ॥

टीका—और जो सप्तशतीके पाठ करनेमें मन्त्रमन्त्रके प्रति शरणागत दीनार्त्त इस मन्त्रको पढ़े तो सम्पूर्ण कार्य सिद्धि होय ॥ ६ ॥ और जो करो तुसानः शुभहेतुरीश्वरीशुभानिभद्राण्यभिहन्तुचापदः इस अर्द्धमन्त्रको सप्तश तीपाठमें मन्त्रमन्त्रके प्रति पढ़े तो सम्पूर्ण कार्यकी सिद्धि होय ॥ ७ ॥ और मनोवांछित वरकी प्राप्तिके लिये मन्त्रमन्त्रके प्रति एवं देव्यावरं लब्ध्वा इस मन्त्रको पढ़े ॥ ८ ॥ और सम्पूर्ण आपत्तिनिवारणके लिये मन्त्रमन्त्रके प्रति दुर्गे स्मृता इस मन्त्रको पढ़े अथवा इस केवल मन्त्रका जैसा कार्य होय तिसके अनुसार लक्ष १००००० अथवा दशहजार १०००० अथवा हजार १००० अथवा शत १०० जप करना उचित है ॥ ९ ॥ और सर्वा-वाधाविनिर्मुक्त इस मन्त्रका लक्ष १००००० जप करनेसे अथवा इसको सप्तशतीके पाठमें मन्त्रमन्त्रके प्रति पढ़नेसे धन धान्य पुत्र इनकरिके युक्त मनुष्य होता है ॥ १० ॥

इत्थं यदा यदा बाधेति प्रतिश्लोकजपे महामारीशान्तिः ॥ ११ ॥

ततो विव्रेणुपोराज्यमिति मन्त्रस्य जपे पुनः स्वराज्यलाभः ॥ १२ ॥

हिनस्ति दैत्यतेजांसि इत्यनेन सदीपबलिदाने घण्टाबन्धने

च बालग्रहशान्तिः ॥ १३ ॥ आद्यावृत्तिमनुलोमेन पठित्वा

ततो विपरीतक्रमेण द्वितीयामनुलोमेन ॥ तृतीयामित्येवमा-

वृत्तित्रयेण शीघ्रं कार्यसिद्धिः ॥ १४ ॥ सर्वापत्तिवारणाय

दुर्गे स्मृतेत्यर्द्धं ततो धर्दं तिस्रः दूरके इत्यृचं तदन्ते दारिद्र्यदुः

खेत्यर्द्धमेव द्वयानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः ॥ १५ ॥

टीका—और सप्तशतीके पाठमें मन्त्र मन्त्रके प्रति इत्थं यदा यदा बाधादानवोत्था भविष्यति इस मन्त्रको पढ़नेसे महामारी शांत होय ॥ ११ ॥ और सप्तशतीके पाठमें जो मन्त्र मन्त्रके प्रति 'ततो ववेनृपो राज्यम्' इस मन्त्रको जपे तो गयाहुवा अपना राज्य फिर मिले ॥ १२ ॥ और 'हिनस्ति दैत्यवेजांसि' इस मन्त्रकरिके भगवतीके अर्थ दीपक सहित बलिदान देनेसे और भगवतीके मंदिरमें घण्टा बांधनेसे बालग्रहोंकी शांति होय ॥ १३ ॥ और जो पहिले सप्तशतीका सुलटे क्रमसे पाठ करै और दूसरे उलटी रीतिसे फिर तीसरे सुलटे क्रमसे पाठ करे इस प्रकार तीन पाठ करनेसे तत्काल कार्यकी सिद्धि होय ॥ १४ ॥ सम्पूर्ण आपत्ति निवारणके लिये 'दुर्गे स्मृता हरसि गीतिमशेषजन्तोः' इस अर्द्धमन्त्रको पढ़कर तिसके अन्तमें 'यदन्ति यच्च दूरके' इस ऋचाको पढ़े फिर तिसके अन्तमें दारिद्र्यदुःख इस अर्द्धमन्त्रको पढ़े इस प्रकार जैसा कार्य हो तिसके अनुसार लक्ष १००००० अथवा दशहजार १०००० अथवा हजार १००० अथवा शत १०० इसका जप करना उचित है ॥ १५ ॥

कांसोस्मीत्यृचं प्रतिश्लोकं पठेच्छर्माप्राप्तिः ॥ १६ ॥ प्रतिश्लोकमनृणा अस्मिन्नित्यृचं पठेद्वणपरिहारः ॥ १७ ॥ मारणार्थमेव मुक्त्वासमुत्पत्येति श्लोकं प्रतिश्लोकं पठेन्मारणोक्ता वृत्तिभिः फलसिद्धिः ॥ १८ ॥ ज्ञानिनामपि चेतांसि इति श्लोकजपमात्रेण सद्यो मोहनमित्यनुभवसिद्धम् ॥ प्रतिश्लोकं तच्छ्लोकपाठे त्ववश्यम् ॥ १९ ॥ रोगानशेषानिति श्लोकस्य प्रतिश्लोकं पाठे सकलरोगनाशः ॥ तन्मात्रजपेपिसः ॥ २० ॥

टीका—और जो सप्तशतीके पाठमें मन्त्र मन्त्रके प्रति 'कांसोस्मि' इस ऋचाको पढ़े तो लक्ष्मीकी प्राप्ति होय ॥ १६ ॥ और जो मन्त्र मन्त्रके प्रति 'अनृणा अस्मिन्' इस ऋचाको पढ़े तो ऋण उतरे ॥ १७ ॥ और मारणके लिये 'एवमुक्त्वासमुत्पत्य' इस मन्त्रको मन्त्र मन्त्रके प्रति पढ़े और मारणमें

जेतनी कात्यायनी आदि तन्त्रोंमें सप्तशतीकी आवृत्ति वर्णन करी हैं तिन आवृत्तियोंके करनेसे मारणरूप फलकी सिद्धि होती है ॥ १८ ॥ और 'ज्ञानिनामपिचेतांसि' इस मन्त्रके जप मात्र करने करके तत्काल वशीकरण होय यह अनुभव किया हुआ है अथवा मन्त्र मन्त्रके प्रति इस मन्त्रकों पढ़े तोभी वशीकरण सिद्ध होय ॥ १९ ॥ और 'रोगानशेषान्' इस मन्त्रको मन्त्र मन्त्रके प्रति पढ़नेसे सम्पूर्ण रोगका नाश होय अथवा तिस केवल मन्त्रके जपमात्रसेभी सम्पूर्ण रोगका नाश होता है ॥ २० ॥

इत्युक्तासातदादेवी गंभीरेतिश्लोकस्यप्रतिश्लोकं पाठे पृथग्जपे वा विद्याप्राप्तिर्वाग्वैकृतनाशश्च ॥ २१ ॥ भगवत्याकृतं सर्वमित्यादिद्वादशोत्तरशताक्षरोमन्त्रः सर्वकामदः ॥ सर्वापत्तिवारणश्च ॥ २२ ॥ देविप्रपन्नार्त्तिहरे इतिश्लोकस्ययथाकार्यं लक्षायुतसहस्रशतान्यतमसंख्यजपे प्रतिश्लोकं पाठे वा सर्वापन्निवृत्तिः सर्वकामाप्तिश्च ॥ एषुप्रयोगेषु प्रतिश्लोकं दीपाग्रे केवलमेव नमस्करणेऽतिशीघ्रं सिद्धिः ॥ प्रतिश्लोकं कामबीजसम्पुटितस्थयैकचत्वारिंशदिनं त्रिरावृत्तौ सर्वकामसिद्धिः ॥ २३ ॥ एकविंशतिदिनपर्यन्तमुत्तरीत्याप्रत्यहं द्वादशावृत्तौ वशीकरणम् ॥ २४ ॥ मायाबीजसम्पुटितस्य फट्पल्लवसहितस्य सप्तदिनपर्यन्तं त्रयोदशावृत्ताबुद्धाटनसिद्धिः ॥ २५ ॥

टीका—और इत्युक्तासातदेवी इस मन्त्रको मन्त्रमन्त्रके प्रति पठन करनेसे अथवा अलग केवलको जप करनेसे विद्याकी प्राप्ति होय और वाणीमें जो गुद्गदपना आदि विकार होय तिसको नाश होय ॥ २१ ॥ और भगवत्याकृतं सर्वम् इससे आदिलेकर यह एक सौ १२ बारह अक्षरका मन्त्र है सो सम्पूर्ण कामना दीनेवाला है और सम्पूर्ण आपत्तिका दूर करनेवाला है इस केवल मन्त्रकों जपे अथवा सप्तशती पाठमें मन्त्रमन्त्रके प्रति पढ़े ॥ २२ ॥ और जैसा कार्य हो तिसमाफिक देविप्रपन्नार्त्तिहरे मन्त्र की इस मन्त्रको जप लक्ष १०००००

अथवा दशहजार १०००० अथवा हजार १००० अथवाशत १०० इसमें से एकसंख्या जपकरनेसे अथवा इसमन्त्रको सप्तशतीपाठमें मन्त्रमन्त्रके पठनेसे सम्पूर्ण आपत्ति दूरहोय और सम्पूर्ण कामना पूर्णहोय और इन प्रयोगोंमें प्रतिमन्त्र दीपके आगे केवल नमस्कार करनेसे अतिशीघ्र फलकी सिद्धि होय और प्रतिमन्त्र काम बीजसम्पुटित अर्थात् ह्रीं इस करके सम्पुटित सप्तशतीको इकतालीस दिनतक नित्यप्रति तीन आवृत्तिकरनेसे सम्पूर्ण कामकी सिद्धिहोय ॥ २३ ॥ और जो इक्कीसदिनतक उसी कामबीजसम्पुटित सप्तशतीकी बारह आवृत्ति नित्यप्रतिकरनेसे वशीकारण सिद्धहोताहै ॥ २४ ॥ और जो ह्रीं इस मायाबीजकरके प्रतिमन्त्र सम्पुटितफट् पल्लव करके सहित सप्तशती पाठकी सप्तदिनतक नित्यप्रति त्रयोदश आवृत्तिकरनेसे उच्चाटन सिद्धहोय ॥ २५ ॥

तादृश्यामेव दिनचतुष्टयमेकादशावृत्तौ सर्वोपद्रवनाशः ॥
॥ २६ ॥ एकोनपञ्चाशद्दिनपर्यन्तम्प्रतिश्लोकं श्रीबीजसम्पुटितस्य पञ्चदशावृत्तौ लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ २७ ॥ प्रतिश्लोकं वाग्बीजसम्पुटितस्य शतावृत्त्या विद्याप्राप्तिः ॥ २८ ॥ इति ॥

टीका—और चार दिनतक नित्यप्रति एकादश आवृत्ति करनेसे सम्पूर्ण उपद्रवका नाश होय ॥ २६ ॥ और उर्णचास दिनतक प्रति मन्त्र श्रीबीजसम्पुटित सप्तशती पाठकी पंदरह आवृत्तिकरनेसे लक्ष्मीकी प्राप्तिहोय ॥ २७ ॥ और प्रतिमन्त्र ऐं इस वाग्बीजसम्पुटित सप्तशतीकी शत १०० आवृत्तिकरनेसे विद्याकी प्राप्ति होय ॥ २८ ॥ इति तन्त्रोक्तप्रयोगान्तराणि ॥

इति प्रयोगविधिः समाप्तः ।

अथस्वरूपिणि ॥ पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तुते ॥ त्रिपुरां त्रिपु-
 से तारां त्रिवर्षां ज्ञानरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥
 ठनेगात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् ॥ कल्याणजननीं देवीं क-
 गोमेणीं पूजयाम्यहम् ॥ अणिमादिगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकां ॥ अनन्त
 होक्कां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ कामचारीं शुभां कान्तां कालचक्र
 सत्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥ चंडवीरां चंडमा-
 कीवण्डमुण्डप्रभंजनीम् ॥ पूजयामि सदादेवींचंडिकांचंडविक्रमाम् ॥ सदानंद-
 तर्शां तां सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शांतीं पूजयाम्यहम् ॥
 अमैदुस्तरेकार्यैर्भवदुःखविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदाभक्त्या दुर्गादुर्गार्तिना-
 सानीम् ॥ सुन्दरीं स्वर्णवर्णां सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्रजननीं देवीं सुभ-
 रीं पूजयाम्यहम् ॥ एतेभ्यैः पुराणोक्तैस्तां तां कन्यां समर्चयेत् ॥ इति पूजनं कु-
 रिकानाम् ॥ वेद्यां विरचिते रम्ये सर्वतोभद्रमंडले ॥ घटं संस्थाप्य विधिना तत्रा-
 ह्यार्चयेच्छिवाम् ॥ तदग्रे कन्यकाश्चापि पूजयेद्ब्राह्मणानपि ॥ उपचारैस्तु वि-
 धिर्नवार्णावरणान्यपि ॥ ॐकारः प्रथमं पठेत् पूर्णपीठमतः परम् ॥ तृतीयं काम-
 तं च पूजयेत्संप्रदायतः ॥ पूर्वादिदिक्षु पीठस्य गणेशादिचतुष्टयम् ॥ गणेशक्षेत्र-
 ालौ च पादुके बटुकास्त्रयः ॥ आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु पूज्यं देवीचतुष्टयम् ॥ जया
 च विजया चैव जयंती चापराजिता ॥ पूर्वोक्तं यत्र पूर्वकोणे सरस्वती सहितो ब्रह्मा
 श्रीसहितो विष्णुर्नैऋत्या मुमया शिवो वायव्यां पट्कोणे चक्रमध्यस्थमध्यबीजे श्री-
 मंहालक्ष्मीः ॥ ह्रीं महाकाली ऐं महासरस्वती दक्षिणवामयोः ॥ उदक्सींहो दक्षि-
 णेमहिषः ॥ पट्कोणे पुनंदजा रक्तदंतिका शाकंभरी दुर्गा भीमा भ्रामर्यः ॥
 सविंदुनामा द्यवर्णताराद्याश्चासां नाम मंत्राः पूजादौ ॥ तारः प्रणवः ॥ अष्टत्रयेषु
 ब्रह्माणीमाहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही नारसिंही ऐंद्री चामुण्डा उक्तरीत्या नाम-
 मन्त्रैः पूज्याः ततो विष्णुमायादिचतुर्विंशतिदेवताः प्रागादिक्रमेण केसरेषु पूज्याः
 प्रतिपन्नं च केसरत्रयम् ॥ ताश्च विष्णुमाया १ चेतना २ बुद्धि ३ निद्रा ४ शुधा ५ छाया
 ६ शक्ति ७ तृष्णा ८ क्षांति ९ जाति १० लज्जा ११ शान्ति १२ श्रद्धा

१३ कान्ति १४ लक्ष्मी १५ धृति १६ वृत्ति १७ स्मृति १८ दया १९
 तुष्टि २० पुष्टि २१ मातृ २२ भ्राति २३ चिति २४ रूपा एतावत्यः सप्त-
 शतीस्तवेपंचमेध्याये आसांचतुर्विंशतीनां नपाठ इति नभमितव्यम् ॥ कात्याय-
 नीतंत्रविरोधात् ॥ नालमूले तु संपूज्य माधवादि चतुष्टयम् ॥ आधारः कूर्मशे-
 पौ च चतुर्थी पृथिवी नृप ॥ गृहकणे पुगणेशः क्षेत्रपालो चटुको योगिन्यः ॥ प्रा-
 गादिदिक्षु इंद्राद्याश्चेति ॥ एवं चतुर्दिनं कुर्यात् ॥ तत्र प्रथमेऽह्नि एकावृत्तिर्द्वितीये
 द्वे तृतीये तिस्रश्चतुर्थे चतस्र इति ॥ पंचमे होमः ॥ होमद्रव्याणि ॥ पायसान्नैश्चि-
 मध्वक्तैर्द्राक्षारं भाफलादिभिः ॥ मातुलिगैरिक्षु खंडैर्नालिकेरयुतैस्तिलैः ॥ जा-
 तीफलैरात्रफलैरन्यैर्मधुरवस्तुभिरिति ॥ सप्तशत्यादशावृत्त्या प्रतिमन्त्रं हुतं चरेत् ॥
 अयुतं च नवार्णेन स्थापितेऽग्नौ विधानतः ॥ कृत्वा वरणदेवानां होमं तन्नाममन्त्र-
 तः ॥ कृत्वा पूर्णं हुतं सम्यग्देवमग्निं विमूज्य च ॥ अभिषिच्य यष्टारं विप्रौघ-
 कं लशोदकैः ॥ निष्कं सुवर्णमथवा प्रत्येकं दक्षिणां दिशेत् ॥ भोजयेच्च शतं वि-
 प्रान् भक्षयन् भोज्यैः पृथग्विधैः ॥ तेभ्योऽपि दक्षिणां दत्वा गृहीयादशिपस्तथा ॥
 एवं कृते जगद्वश्यं सर्वे नश्यंत्युपद्रवाः ॥ इति शतचण्डीविधिः ॥ श्रीजगदंबाप्रसादोस्तु ॥

अथ संकल्पः ।

अद्येत्यादि० श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं
 चण्डीसप्तशतीपाठाख्यं कर्म करिष्ये ॥ तदंगत्वेनादौ कवचागलाकीलक-
 पठनमाद्यंतयोरष्टोत्तरशतसंख्यनवार्णजपपूर्वकं क्रमेण रात्रिसूक्तदेवी-
 सूक्तपठनमंतरहस्यत्रयपठनं च करिष्ये ॥ ॥ इति संकल्प्य ॥ प्रथमं
 नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्र-
 णताः स्मृताः ॥ इति मंत्रेण पंचोपचारैः पुस्तकपूजां कुर्यात् ॥ श्रीरस्तु ॥

इति संकल्पः ।

श्रीः ।

अथ सप्तशतीकवचं

भाषाटीकासमन्वितम् ।



ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ॐ यद्ब्रह्म परमं लो-
के सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥ यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पिता-
मह ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ॥
देव्यास्तुकवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ २ ॥ प्रथमं शै-
लपुत्रीति द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ॥ तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूर्ममाण्डे-
ति चतुर्थकम् ॥ ३ ॥ पंचमं स्कंदमातेति षष्ठं कात्यायनीति
च ॥ सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥ ४ ॥ नवमं
सिद्धिदात्रीचनवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ॥ उक्तान्येतानि नामानि
ब्रह्मणैव महात्मना ॥ ५ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ नत्वा हमीशं जगदेकनाथं धर्म्मार्गलाकीलकसंयु-
तायाः ॥ करोमि भाषामबुधोपकृत्यै विन्मग्निरामः खलु सप्तशत्याः ॥

टीका—ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ एक समय मार्कण्डेय ऋषि ब्रह्मासे इसप्रकार
प्रश्न कर्ते भये कि हे ब्रह्मन् जो लोकके विषे अत्यंत गुप्त है और सब मनु-
ष्योंकी रक्षा करनेवाली और किसी अन्यको नहीं उपदेश दईहो सो वस्तु
हमको उपदेश करो ॥ १ ॥ तब ब्रह्माजी बोले कि हे विप्र हे महामुने सब
मनुष्योंका उपकार करनेवाली और अत्यंत गुप्त ऐसा देवीका कवच है ताहि
तुम श्रवण करो ॥ २ ॥ प्रथम तो शैलपुत्री और दूसरे ब्रह्मचारिणी तीसरे
चन्द्रघण्टा चौथे कुष्मांडा ॥ ३ ॥ पाचवे स्कंदमाता छठे कात्यायनी सातवे
कालरात्रि आठवे महागौरी ॥ ४ ॥ नवमें सिद्धिदात्री ये नवदुर्गा वर्णन करी
है येनाम ब्रह्मा मैनेही वर्णन किये है ॥ ५ ॥

अग्निनादह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतोरणे ॥ विषमे दुर्गमे चैव भया

तीक्ष्णशरणंगताः ॥ ६ ॥ नतेपांजायते किंचिदशुभं रणसंकटे ॥
 नापदंतस्य पश्यामि शोकदुःखभयं नहि ॥ ७ ॥ येस्तु भक्त्या
 स्मृतानूनन्तेपांसिद्धिः प्रजायते ॥ येत्वांस्मरन्ति देवेशिरक्षसे तान्न
 संशयः ॥ ८ ॥ प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिपासना ॥
 ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ ९ ॥ माहेश्वरी
 वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ॥ लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्म-
 हस्ता हरिप्रिया ॥ १० ॥

टीका—जो मनुष्य अग्नि करके दग्ध होता हुआ और जो संग्रामके
 विषे शत्रुओंके मध्यमें रुका हुआ और जो मनुष्य विकट दुर्गके विषे
 रुका हुआ और जे इन आदि भयार्त्त मनुष्य इन ब्रह्मोक्त दुर्गके नामोंका
 उच्चारण कर्त्ते हैं ॥ ६ ॥ तिनके रण आदि संकटोंमें कुछभी अशुभ
 नहीं होता है और शरणागत मनुष्यके में आपत्ति और शोक दुःख भय ये
 नहीं देखता हूं ॥ ७ ॥ और जिनो करके भक्तिसे दुर्गा स्मरण करी जाती है
 तिनके निश्चयकरके धन संतान आदि सब वस्तुकी वृद्धि होती है और हे
 देवेशि जे मनुष्य तुम्हारा स्मरण कर्त्ते हैं तिनकी तुम रक्षा करो हो इसमें सं-
 शय नहीं ॥ ८ ॥ और प्रेतोंके विषे स्थित ऐसी चामुंडा और महिप है सवारी
 जिसकी ऐसी वाराही और गजसमारूढ ऐंद्री और गरुड है वाहन जिसका
 ऐसी वैष्णवी ॥ ९ ॥ और वृषभके ऊपर बैठी हुई माहेश्वरी और मयूर है
 वाहन जिसका ऐसी कौमारी और कमल है आसन जिसका और कमल हैं
 हाथोंमें जिसके हरिकी प्रिया ऐसी लक्ष्मी ॥ १० ॥

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ॥ ब्राह्मी हिंससमारूढा सर्वाभ-
 रणभूषिता ॥ ११ ॥ इत्येतामातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ॥
 नानाभरणशोभा व्यानानारत्नोपशोभिताः ॥ १२ ॥ दृश्य
 न्तेरथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ॥ शंखचक्रगदाशक्तिहंलं
 चमुसलायुधम् ॥ खेटकंतोमरं चैव परशुपाशमेव च ॥ १३ ॥
 कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥ दैत्यानां देहनाशा-

यभक्तानामभयाय च ॥ १४ ॥ धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च
हिताय वै ॥ नमस्तेस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ॥ १५ ॥

टीका—और वृष है वाहन जिसका और श्वेतरूपकों धारण करनेवाली
ऐसी ईश्वरी देवी और हंसके ऊपर बैठी हुई संपूर्ण आभूषणोंकरके
अलंकृत ऐसी ब्राह्मी ॥ ११ ॥ हे देवि पूर्वोक्त तुमारी ये शक्ति संपूर्ण जगन्माता
संपूर्ण योग करके युक्त है और नाना प्रकारके रत्नजटित आभूषणोंकी शो-
भा करके युक्त है ॥ १२ ॥ और क्रोध करके विव्हल रथोंमें बैठी हुई दीख-
ती है और शंख चक्र गदा शक्ति हल खेटक तोमर परशु पाश ॥ १३ ॥ कुंत
त्रिशूल शार्ङ्ग धनुष इन उत्तम आयुधोंको दैत्योंके देहके नाशके लिये और
भक्तोंके अभयके लिये ॥ १४ ॥ और देवोंके हितके लिये धारण किये हैं
हे महारौद्रे हे महाघोरपराक्रमे ऐसी तुमकों नमस्कार हो ॥ १५ ॥

महाबलेमहोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ त्राहिमादेवि दुष्प्रेक्ष्ये
शत्रूणां भयवर्द्धिनि ॥ १६ ॥ प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यां
भयवर्द्धिनी ॥ दक्षिणेऽवतु वाराही नैऋत्यां खड्गधारिणी ॥ १७ ॥
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी ॥ उदीच्यां पातु कौमारी
ईशान्यां शूलधारिणी ॥ १८ ॥ ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वै-
ष्णवी तथा ॥ एवं दशदिशो रक्षेच्चामुण्डाशववाहना ॥ १९ ॥
जयामेचाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ अजिता वामपाश्वर्यं
तु दक्षिणे चापराजिता ॥ २० ॥

टीका—और हे महाबले हे महोत्साहे हे महाभयविनाशिनि हे दुष्प्रेक्ष्ये हे
शत्रुओंके भय बढ़ानेवाली तुम मेरी रक्षा करो ॥ १६ ॥ पूर्वके विषे ऐन्द्री
मेरी रक्षा करो और अग्निकोणके विषे भयवर्द्धिनी रक्षा करो और दक्षिणके
विषे वाराही और नैऋतके विषे खड्गधारिणी मेरी रक्षा करो ॥ १७ ॥ और
पश्चिमके विषे वारुणी और वायु कोणके विषे मृगवाहिनी और उत्तरके
विषे कौमारी और ईशानीके विषे शूलधारिणी मेरी रक्षा करो ॥ १८ ॥

और मेरे उपर ब्रह्माणी रक्षा करो तिसीप्रकार नीचे वैष्णवी रक्षा करो ऐसे शववाहना चामुंडा दशो दिशामें रक्षाकरो ॥ १९ ॥ और मेरे अगाडी जया रक्षा करो और विजया पीठ पीछेरक्षा करो और अजिता वामपार्श्वके विपे और अपराजिता दक्षिणपार्श्वके विपे रक्षा करो ॥ २० ॥

शिखामुदयोतिनी रक्षेदुमामूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥ मालाधरीलला-
टेचक्षुवौरक्षेद्यशस्विनी ॥ २१ ॥ त्रिनेत्राचक्षुवोर्मध्येयमघण्टा
चनासिके ॥ शंखिनीचक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोद्धारवासिनी ॥ २२ ॥
कपोलौकालिकारक्षेत्कर्णमूलेतुशांकरी ॥ नासिकायांसुगं-
न्धाचउत्तरोष्ठेचर्चिका ॥ २३ ॥ अधरेचामृतकलाजिह्वायां
च सरस्वती ॥ दन्तात्रक्षतुकौमारीकण्ठदेशेतुचण्डिका ॥ २४ ॥
घण्टिकांचित्रघण्टाचमहामायाचतालुके ॥ कामाक्षीचिबुकं
रक्षेद्वाचंमेसर्वमंगला ॥ २५ ॥

टीका—और शिखाकी उदयोतिनी रक्षा करो और उमा मूर्द्धके विपे स्थित हुई रक्षा करो और मालाधरी ललाटके विपे रक्षा करो और भुकुटीओंकी यशस्विनी रक्षा करो ॥ २१ ॥ और त्रिनेत्रा भुकुटीओंके मध्यमें और नासिकाकी यमघण्टा रक्षा करो और नेत्रोंके मध्यमें शंखिनी और श्रोत्रोंके विपे द्वारवासिनी रक्षा करो ॥ २२ ॥ और कपोलोंकी कालिका रक्षा करो और कर्णमूलके विपे शांकरी रक्षा करो और नासिकाके विपे सुगंधा और उत्तरोष्ठके विपे चर्चिका रक्षा करो ॥ २३ ॥ और अधरोष्ठके विपे अमृतकला और जिह्वाके विपे सरस्वती रक्षा करो और दंतोंकी कौमारी रक्षा करो और कंठदेशके विपे चंडिका रक्षा करो ॥ २४ ॥ और घंटिकाकी चित्रघण्टा रक्षा करो और महामाया तालुके विपे रक्षा करो और कामाक्षी ठोड़ीकी रक्षा करो और सर्वमङ्गला मेरी वाणीकी रक्षा करो ॥ २५ ॥

ग्रीवायांभद्रकालीचपृष्ठवंशोधनुर्धरी ॥ नीलग्रीवावहिःकण्ठेन
लिकानलकूवरी ॥ २६ ॥ स्कन्धयोः खग्लिनीरक्षेद्वाहू मेवत्र

धारिणी॥हस्तयोर्दण्डनीरक्षेदम्बिकाचांगुलीषुच॥२७॥नखा
ञ्छूलेश्वरीरक्षेत्कुक्षौरक्षेत्कुलेश्वरी ॥ स्तनौरक्षेन्महादेवी
मनश्शोकविनाशिनी ॥ २८ ॥ हृदयेललितादेवीउदरेशूल
धारिणी ॥ नाभौचकामिनीरक्षेद्गुह्यगुह्येश्वरीतथा ॥ २९ ॥
पूतना कामिकामेद्गुदेमहिषवाहिनी कट्यांभगवतीरक्षेज्जा
नुनीविन्ध्यवासिनी ॥ ३० ॥

टीका—और गलेके विषे भद्रकाली और पृष्ठके वंशके विषे धनुर्धरी रक्षा
करो और कंठके बहिःप्रदेशके विषे नीलग्रीवा रक्षा करो और नलिकोंकी
नलकूबरी रक्षा करो ॥ २६ ॥ और कंधूके विषे खड्गिनी रक्षा करो और
भेरी भुजाकी वज्रधारिणी रक्षा करो और हस्तोंके विषे दंडिनी रक्षा करो
और अंगुलिओंके विषे अंबिका रक्षा करो ॥ २७ ॥ और नखोंकी शूल-
श्वरी रक्षा करो और कुक्षिके विषे कुलेश्वरी रक्षा करो और स्तनोंकी मन-
का शोक दूर करनेवाली महादेवी रक्षा करो ॥ २८ ॥ और हृदयके विषे
ललिता देवी और उदरके विषे शूलधारिणी और नाभिके विषे कामिनी रक्षा
करो तिसीप्रकार गुह्यस्थानकी गुह्येश्वरी रक्षा करो ॥ २९ ॥ और पूतना
कामिका शिश्रुकी रक्षा करो और गुदस्थानके विषे महिषवाहिनी और क-
टिदेशके विषे भगवती रक्षा करो और गोडोंकी विन्ध्यवासिनी रक्षा करो ॥ ३० ॥

जंघेमहावलारक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥ गुल्फयोर्नारसिंहीच
पादपृष्ठेतुतेजसी ॥ ३१ ॥ पादांगुलीषु श्रीरक्षेत्पादाधःस्थल
वासिनी ॥ नखान्दंष्ट्राकरालीच केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी॥ ३२ ॥
रोमकूपेषुकौमारीत्वचंवागीश्वरीतथा ॥ रक्तमज्जावसामांसा-
न्यस्थिमेदांसिपार्वती ॥ ३३ ॥ अन्त्राणिकालरात्रीचपित्तं च
मुकुटेश्वरी ॥ पद्मावतीपद्मकोशेकफेचूडामणिस्तथा ॥ ३४ ॥
ज्वालामुखीनसाजालमभेद्यासर्वसंधिषु ॥ शुक्रं ब्रह्माणीमेरुक्षे
च्छायांछत्रेश्वरीतथा ॥ ३५ ॥

टीका—और सर्व मनोरथोंकी देनेवाली महाबला जंघाओंकी रक्षा करो और टाँकनोंके विषे नारसिंही और पैरोंके पृष्ठके विषे तैजसी रक्षा करो ॥ ३१ ॥ और पैरोंकी अंगुलिओंके विषे श्री रक्षा करो और पैरका अधोभागकी स्थलवासिनी रक्षा करो और नखकी द्यूकराली और केशोंकी ऊर्ध्वकेशिनी रक्षा करो ॥ ३२ ॥ और रोमकूपोंके विषे कौमारी रक्षा करो तिसीप्रकार त्वचाकी वागीश्वरी रक्षा करो और रक्त मज्जा वसा मांस अस्थि मेद इनकी पार्वती रक्षा करो ॥ ३३ ॥ और आतोंकी कालरात्रि रक्षा करो और पित्तकी मुकुटेश्वरी रक्षा करो और तिसीप्रकार पद्मावती पद्मकोशके विषे और कफके विषे चूडामाणि रक्षा करो ॥ ३४ ॥ और ज्वालामुखी नसाजालकी रक्षा करो और अभेद्या सप्तसंधिओंके विषे रक्षा करो और वीर्यकी ब्रह्माणी रक्षा करो तिसीप्रकार छायाकी छत्रेश्वरी रक्षा करो ॥ ३५ ॥

अहंकारं मनो बुद्धिरक्षेन्मेधर्मधारिणी ॥ प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ॥ ३६ ॥ वज्रहस्ता च मे रक्षत्प्राणकल्पं च शोभना ॥ रसरूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ॥ ३७ ॥ सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥ आयूरक्षतु वाराही धर्म रक्षतु वैष्णवी ॥ ३८ ॥ यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥ गोत्रमिन्द्राणी मे रक्षेत्पशून् मे रक्ष च ण्डिके ॥ ३९ ॥ पुत्रान् रक्षेन्महा लक्ष्मीर्भाय्यी रक्षतु भैरवी ॥ पन्थानं सुपथारक्षेन्मार्गक्षेम करी तथा ॥ ४० ॥

टीका—और मेरा अहंकार मन और बुद्धि इनकी धर्मधारिणी रक्षा करो तिसीप्रकार मेरा प्राण अपान व्यान उदान समान ॥ ३६ ॥ इन पंच प्राणोंकी वज्रहस्ता रक्षा करो और प्राणकल्पकी शोभना रक्षा करो रसके विषे रूपके विषे गंधके विषे शब्दके विषे स्पर्शके विषे योगिनी रक्षा करो ॥ ३७ ॥ और सर्वदा सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण इनकी नारायणी रक्षा करो और आयुकी वाराही रक्षा करो और धर्मकी वैष्णवी रक्षा करो ॥ ३८ ॥

यश कीर्ति लक्ष्मी धन विद्या इनकी चाकिणी रक्षा करो हेइन्द्राणि
तुम मेरे गोत्रकी रक्षाकरो और हेचण्डिके तुम मेरे पशुओंकी रक्षाकरो ॥ ३९ ॥
पुत्रोंकी महालक्ष्मी रक्षाकरो भार्याकी भैरवी रक्षाकरो और पन्थाकी सुपथा
और तिसीप्रकार मार्गकी क्षेमकरी रक्षाकरो ॥ ४० ॥

राजद्वारेमहालक्ष्मीर्विजयासर्वतःस्थिता॥रक्षाहीनंतुयत्स्थानं-
वर्जितंकवचेनतु॥४१॥तत्सर्वैरक्षमेदेविजयन्तीपापनाशिनी॥
पदमेकंनगच्छेतुयदीच्छेच्छुभमात्मनः ॥४२॥ कवचेनावृतो
नित्यंयत्रयत्रैवगच्छति ॥ तत्रतत्रार्थलाभश्चविजयःसार्वका-
मिकः ॥ ४३ ॥ यंयंचितयतेकामंतंतंप्राप्नोतिनिश्चितम् ॥
परमैश्वर्यमतुलंप्राप्स्यतेभूतलेपुमान् ॥ ४४ ॥ निर्भयोजाय-
तेमर्त्यःसंग्रामेष्वपराजितः ॥ त्रैलोक्येतुभवेत्पूज्यःकवचेनावृ-
तःपुमान् ॥ ४५ ॥

टीका—राजद्वारेके विषे महालक्ष्मी रक्षाकरो तिसीप्रकार चौतरफ स्थि-
तहुई विजया रक्षाकरो और रक्षा करके रहित और कवच करके वर्जित
जो स्थान ॥ ४१ ॥ तिस संपूर्ण मेरे स्थानकी पापोंके नाश करनेवाली ऐसी
जयंती हेदेवि तुम रक्षाकरो और जो मनुष्य अपना शुभ चाहैं तो कवचविना
एकपैड न चले ॥ ४२ ॥ और जो कवच करके युक्तहुवा मनुष्य नित्यप्रति
जहां जहां जाताहै तहां तहां उसको लाभ होताहै और उसका विजय
होताहै ॥ ४३ ॥ फिर वह मनुष्य जिस जिस कामकी इच्छा कर्त्ताहै तिस
तिस कामकों निश्चय करि प्राप्त होताहै और पृथ्वीके विषे अतुल उत्तम
ऐश्वर्यकों प्राप्तहोताहै ॥ ४४ ॥ फिर वह कवच करके आवृत पुरुष संग्रामके
विषे निर्भय और अपराजित होताहै और त्रिलोकीके विषे पूज्य होवे ॥ ४५ ॥

इदंतुदेव्याःकवचं देवानामपिदुर्लभम् ॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं
त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ॥ ४६ ॥ दैवीकलाभवेत्तस्यत्रैलोक्ये
ष्वपराजितः ॥ जीवेद्दर्पशतंसाग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ ४७ ॥
नश्यन्तिव्याधयःसर्वे लूताविस्फोटकादयः ॥ स्थावरंजंगमं

चैवकृत्रिमंचापियद्विषम् ॥ ४८ ॥ अभिचाराणिसर्वाणिमं
त्रयंत्राणिभूतले ॥ भूचराःखेचराश्चैवकुलजाश्चोपदेशिकाः ॥
॥ ४९ ॥ सहजाकुलजामालाडाकिनीशाकिनीतथा ॥ अन्त-
रिक्षचराघोराडाकिन्यश्चमहाबलाः ॥ ५० ॥

टीका—और यह देवीका कवच देवताओंकोभी दुर्लभहै जो पुरुष श-
द्धाकरके युक्त और एकाग्रचित्तहुवा इस कवचको नित्यप्रति त्रिकालपढे
॥ ४६ ॥ तो उस पुरुषकी देवीके समान कला होवे और वह तीनो लो-
कोंके विषे किसी करके पराजित नही होवे और वह अपमृत्युकरके वर्जित-
हुवा शतवर्ष जीवे ॥ ४७ ॥ और लूता विस्फोटकासे आदिलेकर जे व्या-
धिहै और स्थावर शंखिया आदि जंगम सर्प आदि कृत्रिम बनाहुवा जो तीन
प्रकारका विषहै ये संपूर्ण उपद्रव उस पुरुषके नष्ट होजातेहैं अर्थात् उस
पुरुषको क्लेश नही देशकतेहैं ॥ ४८ ॥ और पृथ्वीके विषे मंत्रयंत्ररूपी जे
अभिचारहैं अर्थात् मूठ आदि कर्त्तवहै और भूचर खेचर कुलज उपदेशि-
क येभी संपूर्ण उपद्रव उसपुरुषको स्पर्श नही कर सकतेहैं ॥ ४९ ॥ और
सहजा कुलजा माला तथा डाकिनी शाकिनी और अंतरिक्षमें विचरनेवाली
भयंकर और बलवान् जे डाकिनी ॥ ५० ॥

ग्रहभूतपिशाचाश्चयक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाः
कूष्माण्डाभैरवादयः ॥ ५१ ॥ नश्यन्तिदर्शनात्तत्स्थकवचेह-
दिसंस्थिते ॥ मानोन्नतिर्भवेद्राज्यंतेजोवृद्धिकरंपरम् ॥ ५२ ॥
यशसावर्धतेसोऽपिकीर्तिमण्डितभूतले ॥ जपेत्सप्तशतींचण्डीं
कृत्वातुकवचंपुरा ॥ ५३ ॥ यावद्भूमंडलंधत्तेसशैलवनकान-
नम् ॥ तावत्तिष्ठतिमेदिन्यांसन्ततिःपुत्रपौत्रिकी ॥ ५४ ॥
देहान्तेपरमंस्थानंयत्सुरैरपिदुर्लभम् ॥ प्राप्नोतिपुरुषोनित्यं
महामायाप्रसादतः ॥ ५५ ॥ लभतेपरमंरूपंशिवेनसहमोदते
॥ ५६ ॥ इतिवाराहपुराणेहरिहरब्रह्मविरचितंदेव्याःकवचं
समाप्तम् ॥ श्रीजगदंबार्पणमस्तु ॥

टीका—और ग्रह भूत पिशाच यक्ष गन्धर्व राक्षस ब्रह्मराक्षस वेताल कू-
ष्माण्ड भैरव इन आदि जे उपद्रव है ॥ ५१ ॥ वे जिसके हृदयके विषे कवच
स्थित हुएसते तिसके दर्शनमात्रसे ये संपूर्ण नष्ट होजाते है अर्थात् स्पर्श नहीं
कर सकते है और पृथ्वीके ऊपर इस कवचके प्रतापसे उस पुरुषके मानकी
उन्नति होवे और तेजको बढ़ानेवालो उस पुरुषको उत्तम राज्य होवे ॥ ५२ ॥
और जो पुरुष पहिले कवचकों करके समशती चण्डीको जपे वह पुरुषभी
कीर्त्ति करके शोभित भूमण्डलके विषे यश करके बढताहै ॥ ५३ ॥ और
जब पर्यंत शेष भूमण्डलको धारण कर्त्ता है तब पर्यन्त पृथ्वीके विषे उस
पुरुषकी पुत्रपौत्रकी संतति स्थित रहती है ॥ ५४ ॥ फिर देहके अंत
समयके विषे वह पुरुष महामायाकी कृपासे देवताओं करेकभी जो दुर्लभ
स्थान है तिसको निश्चयकर प्राप्त होताहै ॥ ५५ ॥ फिर मनोहर रूपको प्राप्त
होताहै और शिवजीके साथ आनंद कर्त्ता है ॥ ५६ ॥ इति वाराहपुराणे
हरिहरब्रह्मविरचितं देव्याः कवचं समाप्तम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति देव्याः कवचं समाप्तम् ।

श्रीः ।

अथ अर्गलास्तोत्रम् ।

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ॥
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधानमोस्तुते ॥ १ ॥ जयत्वं देवि
चामुण्डे जयभूतार्तिहारिणी ॥ जयसर्वगते देविकालरात्रिनमोस्तु-
ते ॥ २ ॥ मधुकैटभविद्राविविधातृवरदेनमः ॥ रूपं देहि जयं
देहियशो देहि द्विषोजहि ॥ ३ ॥ महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुख-
देनमः ॥ रूपं देहि जयं देहियशो देहि द्विषोजहि ॥ ४ ॥ रक्तबीजवधे
देवि चण्डमुण्डविनाशिनि ॥ रूपं देहि जयं देहियशो देहि द्विषोजहि ॥ ५ ॥

टीका—ॐ नमश्चण्डिकायै । जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपा-
लिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधा तुम्हारेको नमस्कार ॥ १ ॥
हे देवि हे चामुण्डे तुम्हारा जय हो हे भूतार्तिहारिणि तुम्हारा जय हो हे सर्व-
गते तुम्हारा जय हो हे कालरात्रि तुमको नमस्कार ॥ २ ॥ हे मधुकैटभको
मोह प्राप्त करनेवाली हे ब्रह्माको वर देनेवाली हमको रूप द्यो जय द्यो यश
द्यो हमारे शत्रुओंको मारो ॥ ३ ॥ हे महिषासुरको मारनेवाली और हे भ-
क्तोंको सुख देनेवाली तुमको नमस्कार हमको रूप जय यश द्यो और हमारे
शत्रुओंको मारो ॥ ४ ॥ हे रक्तबीजको मारनेवाली हे चण्डमुण्डको विनाश
करनेवाली हमको रूप, जय, यश द्यो और हमारे शत्रुओंको मारो ॥ ५ ॥

शुंभस्यैव निशुंभस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ॥ रूपं देहि जयं देहिय-
शो देहि द्विषोजहि ॥ ६ ॥ वन्दितां त्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायि-
नि ॥ रूपं देहि जयं देहियशो देहि द्विषोजहि ॥ ७ ॥ अचिन्त्यरूपचरि-
ते सर्वशत्रुविनाशिनि ॥ रूपं देहि जयं देहियशो देहि द्विषोजहि ॥ ८ ॥
न तेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ॥ रूपं देहि जयं देहिय-
शो देहि द्विषोजहि ॥ ९ ॥ स्तुवन्मोभक्तिपूर्वत्वां चण्डिके व्याधिना-
शिनि ॥ रूपं देहि जयं देहियशो देहि द्विषोजहि ॥ १० ॥

टीका—हे शृंग और निशृंग और धूम्राक्ष इनका नाश करनेवाली हमको रूप, जय, यश दो और हमारे शत्रुओंको मारो ॥ ६ ॥ हे वन्दितहैं पादयुग्म जिसके ऐसी हे सर्व सौभाग्यकी देनेवाली हमको रूप, जय, यश दो और हमारे शत्रुओंको मारो ॥ ७ ॥ नहीं चिंतवन किये जाय रूप और चरित्र जाके ऐसी हे देवि और हे सर्व शत्रुओंका विनाश करनेवाली हमको रूप, जय, यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ ८ ॥ हे चण्डिके हे पापोंको नाश करनेवाली सर्वकाल भक्ति करके नत जे हम हैं हमको रूप, जय, यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ ९ ॥ हे चण्डिके हे व्याधिनाशिनी भक्तिपूर्वक स्तुति कर्त्ते हुएको रूप, जय, यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ १० ॥

चण्डिकेसततयत्त्वामर्चयन्तीहभक्तितः ॥ रूपंदेहिजयंदेहिय-
शोदेहिद्विपोजहि ॥ ११ ॥ देहिसौभाग्यमारोग्यंदेहिमेपरमंसुखं ॥
रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विपोजहि ॥ १२ ॥ विधेहिद्विपतांनाशं
विधेहिवलमुच्चैः ॥ रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विपोजहि ॥ १३ ॥
विधेहिदेविकल्याणंविधेहिपरमांश्रियं ॥ रूपंदेहिजयंदेहिय-
शोदेहिद्विपोजहि ॥ १४ ॥ सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके
रूपंदेहि जयंदेहियशोदेहिद्विपोजहि ॥ १५ ॥

टीका—हे चण्डिके इस भूलोकके विषे जे कोई भक्तिसे तुमको पूजते हैं तिनको रूप, जय, यश दो और तिनके शत्रुओंको मारो ॥ ११ ॥ हे देवि हमको सौभाग्य, आरोग्य, उत्तम सुख दो और रूप, जय, यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ १२ ॥ हे देवि शत्रुओंको नाश करो हे देवि बड़ा पराक्रम करो और रूप, जय, यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ १३ ॥ और हे देवि कल्याण, उत्कृष्ट लक्ष्मी करो और रूप, जय, यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ १४ ॥ और सुर और असुर इनके शिरोरत्न करके निघृष्ट है चरण जाके ऐसी तुम हे अंबिके रूप, जय, यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ १५ ॥

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनंकुरु ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो
 देहि द्विषोजहि ॥ १६ ॥ प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ॥
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि ॥ १७ ॥ चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रं
 स्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि ॥ १८ ॥
 कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्रक्तया सदा म्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि
 यशो देहि द्विषोजहि ॥ १९ ॥ हिमाचलसुतानाथं संस्तुते परमे-
 श्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि ॥ २० ॥

टीका—और विद्यावान् लक्ष्मीवान् और यशस्वी पुरुष मेरेको करो
 और रूप जय यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ १६ ॥ और हे प्रचण्डदै-
 त्योंका गर्वविध्वंसन करनेवाली हे चण्डिके भक्तिसे प्रणत जो मेहूँ तिसको रूप
 जय यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ १७ ॥ हे चार भुजावाली हे बल-
 संस्तुते हे परमेश्वरि हमको रूप जय यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ १८ ॥
 और हे कृष्णकरके निरंतर भक्तिसे सदा स्तुति किईहुई हे अंबिके हमको
 रूप जय यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ १९ ॥ और हे शिवकरके स्तुति
 किईहुई हे परमेश्वरि हमको रूप जय यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ २० ॥

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो-
 देहि द्विषोजहि ॥ २१ ॥ देवि प्रचण्डदोर्दैत्यदर्पविनाशिनी ॥
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि ॥ २२ ॥ देवि भक्तजनोद्दा-
 मदत्तानन्दोदयेम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि ॥
 ॥ २३ ॥ पत्नीमनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ॥ तारिणीं
 दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २४ ॥ इदं स्तोत्रं पठित्वा तु म-
 हास्तोत्रं पठेन्नरः ॥ स तु सप्तशतं संख्यावरमाप्नोति सम्पदाम् ॥ २५ ॥
 इति मार्कण्डेयपुराणे अर्गलास्तोत्रं समाप्तम् ॥ २ ॥

टीका—और हे इन्द्राणि हे पतिसद्भावपूजिते हे परमेश्वरि हमको रूप जय

यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ २१ ॥ हेदेवि हेप्रचण्डभुजदण्डों करके
 दैत्योंका गर्वविध्वंस करनेवाली हमको रूप जय यश दो और शत्रुओंको
 मारो ॥ २२ ॥ हे देवि हेभक्तजनोंको अत्यन्त दियोहै आनन्दोदय जाने
 ऐसी तुम हमको रूप जय यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ २३ ॥ और
 हे देवि मनको रंजन करनेवाली और हमारे मनके वृत्तान्तके अनुकूल
 चलनेवाली और दुर्गम संसाररूपी सागरके मध्यमें तरानेवाली ऐसी पत्नी हम
 को दो ॥ २४ ॥ और जो मनुष्य इसस्तोत्रको पढेके महास्तोत्र पढे वह
 मनुष्य संपत्तियोंका सप्तशतीसंख्यावरको प्राप्तहोवे ॥ २५ ॥ इति मार्कण्डेय
 पुराणे अर्गलास्तोत्रं समाप्तम् ॥

इति अर्गलास्तोत्रम् ।

श्रीः ।

अथ कीलकस्तोत्रम् ।

ॐ नमश्चाण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ विशुद्धज्ञानदेहाय
त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ॥ श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे
॥ १ ॥ सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामपि कीलकम् ॥ सोपिक्षेमम
वाप्नोतिसततं जाप्य तत्परः ॥ २ ॥ सिद्धयन्त्युच्चाटनादीनि वस्तू
निसकलान्यपि ॥ एतेन स्तुवतां देवीं स्तोत्रमात्रेण सिद्धयति ॥ ३ ॥
नमंत्रं नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते ॥ विना जाप्येन सिद्धये
त सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥ ४ ॥ समग्राण्यपि सिद्धयन्ति लोकशं
कामिमांहरः ॥ कृत्वानि मंत्रयामास सर्वमेव मिदं शुभम् ॥ ५ ॥

टीका—ॐ नमश्चाण्डिकायै। मार्कण्डेयऋषि जैमिनीसे वर्णन करते भये परंतु
प्रथम शिवको नमस्कार किया कैसे कि विशुद्धज्ञान है देह जिनका और
तीनों वेद है दिव्य नेत्र जिनके और कल्याण प्राप्तिको कारण और अर्द्धचंद्रको
मस्तकमें धारण करनेवाले ऐसे शिवको नमस्कार ॥ १ ॥ फिर कहने लगे म-
नुष्य मन्त्रोंका भी यह संपूर्ण कीलक जानों जो निरन्तर इसके जाप्यमें तत्पर
रहता है सो निश्चय करि क्षेमको प्राप्त होना है ॥ २ ॥ और इसके जपमात्रसे
उच्चाटन आदि कृत्य सिद्ध होते हैं और यावत्संपूर्ण वस्तु भी सिद्ध होती है और
इसकरके स्तुति करतेहुओंके देवी स्तोत्रमात्रकरके सिद्ध होती है ॥ ३ ॥ और
न मन्त्र और न औषध कुछ भी तिसके जाप्यके विना सिद्ध नहीं होवे और तिसी
प्रकार संपूर्ण उच्चाटनादिक सिद्ध न होयें ॥ ४ ॥ फिर इन मन्त्रोंके प्रभावसे निश्च-
य करि संपूर्ण वस्तु सिद्ध होती हैं तो लोकमें परस्पर ईर्ष्याकरके अन्याय हो जा-
यगा इस लोकशंका को जानिके शिवजी सप्त मन्त्रसमुदायको कीलित किया ॥ ५ ॥

स्तोत्रं वै चाण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः ॥ समाप्नोति स पुण्ये-
न तां यथावन्निवन्त्रणाम् ॥ ६ ॥ सोपिक्षेममवाप्नोति सर्वमेव न-

संशयः ॥ कृष्णायां वाचतुर्दश्यामष्टम्यां वासमाहितः ॥ ७ ॥
 ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसिद्धयति ॥ इत्थं रूपेण कीलेन
 महादेवेन कीलितम् ॥ ८ ॥ यो निष्कीलां विधायै नानित्यंज
 पतिसंस्फुटं ॥ प्रसिद्धः स गणस्सोपि गन्धर्वो जायते नरः ॥ ९ ॥
 न चैवाप्यटतस्तस्य भयं कापि हि जायते ॥ नाऽपमृत्युवशांया
 तिमृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ १० ॥

टीका—और चंडिकास्तोत्रकों गुप्तकिया और जो पुण्यवान् मनुष्य है
 सो पुण्यके प्रभावकरके उस यथावत् नियंत्रणाको प्राप्त होता है ॥ ६ ॥ और
 जो पुरुष कृष्णपक्षकी अष्टमीके और चतुर्दशीके विषे विधिसे सप्तशतीको
 उपदेश देता है अथवा ग्रहणकर्त्ता है वह पुरुष निश्चयकरि क्षेमकों प्राप्त होता है
 और प्रकारसे यह भगवती सिद्ध नहीं होती है इस प्रकारके कीलककरके
 शिवजीने मन्त्रसमूहको कीलित किया ॥ ७ ॥ ८ ॥ और जो पुरुष उत्की-
 लितकरके सुंदरप्रकारसे सप्तशतीकों जपता है सो प्रसिद्ध और गणकरके स-
 हित गन्धर्व होता है ॥ ९ ॥ और विचरते हुए उस पुरुषको मार्गमें कहूँ भय
 उत्पन्न नहीं होता है और वह मनुष्य अपमृत्युके वश नहीं प्राप्त होता है और
 मरतेही मोक्षको प्राप्त होता है ॥ १० ॥

ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति ॥ ततो ज्ञात्वैव सम्प-
 न्नामिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥ ११ ॥ सौभाग्यादिचयत्किञ्चिद्दृश्यते
 ललनाजने ॥ तत्सर्वतत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥ १२ ॥
 शनैस्तु जप्यमाने स्मिन्स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः ॥ भवत्येव समग्रा
 पिततः प्रारभ्यमेव तत् ॥ १३ ॥ ऐश्वर्ययत्प्रसादेन सौभाग्या-
 रोग्यसम्पदः ॥ शत्रुहानिः परमोक्षः स्तूयते सानर्किजनेः ॥ १४ ॥
 इति भगवत्याः क्रीलकस्तोत्रं समाप्तम् ॥ ३ ॥ शुभं भूयात् ॥

टीका—मनुष्य निश्चयात्मक जानिके और विधिसे प्रारंभ करके सप्तश-

तीको अनुष्ठानकरे और विधिसे अनुष्ठान नहीकर्त्ताहुवा मनुष्य नाशको प्राप्त होताहै तिसकारणसे इसको विधान सहित जानिकेही विद्वान् प्रारंभ कर्त्तेहै ॥ ११ ॥ और जो कुछ सौभाग्य आदि स्त्रीजनमें दीखताहै वह सब तुल्लारी कृपा करके है तिसकारणसे तुल्लारा यह शुभस्तोत्र जपना चाहिए ॥ १२ ॥ और धीरेसे यह सप्तशतीस्तोत्र जपे जाते संते अथवा उच्चस्वरसे जपेजाते सन्ते निश्चयकरि मनुष्यके समग्र संपत्ति होतीहै और तन्त्रसे लेकरही जिसकी कृपासे ऐश्वर्य सौभाग्य आरोग्य संपत्ति ये होतीहै फिर वह भगवती क्या मनुष्यो करके नहीस्तुति किई जातीहै किन्तु किईही जातीहै ॥ २४ ॥ इति भगव-
त्याः कीलकस्तोत्रं समाप्तम् ॥ ३ ॥

इति कीलकस्तोत्रं समाप्तम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराजश्रीकृष्णदास

“ श्रीवेङ्कटेश्वर ” छापखाना (मुंबई.)

श्रीः ।

अथ दुर्गासप्तशती

भाषाटीकासमेता ।

मार्कण्डेय उवाच ।

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ॥ निशामयतदु-
त्पत्तिविस्तराद्ब्रह्मतोमम ॥ १ ॥ महामायानुभावेनयथामन्व-
तराधिपः ॥ सबभूवमहाभागः सावर्णिस्तनयोरवेः ॥ २ ॥
स्वारोचिपेतेरेपूर्वचैत्रवंशसमुद्भवः ॥ सुरथोनामराजाभूत्सम-
भूतेक्षितिमण्डले ॥ ३ ॥ तस्यपालयतःसम्यक्प्रजाः पुत्रानि-
वोरसान् ॥ बभूवुःशत्रवोभूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा ॥ ४ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीलृष्णचन्द्रो विजयतेतराम् ॥ अथ भाषाटीकेयं सप्त-
शत्याः ॥ एक समय तपस्या करते हुये महात्मा मुनियोंमें श्रेष्ठ ऐसे जो मार्क-
ण्डेय ऋषि तिनसे बड़े तेजस्वी व्यासजीके शिष्य जैमिनि ऋषि प्रश्न करते भये
हे मार्कण्डेय बुद्धिमानोमें श्रेष्ठ सब शास्त्रमें निपुण सब माहात्म्यनमें बड़ा
उत्तम जो देवीका माहात्म्य है ताहि श्रवण करिवेकी मेरी इच्छा है सो आप
कृपा करि वर्णनकरो तब मार्कण्डेय ऋषि बोले हे जैमिनि तुमसे एक कथा-
प्रसंग ऐसा वर्णन करूँ तकि बीचमें देवीहीको बहुत माहात्म्य है ताहि तुम
श्रवण करो व्यासआदि ऋषियोंनै सूर्यका पुत्र सावर्णि नाम आठवाँ मनु
कहा है ताकी उत्पत्ति विस्तारपूर्वक हमसे श्रवण करो ॥ १ ॥ वह सूर्यका पुत्र
सावर्णि मनु महामाया भगवतीकी रूपासे जैसे आठवाँ मन्वन्तरका स्वामी
होता भया तैसे आप चरित्र श्रवण करो ॥ २ ॥ पहिले स्वारोचिप मन्वन्त-
रके मध्यमें चैत्रवंशमें उत्पन्न संपूर्ण भूमण्डलमें चक्रवर्ती सुरथ नाम राजा
होता भया ॥ ३ ॥ कैसा है वह राजा कि प्रजावोंकी पालना पुत्रोंकीसी तरह
करनेवाला ताकी राजधानी नष्ट करनेके लिये यवन भूप शत्रु वन संग्राम वास्ते
तयार होते भये ॥ ४ ॥

तस्यैतैरभवद्युद्धमतिप्रबलदण्डिनः ॥ न्यूनैरपिसतैर्युद्धेको-
लाविध्वंसिभिर्जितः ॥ ५ ॥ ततःस्वपुरमायातोनिजदेशाधि-
पोभवत् ॥ आक्रान्तः समहाभागस्तैस्तदाप्रवलारिभिः ॥ ६ ॥
अमात्यैर्वलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्यदुरात्मभिः ॥ कोशोवलंचापह-
तंतत्रापिस्वपुरेततः ॥ ७ ॥ ततोमृगयाव्याजेनहृतस्वाम्यः
सभूपतिः ॥ एकाकीहयमारुह्यजगामगहनंवनं ॥ ८ ॥

टी०— फिर राजाका शत्रुवोंके साथ बड़ा युद्ध हुआ वह राजा महा
प्रबल शत्रुवोंको वश करनेवालाभी था परन्तु दैवयोगते निर्बलोंनेभी राजाको
जीत लिया ॥ ५ ॥ पीछे संग्रामभूमिमें शत्रुवोंसे हार कर अपनी नगरीमें आते
भये अपने देशहीका स्वामी होताभया ॥ ६ ॥ फिर उस नगरीके विपे
दुर्बल वसता हुआ राजा ताका राज्य हरणके लिये दुष्ट मंत्रियोंनें फौज
खजाना सब अपने वश करलिये ॥ ७ ॥ ऐसे जब राजाका सर्वस्व ले लिया
ताके अनन्तर घोड़ापर बैठ शिकारका बहाना लेकर अकेला गंभीर वनको
जाता भया ॥ ८ ॥

सतत्राश्रममद्राक्षीद्विजवर्यस्यमेधसः ॥ प्रज्ञांतश्चापदाकीर्णं
मुनिशिष्योपशोभितं ॥ ९ ॥ तस्थौकंचित्सकालंचमुनिना
तेनसत्कृतः ॥ इतश्चेतश्चविचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे ॥ १० ॥
सोर्चितयत्तदातत्रममत्वाकृष्टमानसः ॥ मत्पूर्वैःपालितंपूर्वम-
याहीनंपुरंहितत् ॥ मद्दृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतःपालयतेनवा ॥
॥ ११ ॥ नजानेसप्रधानोमेशूरहस्तीसदामदः ॥ ममवैरिवशं
यातःकान्भोगानुपलप्स्यते ॥ १२ ॥

टी०— फिर वा वनके विपे पशुहिंसासे रहित शान्त स्वभाववाले सिंह
वगैरह करिके युक्त मुनिकी शिष्यमण्डलीसे शोभित ऐसा सुमेधा ऋषिका
आश्रम देखताभया ॥ ९ ॥ ताके अनन्तर जहां तहां विचरताहुवा मुनिके

आश्रममें पहुँचता भया मुनिने कोमल वचनोंसे राजाका सत्कार किया पश्चात् कुछ काल ता आश्रममें राजा निवासजी करता भया ॥ १० ॥ तब वा आश्रमके विपे ममता करिके व्याकुल है बुद्धि जिसकी ऐसा जो सुरथ राजा है सो चिन्ता करता भया कि हाय ! जो पुर पहिले मेरे बड़ोंने वसा कर पालन किया था सो पुर मेरेसे शत्रुवोंने ले लिया फिर इस प्रकार मनमें विचार करने लगा कि निश्चय करिके दुष्ट है चरित्र जिनके ऐसे मेरे मंत्रियोंसे आदि लेकर जे नौकर हैं वे मेरे पुरकी धर्मपूर्वक पालना करतेहैं या नहीं॥ ११ ॥ और मेरा शूर हस्ती जो सदा मत्त रहता था वह मेरा शत्रुवोंके वश होकर कौनसे भोग भोगता होगा ॥ १२ ॥

येममानुगतानित्यंप्रसादधनभोजनैः ॥ अनुवृत्तिध्रुवंतेद्यकुर्व-
त्यन्यमहीभृताम् ॥ १३ ॥ असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः
सततंव्ययम् ॥ संचितः सोतिदुःखेनक्षयंकोशोगमिष्यति ॥ १४ ॥
एतच्चान्यच्चसततंचितयामासपार्थिवः ॥ तत्रविप्राश्रमाभ्याशे
वैश्यमेकंददर्शसः ॥ १५ ॥ सपृष्टस्तेनकस्त्वंभोहेतुश्चागम-
नेऽत्रकः ॥ सशोकइवकस्मात्त्वंदुर्मनाइवलक्ष्यसे ॥ १६ ॥

टीका—और जे मेरे सेवक धन भोजनादिक से संतुष्ट थे वे अनाथ और राजावोंकी निश्चय करिके सेवा करते होंगे ॥ १३ ॥ और बड़े दुःखसे संचय कियाहुवा जो खजानाहै सो अब बुरीरीतिसे खर्च करनेवाले मंत्रियोंकरिके नष्ट होजायगा ॥ १४ ॥ इन बातोंको तथा अन्य बातोंको शोच करिके राजा शोकयुक्त चिन्ता करताभया ता समय वा आश्रमके समीप राजा एक वेश्यको देखताभया ॥ १५ ॥ और पूछने लगा कि हे भाई ! तुम कौनहो ? किस-कारणसे इस अश्रममें तुम्हारा आगमन हुवा ? किसकारणसे तुम शोकयुक्तसे दीखतेहो और विमनसे कैसे दीखतेहो ॥ १६ ॥

इत्याकर्ण्यवचस्तस्यभूपतेःप्रणयोदितम् ॥ प्रत्युवाचसतवै-
श्यःप्रश्रयावनतोत्तुपं ॥ १७ ॥ वैश्यउवाच ॥ समाधिर्नाम

वैश्योहमुत्पन्नोधनिनांकुले ॥ पुत्रदारैर्निरस्तश्चधनलोभादसा-
धुभिः ॥ १८ ॥ विहीनश्चधनैर्दारैःपुत्रैरादायमेधनम् ॥ वनम-
भ्यागतोदुःखीनिरस्तश्चाप्तवन्धुभिः ॥ १९ ॥ सोहंनवेद्भिपुत्रा-
णांकुशलाकुशलात्मिकाम् ॥ प्रवृत्तिस्वजनानांचदाराणांचा-
त्रसंस्थितः ॥ २० ॥

टीका— ऐसे कोमल वचन राजाके श्रवण करिकै वैश्य विनयपूर्वक बो-
लताभया ॥ १७ ॥ वैश्य बोला हे राजन् मैं समाधिनाम वैश्यहूँ और धनवानोंके
वंशमें उत्पन्न हुवाहूँ धनलोभसे पुत्र स्त्री स्वजनों करिकै तिरस्कृतहूँ ॥ १८ ॥ और
संपूर्ण स्त्री पुत्र बंधु परिवारने मेरा धन छीनकर तिरस्कार किया सो धनहीन
दुःखी होकर दशोंदिशोंमें भ्रमताहुवा वनमें आयाहूँ और पुत्रादिकनसे वियु-
क्तहूँ इसकारणसे मैं शोकयुक्तहूँ ॥ १९ ॥ और मैं या वनके बीचमें स्थित
हुवा स्त्री पुत्र मित्रादिकनकी कुशल क्षेमकी वार्त्ताभी नहीं जानताहूँ ॥ २० ॥

किंनुतेपांगृहेक्षेममक्षेमंकिंनुसांप्रतम् ॥ कथंतेकिंनुसदृत्तादुर्वृ-
त्ताःकिंनुमेसुताः ॥ २१ ॥ राजोवाच ॥ यैर्निरस्तोभवाहुब्धैः
पुत्रदारादिभिर्धनैःतेषुकिंभवतः स्नेहमनुवध्नातिमानसम् २२
वैश्यउवाच ॥ एवमेतद्यथाग्राहभवानस्मद्गतंवचः ॥ किंकरो
मिनवध्नाति ममनिष्ठुरतांमनः ॥ २३ ॥ यैःसन्त्यज्यपितृस्ने-
हंधनलुब्धैर्निराकृतः ॥ पतिस्वजनहार्दचहार्दितेष्वेवमेमनः ॥ २४ ॥

टीका— और स्त्री पुत्र बंधु जनोंके घरमें कुशलहै या नहीं अब यह
वार्त्ता कैसे निश्चय करूं वे मेरे पुत्र जे हैं ते सुमार्गमें हैं या कुमार्गमें यह दोनो
वार्त्ता मेरेकों कैसे निश्चय होय ॥ २१ ॥ तब सुरथराजा बोलते भये कि हे
वैश्य ! धनके लोभते स्त्री पुत्रादिकोंने तुझारा निरादर किया ऐसे कुटिल स्त्री
पुत्रादिकनके विषे तुझारा चित्त स्नेह कैसे करताहै ॥ २२ ॥ वैश्यने कहा कि
हे राजन् ! जैसा आपने कहा वह ऐसाही है परंतु मैं क्या करूं मेरा मन कठोर-
ताकी नहीं धारणकरता ॥ २३ ॥ धनके लोभी जिन दुष्टोंने पिताका स्नेह

और स्त्रीने पतिका स्नेह छोड़कर मुझको निकालदिया फिर भी तिनमेंही मेरा मन स्नेहयुक्त है ॥ २४ ॥

किमेतन्नाभिजानामिजानन्नपिमहामते ॥ यत्प्रेमप्रवणंचित्तं वि
गुणेष्वपिबंधुषु ॥ २५ ॥ तेषांकृतेमेनिःश्वासोदौर्मनस्यंचजा-
यते ॥ करोमि किंयन्नमनस्तेष्वप्रीतिषुनिष्ठुरम् ॥ २६ ॥
मार्कण्डेय उवाच ॥ ततस्तौ सहितौ विप्रतं मुनिं समुपस्थितौ ॥
समाधिर्नाम वैश्योऽसौ सच पार्थिव सत्तमः ॥ २७ ॥ कृत्वा तु तौ
यथान्यायं यथार्हितेन संविदम् ॥ उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वै
श्यपार्थिवौ ॥ २८ ॥

टीका—हे राजन् ! गुण करिके हीन जे मेरे बन्धु हैं तिनके विपेभी मेरा चित्त प्रेमयुक्त है यह जानताहुवाभी मैं चित्तको रोक नहीं सकता हूँ ॥ २५ ॥ हे राजन् और मेरे विपे जिनकी प्रीति नहीं ऐसे जे मेरे पुत्रादिक हैं तिनके लिये मेरेको शोक और चित्तको ग्लानि है मैं क्या करूं मेरा चित्त उनके विपे कठोरता धारण नहीं करता है ॥ २६ ॥ मार्कण्डेय ऋषि बोले—हे जैमिनि ता प्रसंगके अनंतर मित्रभावसे समाधिनाम वैश्य और सुरथराजा ये दोनो सुमेधा ऋषिके समीप जा पहुँचे ॥ २७ ॥ फिर वे दोनो जनोने यथाशास्त्र और यथायोग्य मुनीश्वरसे संभाषणादि किया फिर मुनीने कोमलवाणीसे सत्कार पूर्वक बैठालिये फिर ये मुनीश्वरसे अपने स्वार्थकी वार्त्ता पूछते भये ॥ २८ ॥

राजोवाच ॥ भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥ दुःखा-
ययन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना ॥ २९ ॥ मम त्वंगतराज्य
स्य राज्यांगेष्वखिलेष्वपि ॥ जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनि
सत्तम ॥ ३० ॥ अयंच निःकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ॥
स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दितं तथाप्यति ॥ ३१ ॥ एवमेतत्थाहं
च द्वावप्यत्यंत दुःखितौ ॥ दृष्टदोषेऽपि विषये मम त्वाकृष्टमानसौ ॥ ३२ ॥

टीका—राजा बोले कि हे भगवन् तुझसे एक रहस्य पूछनेकी इच्छा .

करूँहं ताहि तुम कहो मेरे चित्तकी अपने निश्चयात्मक स्वरूपके विषे एकाग्रता बिना जो अवस्था है सो दुःख देरही है ॥ २९ ॥ हे मुनिसत्तम ! राज्य मेरा चला गया यह मैं जानता भी हूँ परंतु स्वामी, अमात्य, सुहृत्, कोश, राष्ट्र दुर्ग बल ये सात राज्यके अंग हैं तिनके विषे मेरी अज्ञानी कीसी तरह ममता है सो क्या कारण है ॥ ३० ॥ और यह जो वैश्य है सो पुत्र कलत्रादिकन करिकै तथा भ्रात्रादिकन करिकै त्यक्त है तौ भी उनके विषे अति स्नेहवान् है ॥ ३१ ॥ और हे मुनिसत्तम ! ऐसे यह तथा मैं दोनो दुःखी तहाँ देखा है दोष जाके विषे ऐसे राज्यादिकनके विषे भी ममत्व करिकै आधीन है मन जिनका ऐसे हम हैं ॥ ३२ ॥

तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥ ममास्य च भवत्ये
षा विवेकांधस्य मूढता ॥ ३३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ज्ञानमस्ति स
मस्तस्य जंतोर्विषयगोचरे ॥ विषयाश्च महाभाग यांति चैव पृथक्
पृथक् ॥ ३४ ॥ दिवांधाः प्राणिनः केचिद्रात्रावंधास्तथापरे ॥
केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः ॥ ३५ ॥ ज्ञानिनो मनु
जाः सत्यं किं नु तेन हि केवलं ॥ यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ॥

टीका— सो हे महाभाग हे मुने जिस कारणसे हम दोनो ज्ञानवानों को भी मोह है यह क्या कारण है जा मोहते यह विवेकरहित मनुष्यके योग्य जो अज्ञानता सो हमको होरही है ॥ ३३ ॥ तब ऋषि बोले कि हे राजन् ! समस्त प्राणियों को इंद्रियके विषयमें ज्ञान है और मोक्षके विषे ज्ञान नहीं है और हे महाभाग इन्द्रियनकी जे वृत्ति हैं ते पृथक् पृथक् विषयताको प्राप्त होरही हैं ॥ ३४ ॥ हे राजन् ! कितेक उलूकादिक प्राणी दिनमें दृष्टि हीन हैं और कितेक काकादिक प्राणी रात्रिके विषे दृष्टि हीन हैं और कितेक प्राणी अश्वसे आदि लेकर रात्रि दिनके विषे तुल्य दृष्टिवाले हैं ॥ ३५ ॥ हे राजन् ! तुमने कहा कि मनुष्य ज्ञानी हैं सो सत्य है परंतु केवल मनुष्य ही ज्ञानी नहीं हैं किन्तु मनुष्योंति अन्य पशु पक्षी मृगादिक ये सब ज्ञानी हैं ॥ ३६ ॥

ज्ञानंचतन्मनुष्याणांयत्तेषामृगपक्षिणाम्॥मनुष्याणांचयत्तेषां
तुल्यमन्यत्तथोभयोः ॥३७॥ज्ञानेपिसतिपश्यैतान्पतङ्गाञ्छा-
वचंचुपु॥कणमोक्षाद्वतान्मोहात्पीड्यमानानपिक्षुधा ॥ ३८ ॥
मानुषामनुजव्याघ्रसाभिलाषाःसुतान्प्रति ॥ लोभात्प्रत्युपका-
रायनन्वेतान्किनपश्यसि ॥ ३९ ॥ तथापिममतावर्तैर्मोहगर्तै-
र्निपातिताः॥ महामायाप्रभावेणसंसारस्थितिकारिणा ॥४०॥

टी०— हे राजन् ! जो स्वभावोत्पन्न ज्ञान मृग पक्षियोंको है वह मनुष्य-
नको नहीं है और मनुष्यनको जो शास्त्रोक्त ज्ञान है सो मृग पक्षियोंको नहीं
है और आहार निद्रा विषयादि ज्ञान मनुष्य मृग पक्षी इत्यादिकनको समान
है ॥ ३७ ॥ और हे राजन् क्षुधा करिके पीडित जे पक्षी हैं तिनको यह ज्ञान-
भी है कि जे कण पुत्रोंके मुखमें गेरिवे योग्य हैं ते कण हम भक्षण करितें तो
क्षुधा हमें बाधा नहीं करै तौभी मोहते अपने पुत्रोंके चंचुवोंमें कण गेरदेते हैं
इहें तुम देखो ॥ ३८ ॥ और हे मनुजव्याघ्र वृद्धावस्थामें ये हमारी सेवा
करेंगे इस प्रयोजनके लोभते पुत्रनके विषे मनुष्य कामनासहित ब्रह्म रहैं और
इन्हे पशु पक्षी मृगादिक केवल ममतासेही पुत्रनके विषे आदरयुक्त हैं इन्हे तुम
नहीं देखते हो और पुत्र प्रत्युपकारके लिये नहीं होतेहैं यह क्या तुम नहीं
देखते हो ॥ ३९ ॥ हे राजन् ! तौभी संसारकी पालना करनेवाला ऐसा जो
महामायाका प्रभाव ताने या संसार रूपी समुद्रके ममतारूपी भँवरके
मोहरूपी जो खाडा ताके विषे मनुष्यनको पटककरखे है ॥ ४० ॥

तन्नात्रविस्मयःकार्योयोगनिद्राजगत्पतेः ॥ महामायाहरेश्वै-
षातयासंमोह्यतेजगत् ॥ ४१ ॥ ज्ञानिनामपिचेतांसिदेवीभग-
वतीहिंसा ॥ बलादाकृष्यमोहायमहामायाप्रयच्छति॥ ४२ ॥
तयाविसृज्यतेविश्वंजगदेतच्चराचरम् ॥ सैषाप्रसन्नावरदानृणां
भवतिमुक्तये ॥ ४३ ॥ साविद्यापरमामुक्तेर्हेतुभूतासनातनी॥
संसारबंधहेतुश्चैवसर्वेश्वरेश्वरी ॥ ४४ ॥

टी०— सो या बातके विषे आश्चर्य करना योग्य नहीं क्यों कि जगत्के स्वामी विष्णुकी जो योगनिद्रा महामाया है तनि जगत्को मोहित कर राखा है ॥ ४१ ॥ हे राजन् ! कैसी है वह महामाया कि उपनिषदोंके विषे वर्णन किया जो ज्ञान है ताका अनुभव करनेवाले ऐसे जे ज्ञानवान् पुरुष हैं तिन केभी चित्तनको बलसे खँच कर ममतके आधीन करती है ॥ ४२ ॥ फिर हे राजन् ! वह भगवती कैसी है कि ता करिके समस्त चराचर जगत् रचा जाता है सो यह प्रसन्न होनेसे मनुष्यनको वरदान और मोक्ष देती है ॥ ४३ ॥ परन्तु हे राजन् उस मायाके दो भेद हैं एक तो विद्या और दूसरी अविद्या जो अविद्या रूपा माया है सो संसारके बन्धनमें कारण है और ब्रह्मादिकन कीभी स्वामिनी है और जो सनातनी विद्या रूपा माया है सो मोक्षका कारण है ॥ ४४ ॥

राजोवाच ॥ भगवन्काहिसादेवीमहामायेतियांभवान् ॥ ब्र-
वीतिकथमुत्पन्नासाकर्मास्याश्चकिं द्विज ॥ ४५ ॥ यत्प्रभावा
चसादेवीयत्स्वरूपायदुद्भवा ॥ तत्सर्वश्रोतुमिच्छामित्वत्तो
ब्रह्मविदांवर ॥ ४६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ नित्यैवसाजगन्मूर्ति-
स्तयासर्वमिदंततम् ॥ तथापितत्समुत्पत्तिर्वहुधाश्रूयतांम
म ॥ ४७ ॥ देवानां कार्यसिद्धयर्थमाविर्भवतिसायदा ॥ उत्प-
न्नेतितदालोके सानित्याप्यभिधीयते ॥ ४८ ॥

टीका— तब राजा बोले हे भगवन् हे द्विज वह कौनसी देवी है जिसको आप महामाया कहते हैं और कैसे उत्पन्न भई है इसका क्या कर्म है और क्या पराक्रम है ॥ ४५ ॥ और हे ब्रह्मवेत्ताओंमें श्रेष्ठ उस देवीका कैसा सामर्थ्य है और कैसा स्वरूप है और कैसा प्रादुर्भाव है ये संपूर्ण बात तुमसे श्रवण करिबेकी मेरी इच्छा है ॥ ४६ ॥ तब ऋषि बोले संपूर्ण जगत्की आश्रयभूत शक्ति जा करिके जगत् रचाहुवा है वह किसी करिके रचित नहीं है तौभी बहुधा लोकके उपकारके वास्ते वाकी उत्पत्ति भेरेसे श्रवण

करो ॥ ४७ ॥ हे राजन् ! जब देवतानके कार्यकी सिद्धिके लिये प्रकट होती है तब वह नित्यभी है परन्तु लोकमें उत्पन्न भई है यह कहा जाता है ॥ ४८ ॥

योगनिद्रांयदाविष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥ आस्तीर्यशेषमभ-
जत्कल्पांतेभगवान्प्रभुः ॥ ४९ ॥ तदाद्वावसुरौ घोरौ विख्या-
तौमधुकैटभौ ॥ विष्णुकर्णमलोद्भूतौहंतुंब्रह्माणमुद्यतौ ॥ ५० ॥
सनाभिकमलेविष्णोःस्थितोब्रह्माप्रजापतिः ॥ दृष्ट्वातावसुरौ
चोग्रौप्रसुप्तंचजनार्दनम् ॥ ५१ ॥ तुष्टावयोगनिद्रांतामेकाग्र-
हृदयःस्थितः ॥ विबोधनार्थायहरिर्हरिनेत्रकृतालयां ॥ ५२ ॥

टीका—हे राजन् ब्रह्माके दिनके अनन्तर जो प्रलय ताकेविषे जब सात समुद्र करिके जुदा जुदा स्थापन किया हुवा जगत् एकार्णवताको प्राप्त हो गया ता समयकेविषे भगवान् ऐश्वर्यादिकनकरिके सहित शेषशय्या विछाय कर योगनिद्राका सेवन करते भये अर्थात् शयन करते भये ॥ ४९ ॥ ता शयनसमयकेविषे विष्णुके कानोंके मैलसे मधु और कैटभ ये दो दैत्य उत्पन्न होते भये और ब्रह्माके मारनेको तयारभये ॥ ५० ॥ तब वह ब्रह्मा विष्णुकी नाभिकमलमें स्थित हुवा बड़े भयंकर असुरोंको देखकर और भगवान्को योगनिद्रासे शयन करता हुवा देखकर ॥ ५१ ॥ एकाग्र चित्त होयकर विष्णुके जगानेके लिये हरिके नेत्रोंमें कियो है निवास जाने ऐसी जो योगनिद्रा है ताकी स्तुति करतो भयो ॥ ५२ ॥

विश्वेश्वरीजगद्धात्रींस्थितिसंहारकारिणीम् ॥ निद्रांभगवतींवि-
ष्णोरतुलांतेजसःप्रभुः ॥ ५३ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ त्वंस्वाहात्वं
स्वधात्वंहिवपट्कारःस्वरात्मिका ॥ सुधात्वमक्षरेनित्येत्रिधा
मात्रात्मिकास्थिता ॥ ५४ ॥ अर्धमात्रास्थितानित्यायानु-
चार्याविशेषतः ॥ त्वमेवसंध्यासावित्रीत्वंदेविजननीपरा ॥ ५५ ॥
त्वयैतद्धार्यतेविश्वंत्वयैतत्सृज्यतेजगत् ॥ त्वयैतत्पाल्यतेदे-
वित्वमत्स्यंतेचसर्वदा ॥ ५६ ॥

टीका— ब्रह्मा बोले अनंत है तेज जिनका ऐसे जे विष्णु तिनकी योग-
निद्रा जो तुम हो तुम्हारी मैं स्तुति करता हूँ कैसी हो आप संसारकी रचने-
वाली फिर कैसी हो आप जगत्का पोषण करनेवाली फिर कैसी हो आप
जगत्का पालन और संहार करनेवाली ॥ ५३ ॥ फिर कैसी हो आप देव-
ताओं को हविर्दानमें स्वाहा मन्त्ररूप हो और पित्रीश्वरोंको अन्नदानमें स्वधा
मन्त्ररूप हो और वषट्काररूप हो अर्थात् यज्ञरूप हो फिर कैसी हो तुम
अकारसे आदि लेकर जे सोलह स्वर हैं तेई हैं स्वरूप जाको ऐसी हो फिर
कैसी हो देवताओंके अन्नस्वरूप हो हे वृद्धि हास करिके रहित हे नित्ये
ब्राह्मी वैष्णवी माहेश्वरी ये लोकमाता है स्वरूप जाको इस तरह तीन प्रका-
रसे विराजमान हो ॥ ५४ ॥ हे भगवती फिर तुम कसी हो जागृत्, स्वप्न,
सुषुप्ति इन तीन अवस्थासे जुदी चौथी अवस्थाको प्राप्त अँकारकेविषे अर्ध-
मात्रारूप विराजमान हो और नित्य हो और आप परमात्मस्वरूप हो याते
विशेषकरिके वर्णन नहीं करी जाती हो फिर कैसी हो संध्यारूप हो और
सावित्री रूप हो और वेदोंकी माता गायत्रीरूप तुम हो ॥ ५५ ॥ फिर कैसी
हो संपूर्ण जगत्को धारण करती हो और ब्राह्मी शक्तिरूपकरिके जगत्
रचती हो और वैष्णवी शक्तिरूपसे पालना करती हो और माहेश्वरी शक्ति
रूपसे प्रलयाविषे जगत्का संहार करती हो फिर भक्तोंको सर्व वस्तु देती हो ॥ ५६ ॥

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ तथा संहतिरूपां-
ते जगतो स्य जगन्मये ॥ ५७ ॥ महाविद्यामहामायामहामे-
धामहास्मृतिः ॥ महामोहाचभवती महादेवी महेश्वरी ॥ प्रकृति-
स्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ ५८ ॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मो-
हरात्रिश्च दारुणा ॥ ५९ ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धि-
बोधलक्षणा ॥ लज्जापुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ६० ॥

टीका— हे जगन्मये फिर कैसी हो विशेषकरिके जगत्के रचनेमें सृष्टि-
रूप तुम हो और पालनेविषे स्थितिरूप हो और संहारकेविषे संहतिरूप

हो ॥ ५७ ॥ और परब्रह्मको जाननेवाला ज्ञानरूप तुम हो और शरीरादि-
कोंके विषे जो आत्मबुद्धि ऐसी महामायारूप तुम हो और ध्यानरूप हो
और महाममत्तरूप हो ऐश्वर्य युक्त हो और समस्त देवशक्तिरूप हो और
हिरण्याक्षादि शक्तिरूप हो ॥ ५८ ॥ जाके विषे विश्वको लय होय ऐसी
कालरात्रिरूप तुम हो और जाके विषे ब्रह्माको मोक्ष होय ऐसी महारात्रि
रूप तुम हो और संसारको रचनेवाली मोहरात्रिरूप तुम हो ॥ ५९ ॥ फिर कैसी
हो श्रीः लक्ष्मीबीजरूप हो क्लीं कामबीजरूप तुमहो त्वं ह्रीः अर्थात् तुम भुवनेशी
बीजरूपतुम हो निर्णयात्मक है स्वरूप जाको ऐसा अंतःकरणरूपी तुम हो और
लज्जारूप हो पुष्टिरूप हो संतोष रूप हो शान्तिरूप हो अर्थात् विषयोंसे इन्द्रि-
योंका त्यागरूपी तुम हो और शान्तिरूप हो अर्थात् सामर्थ्य होता सता अप-
राध सहिष्णुत्तरूपी तुम हो ॥ ६० ॥

खड्गिनीशूलिनीघोरागदिनीचक्रिणीतथा ॥ शंखिनीचापिनी-
बाणभुशुंडीपरिचायुधा ॥ ६१ ॥ सौम्यासौम्यतराशेषसौ-
म्येभ्यस्त्वतिसुंदरी ॥ परापराणां परमात्ममेव परमेश्वरी ॥ ६२ ॥
यच्च किंचित्काचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या
शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया ॥ ६३ ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पा-
त्यत्तियोजगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वांस्तोतुमिहेश्वरः ॥ ६४ ॥

टीका—^{१५७}खड्ग, ^{१५८}त्रिशूल, ^{१५९}गदा, चक्र, शंख, धनुष, बाण, ^{१६०}भुशुंडी, ^{१६१}परिघ इन
शस्त्रोंको धारण करनेवाली हो और एक शत्रुको मुंड लेराखो याते बड़ी भयं-
कर रूप हो ॥ ६१ ॥ फिर कैसी हो भक्तोंके विषे सौम्यरूप अर्थात् शान्तरूप हे
और दैत्योंके क्रूररूप हो और संपूर्ण सुन्दर वस्तुओंसे बड़ी सुन्दर हो और
पश्यंती मध्यमा वैखरी इनका बीज रूप हो उत्कृष्ट जेहँ तिनमें परमप्रधान
तुमही हो याते तुम परमेश्वरी हो ॥ ६२ ॥ हे आखिलात्मिके देवि या जगत्के
विषे जो कुछ कहूँ सत् असत् वस्तु प्रतीत होता है ता संपूर्णकी शक्ति अर्थात्
सामर्थ्य तुमही हो याते अस्मदादिकरि कै कैसे स्तुति किये जावो ॥ ६३ ॥

और ब्रह्म, विष्णु, रुद्ररूप करिके जगत्का उत्पत्ति पालन संहार करनेवाला जो भगवान् है सोभी तुमने निद्राके वशकरदिया याते तुल्लारी स्तुति करनेको कौन समर्थ है ॥ ६४ ॥

विष्णुःशरीरग्रहणमहमीशानएवच ॥ कारितास्तेयतोतस्त्वां
कःस्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ ६५ ॥ सात्वमित्थंप्रभावैःस्वैरु-
दारैर्देविसंस्तुता ॥ मोहयैतौदुराधर्पावसुरौमधुकैटभौ ॥ ६६ ॥
प्रबोधंचजगत्स्वामीनीयतामच्युतोलघु ॥ बोधश्चक्रियतामस्य
हंतुमेतौमहासुरौ ॥ ६७ ॥ ऋपिरुवाच ॥ एवंस्तुतातदादेवी
तामसीतत्रवेधसा ॥ विष्णोः प्रबोधनार्थायनिहतुंमधुकैटभौ ॥ ६८ ॥

टीका— फिर कैसीहो विष्णु और मै और रुद्र इनकोभी तुमने शरीर धारण करवा दिया ऐसी महामाया जो आपहो आपकी स्तुति करनेको कौन समर्थहोय ॥ ६५ ॥ ऐसे उदार अपने माहात्म्योंकरिके स्तुतिकीगई ऐसी जो तुम हो ये बड़े भयंकर जे मधुकैटभ दैत्य हैं तिनको मोहनकरो ॥ ६६ ॥ हे देवि जगत्का स्वामी जो विष्णुहै ताको शीघ्र जगावो और मधुकैटभको मारनेको भगवतकी बुद्धिको उत्साह करो ॥ ६७ ॥ तब ऋषि बोले हे राज- न्द्र या रीतिसे जब ब्रह्माने भगवतीकी स्तुति करो तब योगनिद्रा भगवती विष्णुको जगानेके लिये और मधुकैटभ दैत्योंको मारनेके लिये ॥ ६८ ॥

नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ निर्गम्यदर्शनेत-
स्थौब्रह्मणोव्यक्तजन्मनः ॥ ६९ ॥ उत्तस्थौचजगन्नाथस्तया
मुक्तोजनार्दनः ॥ एकार्णवेहिशयनात्ततः सदृशेचतौ ॥ ७० ॥
मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥ क्रोधरक्तेक्षणावतुं
ब्रह्माणंजनितोद्यमौ ॥ ७१ ॥ समुत्थायततस्ताभ्यांयुयुधेभ-
गवान्हरिः ॥ पंचवर्षसहस्राणिबाहुप्रहरणोविभुः ॥ ७२ ॥

टीका— विष्णुका नेत्र मुख नासिका गुजा और हृदय वक्षःस्थल इनसे निकसकर ब्रह्माके सन्मुख स्थित होतीमई ॥ ६९ ॥ तब वा समुद्रके

तव योगनिद्राकारिकै त्यक्त विष्णु शेषशय्यासे उठतेभये और मधुकैटभ दै-
त्योंको देखतेभये ॥ ७० ॥ फिर मधु कैटभ दैत्य कैसेहैं बड़े पराक्रमी हैं और
क्रोधकारिकै लालहैं नेत्र जिनोके ब्रह्माको भक्षण करनेको करारक्योहैं उद्यम
जिनोंने ॥ ७१ ॥ ऐसे मधुकैटभ दैत्योंसे उठकरिकै भगवान् युद्ध करते भये
भुजाहीहैं शस्त्र जिसके ऐसे भगवान् पांचहजार वर्षे उन दैत्योंके साथ युद्ध
करतेभये ॥ ७२ ॥

तावप्यतिबलोन्मत्तौमहामायाविमोहितौ ॥ उक्तवन्तौवरोस्म-
त्तोत्रियतामितिकेशवं ॥ ७३ ॥ भगवानुवाच ॥ भवेतामद्य मे
तुष्टौ ममवध्याबुभावापि ॥ किमन्येनवरेणात्रएतावद्विवृतंम-
या ॥ ७४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ वंचिताभ्यामितितदासर्वमापोम-
यंजगत् ॥ विलोक्यताभ्यांगदितोभगवान्कमलेक्षणः ॥ ७५ ॥
प्रीतौस्वस्तवयुद्धेन श्लाघ्यस्त्वंमृत्युरावयोः ॥ आवांजहिनय-
त्रोर्वीसलिलेनपरिप्लुता ॥ ७६ ॥

टीका— ताके अनन्तर बलकारिके उन्मत्त और महामायाकारिकै
मोहित वे दैत्य बोले हे विष्णो तुझारे युद्धसे हम बड़े प्रसन्नभये तुम हमसे वर-
दान मांगो ॥ ७३ ॥ तब श्रीभगवान् बोले जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्नहो तो
दोनों मेरेहाथ मृत्युको प्राप्त हो और वरदानोंसे मेरेको कुछ प्रयोजन नहीं यह
वरदान मैं मांगा हूँ ॥ ७४ ॥ तब ऋषि बोले कि हे राजन् जब भगवान् वर-
दान मांगिके दैत्योंको ठगलिया तब संपूर्ण जगत्को जलमयी देखकर भगवा-
न्से कहते भये ॥ ७५ ॥ कि हे विष्णो वहां हमको मारो जहां जलसे डुबीहुई
पृथ्वी नहींहै ॥ ७६ ॥

ऋषिरुवाच ॥ तथेत्युक्त्वाभगवताशंखचक्रगदाभृता ॥ कृत्वा
चक्रेणैच्छिन्नेजघनेशिरसीतयोः ॥ ७७ ॥ एवमेपासमुत्पन्नाब्र-
ह्मणासंस्तुतास्वर्यं ॥ प्रभावमस्यादेव्यास्तुभूयः शृणुवदामिते

ॐ ॥ ७८ ॥ इतिमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरेदेवीमा-
हात्म्ये मधुकैटभवधोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

टीका—तब ऋषि बोले कि हे राजन् शंख चक्र गदाको धारण करने वाले तुम कहो जैसेही सही ऐसा दैत्योसे कहकरिकै अपनी जंघापर उनका शिर रखके सुदर्शनचक्रसे काटतेभये ॥ ७७ ॥ हे राजन् ऐसी रीतिसे भगवती उत्पन्न भईहै जाकी स्तुति करिहै फिर या देवीको माहात्म्य तुम्हारे अर्थ वर्णन करूहूं सो श्रवणकरो ॥ ७८ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणेदेवीमाहात्म्येमधु-
कैटभवधोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

ऋषिरुवाच ॥ देवासुरमभूद्युद्धंपूर्णमन्दशतंपुरा ॥ महिषे
सुराणामधिपेदेवानांचपुरंदरे ॥ १ ॥ तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसै-
न्यंपराजितम् ॥ जित्वाचसकलान्देवानिद्रोभून्महिषासुरः ॥
॥ २ ॥ ततःपराजितादेवाः पद्मयोनिंप्रजापतिम् ॥ पुरस्कृ-
त्यगतास्तत्रयत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ३ ॥ यथावृत्तंतयोस्तद्वन्म-
हिषासुरचेष्टितम् ॥ त्रिदशाःकथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥ ४ ॥

टीका—तब पहिले सुमेधा ऋषि बोले हे सुरथ राजन् असुरोंका राजा महिषासुर होता भया और देवतावोंका स्वामी इंद्र होता भया देवदानवोंका परस्पर पूर्ण सौ वर्षपर्यन्त युद्ध होता भया ॥ १ ॥ ता युद्धकेविषे असुरोंकी फौजने देवतावोंकी फौज हरा दर्द पीछे संपूर्ण देवतानको जीतकर महिषासुर इन्द्र होतो भयो ॥ २ ॥ ताके अनन्तर देवता हार कर ब्रह्माजीको अगाडी करिके जहां महादेवजी और भगवान् थे वहाँ जाते भये ॥ ३ ॥ जैसा महि-
षासुरका करा हुवा देवोंका तिरस्काररूपी वृत्तान्त था तैसा संपूर्ण वृत्तान्त शिव विष्णुके आगे देवता कहते भये ॥ ४ ॥

सूर्यैर्द्राग्र्यनिलेदूनांयमस्यवरुणस्यच ॥ अन्येषांचाधिकारा-
न्सस्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ५ ॥ स्वर्गान्निराकृताःसर्वेतेनदेव-
गणाभुवि ॥ विचरंतियथामर्त्यो महिषेणदुरात्मना ॥ ६ ॥
एतद्वःकथितंसर्वममरारिविचोष्टतम् ॥ शरणंवःप्रपन्नाःस्मोव-

धस्तस्यविचिंत्यतां ॥ ७ ॥ ऋषिर्वाच ॥ इत्थंनिशम्यदेवा-
नांवचांसिमधुसूदनः॥ चकारकोपंशंभुश्वभृकुटीकुटिलाननौ॥८॥

टीका— सूर्य इन्द्र अग्नि वायु चंद्र इनका और यमराज और वरुणका और संपूर्ण देवताका अधिकारकेविषे स्वयं महिपासुर स्थित है ॥ ५ ॥ वा महिपासुर दुष्टने संपूर्ण देवोंको स्वर्गसे निकाल दिया अब सब देवतामनु-
ष्योंकी तरह पृथ्वीमें विचरते है ॥ ६ ॥ हे महाराज महिपासुरकी जो दुष्ट-
चेष्टा है सो आपके आगे हमने कही हम आपकी शरण प्राप्त हैं सो आप इस
दुष्टको मारनेको उपाय चिंतवन करो ॥ ७ ॥ या प्रकारसे देवतोंका वचन
श्रवणकरिकै भृकुटी चढाकर टेढा कर लिया है मुख जिनेोंने ऐसै जे विष्णु
और शिव ते कोप करते भये ॥ ८ ॥

ततोतिकोपपूर्णस्यचक्रिणोवदनात्ततः ॥ निश्चक्राममहत्तेजो
ब्रह्मणः शंकरस्यच ॥ ९ ॥ अन्येषांचैवदेवानांशक्रादीनांश-
रीरतः ॥ निर्गतंसुमहत्तेजस्तच्चैक्यंसमगच्छत ॥ १० ॥ अ-
तीवतेजसःकूटंज्वलंतमिवपर्वतं ॥ ददृशुस्तेसुरास्तत्रज्वाला
व्याप्तदिगंतरं ॥ ११ ॥ अतुलंतत्रतत्तेजःसर्वदेवशरीरजं ॥
एकस्थंतदभून्नारीव्याप्तलोकत्रयंत्विषा ॥ १२ ॥

टीका— ताके अनन्तर अत्यंत कोपकरिकै पूर्ण जो विष्णु और शिव
तिनके मुखसे बड़ा तेज निकलता भया ॥ ९ ॥ फिर इन्द्रादिक देवोंकाभी
शरीरसे बड़ा तेज निकला वह सब इकट्ठा होता भया ॥ १० ॥ ताके अनं-
तर उस देव सभाके विषे लट्ठाकरिकै प्रकाशित कियो है दशोंदिशोंको मध्य
जाने ऐसा अत्यंत जो तेजका समुदाय है ताको इन्द्रादिक देव देखते भये
फिर कैसा है वह तेज जानो प्रकाशमान हेमाद्रिपर्वतही विराजमान है ॥ ११ ॥
कात्यायन ऋषिके आश्रममें सब देवोंके शरीरसे निकला हुआ जो इकट्ठा
अनंत तेज है सो स्त्रीरूप होताभया फिर कैसा है वह तेज अपनी दीप्ति-
करिकै प्रकाशित किये है तीनों लोक जाने ॥ १२ ॥

यदभूच्छांभवंतेजस्तेनाजायततन्मुखं ॥ याम्येनचाभवन्के-
 शावाहवोविष्णुतेजसा ॥ १३ ॥ सौम्येनस्तनयोर्युग्ममध्यं
 चैद्रेणचाभवत् ॥ वारुणेनचजंघोरूनि तं वस्तेजसाभुवः ॥ १४ ॥
 ब्रह्मणस्तेजसापादौतदंगुल्योर्कतेजसा ॥ वसूनांचकरांगुल्यः
 कौबेरेणचनासिका ॥ १५ ॥ तस्यास्तुदंताःसंभूताःप्राजाप-
 त्येनतेजसा ॥ नयनत्रितयंजज्ञेतथापावकतेजसा ॥ १६ ॥

टीका— फिर जो शंभुका तेज था वाते उस स्त्रीका मुख होता भया और
 यमके तेजसे केश होते भये विष्णुके तेजसे भुजा होती भई ॥ १३ ॥ सोमके
 तेजसे दोनो स्तन होते भये इन्द्रके तेजसे उदर होता भया वरुणके तेजसे
 जंघा और पींड़ी ये होती भई पृथ्वीके तेजसे कटिके पीछेका भाग होता
 भया ॥ १४ ॥ ब्रह्माके तेजसे पैर होते भये सूर्यके तेजसे पैरोंकी अंगुलियां
 होती भई वसुदेवताके तेजसे हाथोंकी अंगुलीयां होती भई कुबेरके तेजसे
 नासिका होती भई ॥ १५ ॥ प्रजापतियोंके तेजसे उसके दांत होते भये
 अग्निके तेजसे तीन नेत्र उत्पन्न होते भये ॥ १६ ॥

भुवौचसंध्वयोस्तेजःश्रवणावनिलस्यच ॥ अन्येषांचैवदेवानां
 संभवस्तेजसांशिवा ॥ १७ ॥ ततस्समस्तदेवानांतेजोरा-
 शिसमुद्भवाम् ॥ तांविभोक्त्यमुदंप्रापुरमरामहिषादिताः ॥ १८ ॥
 ततोदेवाददुस्तस्यैस्त्वानिस्त्वान्यायुधानिच ॥ उचुर्जयजये-
 त्युच्चैर्जयन्तींतेजयैषिणः ॥ १९ ॥ शूलंशूलाद्विनिष्कृष्यददौ
 तस्यैपिनाकधृक् ॥ चक्रंचदत्तवान्कृष्णःसमुत्पाट्यस्वचक्रतः २० ॥

टीका— संध्याके तेजसे भुकुटी होती भई वायुके तेजसे दोनो कान होते
 भये इन देवतोंका और अन्य देवतोंके तेजका एकाकी भाव है सो शिवा
 नामकरिके प्रसिद्ध भई ॥ १७ ॥ फिर समस्त देवताके तेजसे उत्पन्न भई
 ऐसी भगवतीको देखकरिके महिषासुरकरिके पीडित जे देवता है वे आनं-
 दको प्राप्त होतेभये ॥ १८ ॥ ताके अनन्तर भगवतीको देवता अपना अपना

शस्त्र देते भये और उच्च स्वरसे जयजयकार शब्द करते भये ॥ १९ ॥ महादेवजी भगवतीको त्रिशूलसे त्रिशूल उत्पन्न कर देते भये रुष्ण सुदर्शन चक्रसे चक्र खेंचकर देते भये ॥ २० ॥

शंखंचवरुणःशक्तिददौतस्यैहुताशनः ॥ मारुतोदत्तवांश्चापं
वाणपूर्णैतथेषुधी ॥ २१ ॥ वज्रमिन्द्रःसमुत्पात्यकुलिशादमरा-
धिपः॥ ददौतस्यैसहस्राक्षोवंटामैरावताद्भजात् ॥ २२ ॥ काल
दंडाद्यमोदंडपाशंचांबुपतिर्ददौ ॥ प्रजापतिश्चाक्षमालांददौ
ब्रह्माकमंडलुम्॥२३॥समस्तरोमकूपेषुनिजरश्मीन्दिवाकरः॥
कालश्चदत्तवान्खड्गंतस्यैचर्मचनिर्मलम् ॥ २४ ॥

टीका— वरुण शंख देते भये अग्नि शक्ति शस्त्र देते भये वायु धनुष और दो बाँणोंके भरे तूणीर देता भया ॥ २१ ॥ अपने वज्रसे वज्र उत्पादन करिके इन्द्र वज्र देतो भयो और ऐरावत हाथीसे वंटा लेकर देतो भयो ॥ २२ ॥ यम कालदण्डसे दण्ड उत्पन्न करिके देतो भयो वरुण अपने पाशसे पाश उत्पन्न करिके देतो भयो और प्रजापति ब्रह्मा जयमाला और कमण्डलु देतो भयो ॥ २३ ॥ वा देवीके संपूर्ण रोम कूप जे हैं तिनके विषे सूर्य अपनी किरण देते भये उस भगवतीको काल खड्ग देतो भयो और श्रेष्ठ ढाल देतो भयो ॥ २४ ॥

क्षीरोदश्चामलंहारमजरेचतथांबरे ॥ चूडामणितथादिव्यंकुंडले
कटकानिच॥२५॥अर्धचंद्रंतथाशुभ्रंकेयूरान्सर्वबाहुषु॥ नूपुरौ
विमलौतद्भद्रैवेयकमनुत्तमम् ॥ अंगुलीयकरत्नानिसमस्ता-
स्वंगुलीषुच ॥ २६ ॥ विश्वकर्माददौतस्यैपरशुंचातिनिर्मलं॥
अस्त्राप्यनेकरूपाणितथाभेद्यंचदंशनम्॥२७॥अम्लानपंकजां
मालांशिरस्युरसिचापरां॥अददज्जलधिस्तस्यैपंकजंचातिशोभनं॥
टीका— क्षीरोद समुद्र निर्मल हार देतो भयो और नवीनवस्त्र देतो भयो
॥ २५ ॥ दिव्य चूडामणि रत्न तथा कुण्डल और कडा और अर्धचंद्र सं-

पूर्ण भुजामें बाजू और निर्मल बिछिया और गलेमें पहरनेकी रत्नजडित माला और समस्त अंगुलियोंके विषे छल्ला अंगूठी ये सब आभूषण भगवतीको विश्वकर्मा देतोभयो और निर्मल परशी देतो भयो और अनेक तरहके अस्त्र और कवच ये देतोभयो ॥ २६ ॥ २७ ॥ फिर उसदेवीको समुद्र सदा प्रफुल्लित रहै ऐसे कमलोंकी माला शिरके विषे धारण करनेकी और कंठमें धारण करनेकी देतोभयो और मनोहर कमल देतोभयो ॥ २८ ॥

हिमवान्वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥ ददावशून्यं सुर
यापानपात्रं धनाधिपः ॥ २९ ॥ शेषश्च सर्वनागेशो महामणि
विभूषितं ॥ नागहारं ददौ तस्यै धत्तेयः पृथिवीमिमाम् ॥ ३० ॥
अन्यैरपि सुरैर्देवीभूषणैरायुधैस्तथा ॥ संमानिताननाद्गोचैः
सादृहासं मुहुर्मुहुः ॥ ३१ ॥ तस्यानादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं
नभः ॥ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत् ॥ ३२ ॥

टीका—और हिमवान् पर्वतराज देवीको सिंहवाहन देतोभयो और अनेक तरहके रत्न देतोभयो और कुवेर मदिराकरिके पूर्णपात्र देतोभयो ॥ २९ ॥ फिर उसदेवीको संपूर्ण नागोंका राजा जो शेषहै सो महामणि करिके शोभित नागरूप हार देतोभयो फिर वह शेष कौनसाहै जो या पृथ्वी को धारण करताहै ॥ ३० ॥ फिर और देवोंनेभी आभूषण और शस्त्रों करिके देवीका सन्मान किया तब देवी आदरयुक्त होकर बारंवार उच्चस्वर करिके अदृहासपूर्वक नाद करती हुई ॥ ३१ ॥ उस भगवतीके भयंकर शब्द करिके संपूर्ण आकाश शब्दायमान होताभया समीप आताहुवा जो बड़ा शब्द है ता करिके बड़ा प्रतिध्वनिशब्द होताभया ॥ ३२ ॥

चुक्षुभुः सकलालोकास्तमुद्राश्च चकंपिरे ॥ चचालवसुधाचेलुः
सकलाश्च महीधराः ॥ ३३ ॥ जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंह-
वाहिनीं ॥ तुष्टुबुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः ॥ ३४ ॥
दृष्ट्वा समस्तं संशुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते

समुत्तस्थुरुदायुधाः ॥ ३५ ॥ आः किमेतदितिक्रोधादाभाष्यम-
हिपासुरः ॥ अभ्यधावततंशब्दमशेषैरसुरैर्वृतः ॥ ३६ ॥

टीका—ता प्रतिध्वनि शब्द करिकै सब लोक चलायमान होगये और समुद्र कांपने लगगये और पृथ्वी पर्वत ये तिससमय सब चलायमान होजाते भये ॥ ३३ ॥ तासमय देवता आनंदपूर्वक जय जय शब्द करतेभये भक्ति करिकै नम्र हे स्वकाय जिनोंका ऐसे मुनि सिंहवाहिनी भगवतीकी स्तुति करतेभये ॥ ३४ ॥ फिर उस भगवतीका भयंकर शब्द करिके त्रिलोकी-को चलायमान देखकर युद्धके लिये करी है सेना तयार जिनोंने और उठाये हैं शस्त्र जिनोंने ऐसे जे दैत्यहै ते युद्ध करनेको उठतेभये ॥ ३५ ॥ यह क्या हे ऐसे क्रोधसे कहकर महिपासुर समस्त असुरोंकरिकै सहित उस देवीके शब्दके सन्मुख जातोभयो ॥ ३६ ॥

सददर्शततोर्देवीव्याप्तलोकत्रयांत्विषा ॥ पादाक्रांत्यानतभुवं
किरीटोल्लिखितांबराम् ॥ ३७ ॥ क्षोभिताशेषपातालांधनुर्ज्या-
निःस्वनेनतां ॥ दिशोभुजसहस्रेणसमंताद्रच्यप्यसंस्थितां ३८ ॥
ततःप्रवृत्तेयुद्धंतयादेव्यासुरद्विषां ॥ शस्त्रास्त्रैर्बहुधामुक्तरादी-
पितदिगंतरं ॥ ३९ ॥ महिपासुरसेनानीश्चिश्चुराख्योमहा-
सुरः ॥ युयुधेचामरश्चान्यैश्चतुरंगवलान्वितः ॥ ४० ॥

टीका—पीछे वहां जाके अपनी कांतिकरिकै प्रकाशित कियेहै तीनों लोक जानें पैरके आक्रमणसे नम्र करीहै पृथ्वी जाने मुकुट करिकै स्पर्शित है आकाश जाने धनुषकी प्रत्यंचाका शब्द करिकै चलायमान कियोहै संपूर्ण रसातल जाने हजार भुजासे दशदिशाको व्याप्त करिकै सम्यक्प्रकारसे स्थित ऐसी जो भगवती है ताको महिपासुर देखतोभयो ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ताके अनंतर देवीके साथ असुरोंका युद्ध होताजया फिर कैसा युद्ध जयाकि बहुत प्रकारसे शस्त्र और अस्त्र चलाने करिकै प्रकाशित जयोहै दशोंदिशाको मध्यभाग जामें ॥ ३९ ॥ महिपासुरकी सेनाका स्वामी चिश्चुरनामा असुर युद्ध करतोभयो और हाथि

गोंके सवार घोड़ोंके सवार रथोंके सवार पियादे ये है चार अंग जामें ऐसी
नौ चतुरंगिणी सेना तिसकरिके सहित दूसरा चामरनामा असुर देवीके साथ
युद्ध करताभया ॥ ४० ॥

रथानामयुतैः पद्मभिरुदग्रारूप्योमहासुरः ॥ अयुध्यतायुतानां
चसहस्रेणमहाहनुः ॥ ४१ ॥ पंचाशद्विश्वनिघुतैरसिलोमा
महासुरः ॥ अयुतानांशतैःपद्भिर्वाष्कलयुधुरणे ॥ ४२ ॥
गजवाजिसहस्रौघैरनेकैरुग्रदर्शनः ॥ वृत्तोरथानांकोट्याचयुद्धे
तस्मिन्नयुद्धचत ॥ ४३ ॥ विडालारूप्योमहादैत्यः पंचाशद्वि
रथायुतैः ॥ युयुधेसंयुगेतत्ररथानांपरिवारितः ॥ ४४ ॥

टीका—और साठहजार रथोंके सवारों करिके सहित उदग्रनामा अ
सुर देवीके साथ युद्ध करताभया और महाहनुनामा असुर कोटि रथोंके
सवारों करिके सहित देवीके साथ युद्ध करताभया ॥ ४१ ॥ और असिलो-
मा नामा असुर पांचकोटि रथोंके सवारों करिके सहित देवीके साथ युद्ध
करताभया और वाष्कलनामा असुर रणके विषे साठिलाख रथोंके सवारों
करिके सहित देवीके साथ युद्ध करता भया ॥ ४२ ॥ और उग्रदर्शन नामा असुर
हजारों हाथी घोड़ोंके सवारों करिके सहित और एक कोटि रथोंके सवारों
करिके सहित रणमें देवीके साथ युद्ध करता भया ॥ ४३ ॥ और विडालनामा
असुर पांचलाख रथोंके सवारों करिके सहित संग्राममें युद्ध करता भया ॥ ४४ ॥

वृत्तः कालोरथानांचरणेपंचाशतायुतैः ॥ युयुधेसंयुगेतत्रताव-
द्विःपरिवारितः ॥ ४५ ॥ अन्येचतत्रायुतशोरथनागहयैर्वृताः ॥
युयुधुस्संयुगेदेव्यासहतत्रमहासुराः ॥ ४६ ॥ कोटिकोटिसहस्रै-
स्तुरथानांदन्तिनांतथा ॥ हयानांचवृत्तयुद्धेतत्राभून्महिषासु-
रः ॥ ४७ ॥ तोमरैर्भिदिपालैश्चशक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥ युयु
धुःसंयुगेदेव्याखड्गैःपरशुपट्टिशैः ॥ ४८ ॥

टीका—और काल नामा असुर पांचलाख रथोंके सवारों करिके वेष्टित

रणके विषे देवीके साथ युद्ध करता भया फिर वही असुर पाँचलाख हाथि-
योंके सवारों करिकै सहित संग्राममें देवीके साथ युद्ध करता भया ताके
अनन्तर वही पाँचलाख घोड़ोंके सवारों करिकै युक्त युद्ध करता भया फिर
ताके अनन्तर वही पाँचलाख पयादों करिकै परिवारित देवीके साथ युद्ध
करता भया ॥ ४५ ॥ तिस रणके विषे दशहजार रथ हाथी घोड़ोंके सवारों
करिकै सहित और जे असुर हैं वे देवीके साथ युद्ध करते भये ॥ ४६ ॥ फिर
एक शंख संख्या परिमित रथोंके सवार और एक शंख संख्या परिमित हाथि-
योंके सवार और एक शंख संख्या परिमितही घोड़ोंके सवार इस प्रकारसे
तीन शंख सेना करिकै सहित महिपासुर देवीके साथ युद्ध करनेको रणभू-
मिमें सावधान होतो भयो ॥ ४७ ॥ तिस समय संग्रामके विषे ते संपूर्ण असुर
तोमर जे भाला हैं और भिंदिपाल जे गोफिया हैं और शक्ति जे शांग हैं
और मुशल जे हैं और खड्ग जे हैं और फरशी जे हैं और पट्टिश जे हैं इन
शस्त्रों करिकै देवीके साथ युद्ध कर्त्त भये ॥ ४८ ॥

केचिच्चक्षिषुःशक्तीःकेचित्पाशास्तथापरे ॥ देवींखड्गप्रहारै
स्तुतेतांहंतुंप्रचक्रमुः ॥ ४९ ॥ सापिदेवीततस्तानिशस्त्राण्य-
स्त्राणिचण्डिका॥लीलयैवप्रचिच्छेदनिजशस्त्रास्त्रवर्पिणी ५०॥
अनायस्ताननादेवीस्तूयमानासुरर्षिभिः ॥ मुमोचासुरदेहे
पुशस्त्राण्यस्त्राणिचेश्वरी ॥ ५१ ॥ सोपिकुद्धोधुतसटोदेव्या
वाहनकेसरी ॥ चचारासुरसैन्येषुवनेष्विवहुताशनः॥ ५२ ॥

टीका— उस युद्धमें कितनेही देवीको मारनेकों शांग फेंकते भये और
कितनेही नागपाश आदि पाश फेंकते भये और कितनेही खड्गके प्रहारों
करिकै देवीको मारनेको उद्योग कर्त्त भये ॥ ४९ ॥ ताके अनन्तर अपने
शस्त्र और अस्त्रोंकी वर्षा करती हुई भगवती उन दैत्योंके शस्त्र और अस्त्र
लीला करिकै सब खंडित करती गई ॥ ५० ॥ फिर ग्लानि करिके रहित है मुख
जिसका और देव और ऋषि इन करिकै स्तुति करी गई ऐसी ईश्वरी असुरोंके
शरीरोंके विषे शस्त्र और अस्त्र छोड़ती गई ॥ ५१ ॥ फिर देवीका वाहन

सिंहभी काँधेके केश कँपाताहुवा और क्रोधयुक्त गर्जताहुवा असुरोंकी सेनामें चारों तरफ़ भ्रमता भया कैसे कि जैसे बाँशके वनोंमें चारों तरफ़ अग्नि भ्रमे ताकी तुल्य ॥ ५२ ॥

निःश्वासान्मुमुचेयांश्चयुध्यमानारणेम्बिका ॥ तएवसद्यःसं
भूतागणाःशतसहस्रशः ॥ ५३ ॥ युयुधुस्तेपरशुभिर्भिदिपा-
लासिपट्टिशैः॥नाशयंतोसुरगणान्देवीशत्तयुपवृंहिताः॥५४॥
अवादयंतपटहान्गणाःशंखांस्तथापरे ॥ मृदंगांश्चतथैवान्ये
तस्मिन्युद्धमहोत्सवे ॥ ५५ ॥ ततोदेवीत्रिशूलेनगदयाशरवृष्टि-
भिः ॥ खड्गादिभिश्चशतशोनिजवानमहासुरान् ॥ ५६ ॥

टीका— फिर असुरोंके साथ संग्रामके विषे जितने क्रोधका निःश्वास
अंबिका छोडती गई फिर वे निःश्वासही उतने लाख भगवतीके गण होजाते
भये ॥ ५३ ॥ फिर वे गण तुम असुरोंके साथ युद्धकरो युद्धकरो ऐसे देवी
करिके उत्साह प्राप्त कियेहुवे फरशी और गोफिया और खड्ग और पट्टिश
इन शस्त्रोंकरिके असुरगणोंका नाश कर्तहुवे महाअसुरोंके साथ युद्ध कर्त-
भये ॥ ५४ ॥ फिर उस युद्ध महोत्सवके विषे देवीके निःश्वाससे उत्पन्नहुवे
पूर्वोक्त गण उनमेंसे कितनेही तो नगारा बजाते भये और कितनेही शंख
बजाते भये और कितनेही मृदंग बजातेभये ॥ ५५ ॥ ताके अनंतर त्रिशूल
गदा और खड्ग और माला और मुद्गर और मुशल इन आदिछे शस्त्रोंके
प्रहार करिके और बाणोंकी वर्षा करिके भगवती एक एक वा शत शत महा
असुर मारती गई ॥ ५६ ॥

पातयामासचैवान्यान्यन्वंटास्वनविमोहितान् ॥ असुरान्भुविपा-
शेनैवद्धाचान्यानकर्षयत् ॥ ५७ ॥ ॥ केचिद्विधाकृतास्ती
क्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥ विपोजितानिपातेनगदयाभुविशे
रते ॥ ५८ ॥ वेमुश्चकेचिद्रुधिरंसुसलेनभृशंहताः॥केचिन्निप-
तिताभूमौभिन्नाःशूलेनवक्षसि ॥ ५९॥ निरंतरशरौघेणकृताः
केचिद्रणाजिरे ॥ सेनानुकारिणः प्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः॥६०॥

टीका— फिर देवीके घंटाके शब्दसे मूर्छित जे असुर हैं तिनको देवी पाशसे बाँधकर पृथ्वीमें पटकती गई और कितनेहीं असुरोंको पाशसे बाँध कर खँचतीगई ॥ ५७ ॥ फिर देवी और कितनेही असुरोंका तीखे खड्गके प्रहारों करिके दो टुकड़ा कर्ची गई और कितनेही असुर देवीकी गदाके प्रहार करिके मृत्युको प्राप्त हुवे पृथ्वीमें सोते भये ॥ ५८ ॥ और कितनेही असुर देवीके मुशलके प्रहार करिके मुखसे रुधिर वमन कर्त्तेभये फिर और कितनेही असुर देवीके त्रिशूलकरिके छातीमें विदारित हुवे पृथ्वीमें पड़ते भये ॥ ५९ ॥ फिर पर्वतके समान है शरीर जिनोंका और देवताको पीड़ा करनेवाले ऐसे जे असुर ते देवीके निरंतर बाणोंके समुदायके प्रहारसे रणमें विधेहुवे प्राणोंको त्यागतेभये ॥ ६० ॥

केपांचिद्राहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥ शिरांसिपेतुरन्ये-
षामन्येमध्येविदारिताः ॥ ६१ ॥ विच्छिन्नजंघास्त्वपरेपेतुरुर्व्यां
महासुराः ॥ एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्याद्विधाकृताः ॥ ६२ ॥
छिन्नेपिचान्येशिरसिपतिताः पुनरुत्थिताः ॥ कबंधायुयुधुर्दे-
व्यागृहीतपरमायुधाः ॥ ६३ ॥ ननृतुश्चापरेतत्रयुद्धेत्तूर्यलया-
श्रिताः ॥ कबंधाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यष्टपिपाणयः ॥ ६४ ॥
तिष्ठतिष्ठेतिभाषंतो देवीमन्ये महासुराः ॥ रुधिरौघविलुप्तां-
गाः संग्रामेलोमहर्षणे ॥ ६५ ॥

टीका— और कितनेही असुरोंकी देवीके शस्त्र प्रहारोंसे खंडितहुई भुजा पृथ्वीमें पड़तीगई और कितनेही असुर देवीके शस्त्रप्रहारोंसे कटी हैं नाडी जिनोंकी ऐसे पृथ्वीमें पड़तेभये और कितनेही असुरोंका देवीके खड्ग आदि शस्त्र प्रहारसे शिर कटके गिरतेभये और कितनेही देवीके शस्त्रप्रहारोंकरिके शरीरके विषे हाथ पैरोंसे खंडितहुवे पृथ्वीमें पड़तेभये ॥ ६१ ॥ और कितनेही असुर कटाई जंघा जिनोंकी ऐसे पृथ्वीमें पड़तेभये और कितनेही असुर देवीके शस्त्रप्रहार करिके खंडित कियेहुये एक भुजावाले और

एक नेत्रवाले और एक चरणवाले होतेहुवे पृथ्वीमें पडते भये ॥ ६२ ॥
 और कितनेही असुर शिर कटनेसे पृथ्वीमें पडेभी फिर शिर धारण
 कर्त्तेहुवे उठतेभये ताके अनंतर शस्त्र ग्रहण करिके देवीके साथ युद्ध क-
 र्त्तेभये ॥ ६३ ॥ फिर उस युद्धकेविषे कटेहैं शिर जिनोके ऐसे जे दैत्यहैं ते
 वीणा मृदंग आदि वादित्रोके वीरशब्दके आश्रितहुवे अर्थात् वीररसके आ-
 वेशते चेत कर्त्तेहुवे फिर शिर धारण कर्त्ते संते कितनेही तो नृत्य कर्त्तेभये
 और उनमेंसे कितनेही खड्ग शांग पौलंडी लाठी ये शस्त्रहैं हाथमें जिनोके ऐसे
 भगवतीके साथ युद्ध कर्त्तेभये ॥ ६४ ॥ फिर उस भयंकर संग्रामके विषे रु-
 धिर करिके सन्योहैं अंग जिनोका ऐसे और तुम हमारे आगे खडीरहो ख-
 डीरहो ऐसे कहतेहुवे जे कितनेही और महाअसुरहैं ते देवीके साथ युद्ध कर-
 नेको आतेभये ॥ ६५ ॥

पातितैरथनागाश्चैरसुरैश्च वसुंधरा ॥ अगम्यासाभवत्तत्रय-
 त्राभूत्समहारणः ॥ ६६ ॥ शोणितौघामहानद्यस्तद्यस्तत्र
 विमुल्लुघुः ॥ मध्येचामुरसैन्यस्यवारणासुरवाजिनाम् ॥ ६७ ॥
 क्षणेनतन्महासैन्यमसुराणांतथाम्बिका ॥ निन्येक्षयंयथावह्नि
 स्तृणदारुमहाचयम् ॥ ६८ ॥ सचसिंहोमहानादमुत्सृजन्धुतके-
 सरः ॥ सोपिरुद्धोद्युतसटोदेव्यावाहनकेसरी ॥ ६९ ॥ शरीरेभ्यो-
 मरारीणामसूनिवविचिन्वति ॥ देव्यागणैश्चतैस्तत्रकृतंयुद्धंतथा
 सुरैः ॥ यथैनांतुष्टुदेवाः पुष्पवृष्टिमुचोदिवि ॥ ७० ॥ श्रीमार्कण्डे-
 यपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरेदेवीमाहात्म्येद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

टीका- फिर जहाँ देवीके साथ महिपासुरकी सेनाका बडा भयंकर
 युद्ध हुवा तहां देवीनें बाण आदि शस्त्रोके प्रहारसे पटके जे रथ हाथी घोडे
 और असुर तिन करिके आकीर्णभूमि अगम्य होतीभई ॥ ६६ ॥ फिर उस
 युद्धके विषे जब देवीके साथ असुरोंका संग्राम प्रारंभ हुवा उसी क्षणमेंही
 असुरोंकी सेनाके मध्यमें हाथी असुर और घोडे इनके रुधिरके समूहकी म-

हानदियाँ वहतीभई ॥ ६७ ॥ फिर जैसे तृण काष्ठके संचयको अग्नि क्षण-
मात्रकरिके नाशको प्राप्त करदेता है तिसीप्रकारसे देवी क्षणमात्रकरिके अ-
सुरोंकी महासेनाको नाशको प्राप्त करतीभई ॥ ६८ ॥ फिर तिसी प्रकारसे वह जो
भगवतीवाहन सिंह है सोभी कंठ गर्जना कर्त्ताहुवा कंपायेहै कंधाके केश ज्या-
ने क्रोधयुक्त हुवा नखप्रहारोंकरिके असुरोंकी सेनाको नाश कर्त्ताभया ॥ ६९ ॥
फिर उस संग्रामकेविषे देवीका क्रोधके निश्वासते उत्पन्नभये ऐसै जेगण जि-
नेने तिस प्रकारसे असुरोंकी साथ युद्धकिया और जैसे स्वर्गमें पुष्पोंकी व-
र्षा कर्त्तेहुए देवता भगवतीकी स्तुति कर्त्तेभये तिसप्रकारसे श्रवणकरो ॥ ७० ॥
इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ निहन्यमानंतत्सैन्यमवलोक्यमहासुरः ॥ से-
नानीश्विशुरः कोपाद्ययौयोद्धुमथांविकाम् ॥ १ ॥ सदेवींशरव-
र्षेणववर्षसमरेसुरः ॥ यथामेरुगिरेः शृंगंतोयवर्षेणतोयदः ॥ २ ॥
तस्यच्छित्त्वाततोदेवी लीलैवशरोत्करान् ॥ जवानतुरगा-
न्वाणैर्यैतारंचैववाजिनाम् ॥ ३ ॥ चिच्छेदचधनुःसद्योध्वजं
चातिसमुच्छ्रितम् ॥ विव्याधचैवगात्रेषुच्छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥ ४ ॥
सच्छिन्नधन्वाविरथोहताश्वोहतसारथिः ॥ अभ्यधावततां देवीं
खड्गचर्मधरोसुरः ॥ ५ ॥

टीका— ऋषि बोले फिर ताके अनंतर संपूर्ण महिपासुरकी सेनाको देवी
करिके हती हुई देखकर महिपासुरका सेनापति विशुर नामा दैत्य
क्रोधसे दौडके युद्ध करनेको देवीके सन्मुख जातोभयो ॥ १ ॥ ताके अनं-
तर विशुरनामा दैत्य संग्राममें बाणोंकी वर्षाकरिके भगवतीको आच्छा-
दित कर्त्तोभयो कैसेके जैसे मेघ जलकी वर्षाकरिके सुमेरु पर्वतकी
शिखरको आच्छादित कर देता है ॥ २ ॥ ताके अनंतर उस संग्रा-
ममें विना परिश्रमके माथ देवी अपने बाणोंकरिके विशुर नामा दैत्यके
बाणोंको काटकर घोड़ोंको मारती भई और पीछे सारथियोंकोभी

मारती भई ॥ ३ ॥ फिर उसी क्षणमें बाणों करिकै देवी उस दैत्यका धनुष काटती भई और बड़ी ऊंची जो तिसके रथकी ध्वजा है ताको काटती भई फिर टूट गयो है धनुष जाको ऐसी जो चिक्षुर नामा दैत्य है ताके समग्र शरीरके अवयवोंमें बड़े तीखे बाणोंकरिकै छेद कर्त्ती भई ॥ ४ ॥ ताके अनंतर टूटो है धनुष और रथ जाको भरे हैं घोडा और सारथी जिसके ऐसा जो चिक्षुर नामा दैत्य सो तरवार ढाल लेके देवीके उपर दाढताभया ॥ ५ ॥

सिंहमाहत्यखड्गेनतीक्ष्णधारेणमूर्धनि ॥ आजघानभुजेसव्ये-
देवीमप्यतिवेगवान् ॥ ६ ॥ तस्याः खड्गोभुजंग्राप्यपफालनृ-
पनन्दन ॥ ततो जग्राहशूलंसकोपादरुणलोचनः ॥ ७ ॥ चि-
क्षेपचतस्तत्तुभद्रकाल्यामहासुरः ॥ जाज्वल्यमानंतेजोभी-
रविर्विवमिवांवरात् ॥ ८ ॥ दृष्ट्वातदापतच्छूलं देवीशूलममुञ्चत् ॥
तेनतच्छतधानीतंशूलंसचमहासुरः ॥ ९ ॥ हतेतस्मिन्महावीर्यं
महिषस्यचमूपतौ ॥ आजगामगजाखड्गश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥ १०

टीका— ताके अनंतर तीखी धारवाले खड्गको सिंहके माथेमें प्रहारकरिकै बड़ा वेगवाला दैत्य देवीकी वाँई भुजामें प्रहार कर्त्ताभया ॥ ६ ॥ हे सुरथ वह खड्ग भगवतीके भुजाको प्राप्त होकर उसी समय चूर्णीभूत होता भया ताके अनंतर क्रोधसे लाल नेत्र कर्त्ता हुवा त्रिशूल ग्रहणकर्त्ता भया ॥ ७ ॥ फिर वह त्रिशूल भद्रकालीको मारनेकेलिये फेकता भया कैसा है वह त्रिशूल कि जानू आकाशमें चलनेवाला तेजोकरिकै प्रकाशमान सूर्यका बिंब ॥ ८ ॥ ताके अनंतर उस त्रिशूलको आता हुवा भगवती देखकर अपना त्रिशूल छोड़ती भई फिर भगवतीके त्रिशूलने असुरके त्रिशूलका चूर्ण करदिया और उस असुरकाभी चूर्ण करदिया ॥ ९ ॥ फिर जब महिषासुरका सेनापति चिक्षुर नामा दैत्य संग्राममें मारा गया तब हाथीपर बैठा हुवा देवतानको पीडा करनेवाला चामर नामा दैत्य आता भया ॥ १० ॥

सोपिशक्तिमुमोचाथदेव्यास्तामंबिकाद्रुतम् ॥ हुंकाराभिहतां
भूमौपातयामासनिष्प्रभां ॥ ११ ॥ भयांशक्तिनिपतितांदृष्ट्वा
क्रोधसमन्वितः ॥ चिक्षेपचामरः शूलंबाणैस्तदपिसाच्छिन-
त् ॥ १२ ॥ ततःसिंहःसमुत्पत्यगजकुंभांतरेस्थितः । बाहुयु-
द्धेनयुयुधेतेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥ १३ ॥ युध्यमानौततस्तौतुत
स्मान्नागान्महींगतौ ॥ युयुधातेतिसंरब्धौप्रहारैरतिदारुणैः ॥ १४
ततोवेगात्स्वमुत्पत्यनिपत्यचमृगारिणा ॥ करप्रहारेणशिर
श्चामरस्यपृथक्कृतं ॥ १५ ॥

टीका— फिर वहभी देवीको मारनेके लिये शांग शस्त्र फेकता भया फिर
अंबिका अपना हुंकारकरिकै मलिन हुई शांगको शीघ्रही पृथ्वीमें गिराती
भई ॥ ११ ॥ ताके अनंतर देवीकरिकै खंडित हुई और पृथ्वीमें पड़ी हुई
अपनी शांगको देखकर क्रोधयुक्त हुवा चामर नामा दैत्य देवीके सन्मुख त्रि-
शूल फेकता भया उस त्रिशूलकोभी भगवती बाणोंकरिके काटती
भई ॥ १२ ॥ फिर ता समय सिंह उछलकै हाथीके माथेके मध्यमें बैठा हुवा
अत्यंत बाहुयुद्धकरिकै देवतांका शत्रु चामर नामा दैत्यके साथ युद्ध कर्त्तों
भयो ॥ १३ ॥ ताके अनंतर सिंह और चामर नामा दैत्य ये दोनों युद्ध कर्त्ते
हुवे हाथीपरसे पृथ्वीमें गिरते भये फिरभी बड़े कठोर प्रहारोंकरिकै अत्यंत
क्रोध युक्त हुवे युद्ध कर्त्ते भये ॥ १४ ॥ ताके अनंतर सिंहेने आकाशमें उछ-
लके और पृथ्वीपर पड़ेके नखप्रहारोंकरिकै चामरदैत्यका शिर काट दिया १५

उदग्रश्वरणेदेव्याशिलावृक्षादिभिर्हतः ॥ दंतमुष्टितलैश्चैवकराल
श्चनिपातितः ॥ १६ ॥ देवीक्रुद्धागदापातैश्चूर्णयामासचोद्धतम् ॥
वाष्कलंभिदिपालेनबाणैस्ताम्रंतथांधकम् ॥ १७ ॥ उग्रास्य-
मुग्रवीर्यचतैवचमहाहनुं ॥ त्रिनेत्राचत्रिशूलेनजघानपरमेश्व-
री ॥ १८ ॥ बिडालस्यासिनाकायात्पातयामासवेशिरः ॥
दुर्धरंदुर्मुखंचोभौशरैर्निन्येयमक्षयं ॥ कालंचकालदण्डेनकाल-

रात्रिरपातयत् ॥ १९ ॥ उग्रदर्शनमत्युग्रैः खड्गपातैरताड-
यत् ॥ असिनैवासिलोमानमच्छिदत्सारणोत्सवे ॥ गणैः सिंहेन दे-
व्याचजयक्ष्वेडाकृतोत्सवैः ॥ २० ॥

टीका—फिर उस रणकेविषे पापाण और वृक्ष इनके प्रहार करिके और धनुष आदि शस्त्रोंके प्रहारकरिके देवीने उग्रनामदैत्यको मारा और हार्थीके दांतकी बनी जो मुष्टिका तिनके प्रहारकरिके चनपटोकरिके करालनामा दैत्य को पृथ्वीमें गिरादिया ॥ १६ ॥ फिर उस संग्राममें क्रोधयुक्त होतीहुई भगवती उद्धतनाम दैत्यको गदाके प्रहारोंकरिके चूर्ण कर्त्तीभई और गोफियाशस्त्रके प्रहारकरिके त्रिनेत्रापरमेश्वरी बाणकलदैत्यकों मारतीभई तिसीप्रकार बाणों-के प्रहारकरिके ताम्रदैत्यको मारतीभई और तैसेही अंधक दैत्यको मारतीभई और तिसीप्रकार उग्रस्य और उग्रवीर्य और महाहनु इन दैत्योंकोभी मारती भई और त्रिशूलके प्रहार करिके समग्रसेनाकों मारतीभई ॥ १८ ॥ और तलवार करिके बिडालासुरके शिरकों शरीरसे अलग गिरातीभई और बाणोंके प्रहारकरिके दुर्धर और दुर्मुख इन दोनो दैत्योंको यमराजके लोकमें प्राप्तकर्त्ती भई और कालरात्रि देवी कालदंडकरिके कालनामदैत्यको पृथ्वीमें गिराती भई ॥ १९ ॥ और बडेकठोर खड्गके प्रहारकरिके भगवती उग्रदर्शन दैत्यको पृथ्वीमें गिरातीभई और खड्गके प्रहारकरिकेही असिलोमा दैत्यको मारतीभ-ई फिर उस रणरूपी उत्सवकेविषे भगवतीके गण और सिंह और भगवती इनोंने जयसंबंधी सिंहनाद किया ॥ २० ॥

एवंसंक्षीयमाणेतुस्त्वसैन्येमाहिपासुरः ॥ माहिपेणस्वरूपेणत्रा-
सयामासतान्गणान् ॥ २१ ॥ कांश्चित्तुंडप्रहारेणक्षुरक्षेपैस्त-
थापरान् ॥ लांगूलताडितांश्चान्यान् शृंगाभ्यांचविदारिता
न् ॥ २२ ॥ वेगेनकांश्चिदपरान्नादेनभ्रमणेनच ॥ निःश्वासप-
वनेनान्यान्पातयामासभूतले ॥ २३ ॥ निपात्यप्रमथानी-
कमभ्यधावत्तसोऽसुरः ॥ सिंहहंतुंमहादेव्याःकोपंचक्रेततो-

म्बिका ॥ २४ ॥ सोपिकोपान्महावीर्यःक्षुरक्षुण्णमहीत-
लः ॥ शृंगाभ्यांपर्वतानुच्चांश्चिक्षेपचनादच ॥ २५ ॥

टीका— इसप्रकारसे देवीके गणोंकरिकै अपनी सेना नाशमान होतेहुवे देखकर इसवातको नहीं सहताहुवा महिषासुर महिषाकार स्वरूपकरिके भगवतीके गणोंको कंपायमान कर्त्तोभयो ॥ २१ ॥ ताके अनंतर कितनेही गण तो मुखके प्रहारसे पृथ्वीमें गिरातोभयो और कितनेही गण खुरोंके प्रहारों करिकै पृथ्वीमें गिरातोभयो और कितनेही पुच्छकरिकै ताडित तिनको पृथ्वीमें गिरातो भयो और कितनेही गणोंको शृंगोंसे वींधकर पृथ्वीमें गिरातो भयो ॥ २२ ॥ और कितनेही गणोंको वेगकरिकै पृथ्वीमें गिरातोभयो और कितनेही गणोंको गर्जनाकरिकै पृथ्वीमें गिरातोभयो और कितनेही गणोंको शरीरकी फेटकरिकै पृथ्वीमें गिरातोभयो और कितनेही गणोंको अपने श्वासकी पवनकरिकै पृथ्वीमें गिरातोभयो ॥ २३ ॥ फिर वह असुर भगवतीकी पार्षदसेनाको ऐसे गिराकर पीछे भगवतीके सिंहके मारनेको सन्मुख दौडतो भयो ता समय भगवती महिषासुरकेविषे अत्यंत क्रोध कर्त्तोभई ॥ २४ ॥ फिर वहभी बडा पराक्रमी दैत्य क्रोधसे खैरू खूंदत हुवा पर्वतोंको शृंगोंसे उठाकर भगवतीके मस्तकपर फेकताभया और ऊंचे स्वरसे गर्जना कर्त्तोभयो ॥ २५ ॥

वेगभ्रमणविक्षुण्णामहीतस्यव्यशीर्यत॥लांगूलेनाहतश्चाब्धिः-
प्रावयामाससर्वतः॥२६॥धुतशृंगविभिन्नाश्चखंडंखंडंययुर्धनाः॥
श्वासानिलास्ताःशतशोनिपेतुर्नभसोचलाः ॥ २७॥ इतिक्रोध
समाध्मातमापतंतमहासुरं॥दृष्ट्वासाचंडिकाकोपंतद्वधायतदा-
करोत्॥२८॥साक्षित्वातस्यवैपाशंतवबंधमहासुरं॥तत्याजमा
हिंपरूपंसोपिवद्धोमहामृधे॥ २९ ॥ ततःसिंहोभवत्सद्योयाव-
त्तस्याम्बिकाशिरः॥छिनत्तितावत्पुरुषःसद्गपाणिरदृश्यत॥३०॥
टीका—फिर तिस महिषासुरका जो वेगकरिकै भ्रमण ताकरिकै पिसी-

हुई पृथ्वी आपही नम्र होतीभई और उस महिषासुरकी पुच्छकरिकै ताडि-
तहुवा समुद्र सर्वत्र पृथ्वीकेविषे मनुष्योंको डुबाताभया ॥ २६ ॥ फिर
कंपित शृंगोंकरिकै विदीर्ण किये ऐसे जे मेघ ते खंडखंड होयकर जातेभये
और तिस महिषासुरका क्रोधका सेंकडों श्वासके पवनसे फेकेहुवे जे पर्वत
वे चूर्णीभूत हुवे आकाशसे पडतेभये ॥ २७ ॥ इस प्रकारसे क्रोधरूपी अग्नि
करिकै संयुक्त और युद्धकेलिये आताहुवा महिषासुरको देखकर चंडिका
उसके मारनेकेलिये क्रोध कर्त्तीभई ॥ २८ ॥ फिर उस महासंग्राममें
महिषासुरके मारनकेलिये भगवती पाश फेकके महिषासुरको बांधतीभई सोभी
पाशके बंधसे घबराताहुवा महिषाकार स्वरूपको त्यागताभया ॥ २९ ॥
फिर महिषाकार स्वरूप त्यागके अनंतर भगवतीसे युद्ध करनेको उसीसमय
सिंहरूप होतोभयो फिर जितने कालकरिकै भगवती उसको शिर काटेगी उत-
ने कालकेविषे खड्ग है हाथमें जिसके ऐसा पुरुष प्रकट होताहुवा भगवतीको
दीखताभया ॥ ३० ॥

ततएवाशुपुरुषदेवीचिच्छेदसायकैः ॥ तंखड्गं चर्मणासार्धततः
सोभून्महागजः ॥ ३१ ॥ करेणचमहासिंहंतंचकर्षजगर्जच ॥
कर्षतस्तुकरंदेवीखड्गेननिरकृतत ॥ ३२ ॥ ततोमहासुरोभूयो
माहिषंवपुराश्रितः ॥ तथैवक्षोभयामासत्रैलोक्यंसचराचरं ३३ ॥
ततःक्रुद्धाजगन्माताचण्डिकापानमुत्तमम् ॥ पपौपुनःपुनश्चैव
जहासारुणलोचना ॥ ३४ ॥ ननर्दचासुरःसोपिवलवीर्यमदोद्धतः ॥
विषाणाभ्यांचचिक्षेपचंडिकांप्रतिभूधरान् ॥ ३५ ॥

टीका— फिर पुरुष देखनेके अनंतरही बाणोंकरिकै भगवती पुरुषका
कंठ काटती भई और उसकी तलवार ढालभी काटती भई फिर पुरुषरूपके
सकाशते गजरूप होतो भयो ॥ ३१ ॥ फिर शूंड करिकै वह असुर देवीवाहन
सिंहको खैंचतो भयो और गर्जतो भयो फिर सिंहको खैंचते हुवेकी शूंड देवी
खड्ग करिकै काटती भई ॥ ३२ ॥ ताके अनंतर वह असुर फिर अपने निज

महिषाकार स्वरूप बनाता भया और तिसीप्रकार चराचर त्रिलोकीको दुःख देता भया ॥ ३३ ॥ ताके अनंतर क्रोधयुक्त होती हुई जगत्की माता चंडिका और लाल हैं नेत्र जाके ऐसी भगवती रणकेविषे मद्य पीती भई फिर बारंवार हँसतीही भई और युद्धको कुछ नहीं गिनती भई ॥ ३४ ॥ फिर सामर्थ्य और तेज और गर्व इनकरिकै छोड़ी है मर्यादा जाने ऐसी जो महिपासुर सोभी रणभूमिकेविषे गर्जतो भयो और शृंगोंसे भगवतीपर पर्वत फेकतो भयो ॥ ३५ ॥

साचतान्प्रहितांस्तेनचूर्णयंतीश्रोत्करैः ॥ उवाचतमदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम् ॥ ३६ ॥ देव्युवाच ॥ गर्जगर्जक्षणंमूढमधुयावत्पिबाम्यहं ॥ मयात्वयिहतेत्रैवगर्जिष्यंत्याशुदेवताः ॥ ३७ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ एवमुक्त्वासमुत्पत्यसारूढातंमहासुरं ॥ पादेनाक्रम्यकंठेचशूलेनैनमताडयत् ॥ ३८ ॥ ततः सोपिपदाक्रांतस्तयानिजमुखात्ततः ॥ अर्धनिष्क्रान्तएवासीद्देव्यावीर्येणसंवृतः ॥ ३९ ॥ अर्धनिष्क्रांतएवासौयुध्यमानोमहासुरः ॥ तयामहासिनादेव्यांशिराड्छित्त्वानिपातितः ॥ ४० ॥

टोका— फिर उस दैत्यके फेंके हुवे पर्वतोंको बाणोंकी वर्षाकरिकै चूर्ण करती हुई भगवती मद्यपानके मदकरिकै उत्पन्न भयो जो मुखकेविषे राग ताकरिकै अच्छी तरह नहीं समझेन अक्षर जाकेविषे जैसा होय तैसा बोलती भई ॥ ३६ ॥ देवी बोलती भई कि हे मूढ जितने मैं मद्य पीती हूं उतने क्षणभर तू गर्ज गर्ज ताके अनंतर मेरेसे तेरे मरनेके बाद इस संग्रामकेविषे शीघ्रही देवता गजेंगे ॥ ३७ ॥ ताके अनंतर ऋषि बोले कि हे राजन् ऐसे भगवतीकहकर और उछलकर असुरके ऊपर बैठती हुई एक पैरसे असुरको बांधकर पीछे उसके कंठमें जिश्नूल मारती भई ॥ ३८ ॥ ताके अनंतर एक पैरसे बंधा हुवा महिपासुर अपने मुखसे पुरुषरूप होकर निकसता हुवा तिस समय देवीने अपनी सामर्थ्यकरिकै रोक दिया याते आधा निकसत,

हुवाही रहता गया ॥ ३९ ॥ फिर वह जो आधा निकसा हुआही देवीके साथ युद्ध कर्त्ता हुआ महिपासुर दैत्य है सो उसे भगवतीने महा खड्गसे शिर काटकरिकै पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ ४० ॥

एवंसमहिषोनामससैन्यःसमुद्दहणः ॥ त्रैलोक्यंमोहयित्वातु-
तयादेव्याविनाशितः ॥ ४१ ॥ त्रैलोक्यस्थैस्तदाभूतैर्महि-
षेविनिपातिते ॥ जयेत्युक्तंततःसर्वैःसदेवासुरमानवैः ॥ ४२ ॥
ततोहाहाकृतंसर्वदैत्यसैन्यंननाशयत् ॥ प्रहर्षचपरंजग्मुः
सकलादेवतागणाः ॥ ४३ ॥ तुष्टुबुस्तांसुरादेवींसहदिव्यैर्मह-
र्षिभिः ॥ जगुर्मधर्वपतयोन्नतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ४४ ॥
इतिश्रीमार्कण्डेयपुराणेषावर्णिकेमन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये तृती-
योध्यायः ॥ ३ ॥

टीका— इस प्रकारसे अपनी सेनाकरिकै सहित और अपने मित्रादिकन करिकै सहित त्रिलोकीको दुःख देकर युद्ध कर्त्ता हुआ ऐसा जो महिपासुर उसे संग्रामकेविषे भगवतीने मारा ॥ ४१ ॥ तिस समयकेविषे त्रिलोकीमें रहनेवाले देव और असुर और मनुष्य अर्थात् स्वर्गमें रहनेवाले इंद्रादिक दे-
वता और पातालमें रहनेवाले बलि आदि असुर और पृथ्वीमें रहनेवाले ब्रा-
ह्मण आदि मनुष्य ये सब जयजयशब्द कर्त्ते भये ॥ ४२ ॥ ताके अनंतर जो कुछ बाकी रही दैत्योंकी सेना सो हाहाकार कर्त्ता हुई अदृष्ट होती गई और संपूर्ण देवता आनंदको प्राप्त होते भये ॥ ४३ ॥ फिर स्वर्गमें रहनेवाले महर्षियोंकरिकै सहित देवता भगवतीकी स्तुति कर्त्तेभये और हाहा हूहू आदि गंधर्व गाते भये और उर्वशीसे आदिले अप्सरा नाचती गई ॥ ४४ ॥ इति मार्क ङेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिपासुरवधोनाम तृतीयो ॥ ३ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ततःसुरगणाःसर्वदेव्याइन्द्रपुरोगमाः ॥ स्तुतिमा-
रेभिरैकैर्नुनिहतेमहिपासुरे ॥ १ ॥ शक्रादयःसुरगणानिहते
तिवीर्यैतस्मिन्दुरात्मनिसुरारिवलेचदेव्या ॥ तांतुष्टुबुःप्रणाति

नम्रशिरोधरांसावाग्भिःप्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥ देवा
 ऊचुः ॥ देव्याययाततमिदंजगदात्मशक्त्यानिर्गुणेशदेवगणश-
 क्तिसमूहमूर्त्या॥तामं विकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः
 स्मविदधातुशुभानि सानः॥३॥ यस्याःप्रभावमतुलंभगवाननं
 तोब्रह्माहरश्चनहिवकुमलंबलंच ॥ साचण्डिकाखिलजगत्पारि-
 पालनाय नाशायचाशुभभयस्यमतिकरोतु ॥ ४ ॥ याश्रीः
 स्वयंसुकृतिनांभवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनांकृतधियांहृदयेषु
 बुद्धिः ॥ श्रद्धासतांकुलजनप्रभवस्यलज्जा तांत्वांनताःस्मपरि
 पालयदेविविश्वम् ॥ ५ ॥

टीका- ऋषि बोल कि हे राजन् महिपासुरके मरनेके अनंतर इंद्रादिक
 देवता भगवतीकी स्तुति करनेको आरंभ कर्त्ते भये ॥ १ ॥ और जब देवीने
 उस संग्रामके विषे बड़ा पराक्रमी और दुरात्मा ऐसे महिपासुरको मारा और
 दैत्योंकी सेनाको मारी ता समयके विषे स्नेहकरिकै नम्र है नाडि और कंधे जि-
 नोके और आनंदके विषे जे रोमांच तिनका जो ऊठना ताकरिकै मनोहर हे देह
 जिनोके ऐसे जे इंद्रादिक देवताते भगवतीकी स्तुति कर्त्ते भये ॥ २ ॥ देवता बो-
 लते भये कि संपूर्ण देव ओर उनकी शक्ति इनके जे समूह तेही है मूर्ति जिसकी
 ऐसी जो भगवती ताने अपनी शक्ति करिकै जगत् रच्यो है और संपूर्ण देव
 और महर्षि इन करिकै पूज्य ऐसी जो अंशिका देवी ताको हम भक्ति करि-
 कै नमस्कार करते हैं हे भगवती हमारा कल्याण करो ॥ ३ ॥ और नहीं है
 उपमा जाकी ऐसा जो भगवतीका प्रभाव और बल ताको वर्णन करनेको
 विष्णु और ब्रह्मा और शिव ये भी समर्थ नहीं वह चंडिका जगत्को पालनेके
 अर्थ और अशुभनसे जो भय ताके नाशके अर्थ बुद्धि करो ॥ ४ ॥ हे देवी!
 पुण्यवानोंके घरोंके विषे जो तुम लक्ष्मीरूपहो और पापियोंके घरोंके विषे
 अलक्ष्मी रूपहो और ज्ञानियोंके हृदयके विषे बुद्धिरूपहो और सज्जनोंके
 हृदयके विषे श्रद्धारूपहो और श्रेष्ठकुलके विषे उत्पन्न जो मनुष्य ताके हृद-

यके विषे लज्जारूपहो ऐसी जो तुमहो सो तुमको हम नमस्कार करतेहैं तुम
या जगत्को पालनकरो ॥ ५ ॥

किं वर्णयामतवरूपमचिंत्यमेतत्किंचातिवीर्यमसुरक्षयकारिभू-
रि ॥ किंचाहवेषुचरितानितवातियानिसर्वेषुदेव्यसुरदेवगणा-
दिकेषु ॥ ६ ॥ हेतुःसमस्तजगतांत्रिगुणापिदेवैर्नज्ञायसेहरि-
हरादिभिरप्यपारा॥सर्वाश्रयाखिलमिदंजगदंशभूतमव्याकृता
हिपरमाप्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥ यस्याः समस्तसुरतासमुदी-
रणेनतृप्तिप्रयातिसकलेषुमखेषुदेवि ॥ स्वाहासिष्वैपितृगणस्य
चतृप्तिहेतुरुच्चार्यसेत्वमतएवजनैः स्वधाच ॥ ८ ॥ यामुक्ति
हेतुरविचिंत्यमहाव्रतात्वमभ्यस्यसेमुनियतैर्द्रियतत्त्वसारैः ॥
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर्विद्याऽसिसाभगवतीपरमा
हिदेवि ॥ ९ ॥ शब्दात्मिकासुविमलार्ग्यजुषांनिधानमुद्गी-
थरम्यपदपाठवतांचसाम्नाम् ॥ देवीत्रयीभगवतीभवभावनाय
वार्तासिसर्वजगतां परमार्तिहंत्री ॥ १० ॥

टीका—हेदेवि! संपूर्ण असुर और देवगण इत्यादिकोंके विषे अत्यंत
असुरोंका क्षय करनेवाला और बड़ा पराक्रमी मन करिकेभी चितवन कर-
नेको दुर्लभ ऐसा जो तुमारा यह मनोहररूप ताको हम वाणी करिके कैसे
वर्णन करें और संग्रामोंके विषे मन करिकेभी स्मरण करनेको दुर्लभ ऐसे जे
तुमारे वीर कर्महैं तिनकेभी हम वाणीकरिके कैसे वर्णन करें॥६॥ हे भगवती!
स्वर्ग और पृथ्वी और पाताल इनका कारण त्रिगुणभी तूहै तौसी हरिहरादिक
देवों करिके नहीं जानीजाताहै फिर कैसीहै अनंतहै और सबका आ-
श्रयहै और यह जगत्संपूर्ण तेरा अंशभूतहै फिर तू कैसीहै किसी करिके प्र-
काशित नहींहै फिर कैसीहै उत्कृष्ट लक्ष्मीरूपहै फिर कैसीहै जगत्का मूल
भूतहै फिर कैसीहै प्रकृतिरूपहै ॥७॥ हे भगवती! फिर तू कैसीहै स्वाहारूपहै
जाका उच्चार करिके संपूर्ण यज्ञोंके विषे संपूर्ण देवता तृप्तिको प्राप्त होतेहैं

इसकारणसे निश्चयकरिके पितृगणकी तृतिका हेतु स्वधारूप मनुष्यों करिके उच्चारण करीजातीहे ॥ ८ ॥ हेभगवती ! जो तुम मुक्तिका हेतु चितवन करने-में नहींआवो और बड़े कठिनहैं व्रत जाकेविषे और संपूर्ण ऐश्वर्य करिके युक्त और वेदांतके अभ्यास करिके उत्पत्ति जाकी ऐसी ब्रह्मज्ञानकी प्राप्ति रूप जो विद्या सो तुमहो फिर तुम कैसी हो अच्छीतरह विषयोंसे हटाईहै इन्द्रियोंकी वृत्ति जिनोंने और तत्त्वज्ञानहै सार जिनोंके और नष्ट होगयेहैं समस्त कामादि रूप दोष जिनोंके ऐसे मोक्षकी इच्छा करनेवाले जे मुनिहैं तिन करिके बारंवार अभ्यासकरीजातीहो ॥ ९ ॥ हेभगवति ! फिर तुम कैसीहो संपूर्ण ऐश्वर्य करिके युक्तहो और नादरूपहो सुंदर और दोष करिके रहित ऐसे जे ऋग्वेद तिन करिके सहित जे यजुर्वेद और उच्चस्वरसे गाने करिके रमणीकपदपाठवाले ऐसे जे सामवेद इनकी शिवजीका ध्यानकेअर्थ प्रवृत्त त्रयीरूप तुमहो फिर कैसीहो कृपि गोरक्षादि वृत्तिरूप तुमहो फिर कैसीहो सबजगत्का आधारहो और सबजगत्का दुःख हरनेवालीहो ॥ १० ॥

मेधासिदेविविदिताखिलशास्त्रसारादुर्गाऽसिदुर्गभवसागरनौर-संगा ॥ श्रीःकैटभारिहृदयैककृताधिवासागौरीत्वमेवशशिमौ-लिकृतप्रतिष्ठा ॥ ११ ॥ ईषत्सहासममलंपरिपूर्णचंद्रबिम्बा-नुकारिकनकोत्तमकांतिकांतम् ॥ अत्यद्भुतंप्रहृतमात्तरुपात-थापिवक्त्रं विलोक्यसहसामहिषासुरेण ॥ १२ ॥ दृष्ट्वातुदेवि-कुपितंभृकुटीकरालमुद्यच्छशांकसहशच्छवियन्नसद्यः ॥ प्रा-णान्मुमोचमहिषस्तदतीवचित्रकैर्जीव्यतेहिकुपितांतकदर्शने-न ॥ १३ ॥ देविप्रसोदपरमाभवतीभवाय सद्योविनाशयसि-कोपवतीकुलानि ॥ विज्ञातमेतदधुनैवयदस्तमेतन्नीतंवलंसु-विपुलंमहिषासुरस्य ॥ १४ ॥ तेसंमताजनपदेषुधनानितेपातिपां-यशांसिनचसीदतिबंधुवर्गः ॥ धन्यास्तएवनिभूतात्मजभृत्यदा-रायेपांसदाभ्युदयदाभवतीप्रसन्ना ॥ १५ ॥

टीका— हे भगवती ! फिर तुम कैसी हो कि जानेंजाय संपूर्ण शास्त्र जा करिकै ऐसी बुद्धिरूप हो फिर कैसी हो दुःख करिकै प्राप्त होसकतीहो फिर कैसी हो अगम्य जो संसार रूपी समुद्र ताके विषे नौका रूप हो फिर कैसी हो कि संसारके विषय वासना करिकै रहित हो फिर कैसी हो विष्णुके वक्षस्थलमें निवास करनेवाली लक्ष्मीरूप हो फिर कैसी हो शिवजीनें कियो है सत्कार जाको ऐसी गौरीरूप तुम हो ॥ ११ ॥ हे भगवती ! मंदहास्य करिकै सहित और निर्मल और पूर्णिमाके चंद्रमाके बिंबके सदृश और सुवर्णके बीचमें जो उत्तम सुवर्ण ताकी शोभाके सदृश है शोभा जाकी याते बडाही मनोहर ऐसा जो तुल्लारा मुख ताको देखकर तोभी क्रोधयुक्त महिपासुरने बलात्कारसे प्रहार किया यह बड़ा अचरज है क्यों कि जगत्को मोहन करनेवाला ऐसा जो तुल्लारा मुख ताको देखकर महिपासुरको मोहन नहीं हुवा याते यह अत्यंत भेद भयो ॥ १२ ॥ हे देवी उस रणके विषे क्रोध करिकै युक्त और झुकुटीकरिकै भयंकर और पूर्णिमाके विषे उदयहोताहुवा चंद्रमाकी तुल्य है शोभा जाकी ऐसा तुल्लारे मुखको देखकर ता समय महिपासुर प्राण नहीं त्यागता भया यह बड़ा अचरज है क्यों कि क्रोधयुक्त कालके दर्शन करिकै कौन प्राणी जीवे अर्थात् कोई नहीं जीवे ॥ १३ ॥ हे भगवती तुम प्रसन्न हो फिर कैसी हो उत्कृष्ट लक्ष्मीरूप हो तुल्लारेसे युद्ध करनेको आई ऐसी जो महिपासुरकी सेना है ताको तुमने नाशको प्राप्त करदर्ई यह क्या बात है इसको अवही हम जानें है कि हे भगवती जब तुम प्रसन्न होती हो तब शीघ्रही जगत्का पालन कर्ती हो और जब क्रोधयुक्त होती हो तब शीघ्रही असुरोंके वंशका नाश कर्ती हो ॥ १४ ॥ हे भगवती ! तुम मनोरथ पूर्ण करनेवाली जिनके ऊपर प्रसन्न हों वेही मनुष्य संपूर्ण देशोंमें प्रतिष्ठा वाले है और उनके धन है और उनकेही यश है और उनके भाईबंध जे हैं तेभी दुःख नहीं पाते है और वेही पुण्यवाले हैं फिर वे पुरुष कैसे हैं कि शिक्षा दियेगयेहैं कुलको आचरणके विषे पुत्र और नौकर और स्त्रियां जिनोंके ॥ १५ ॥

धर्म्याणि देविसकलानि सदैव कर्माण्यत्याहृतः प्रतिदिनं सुकृती
करोति ॥ स्वर्गप्रयाति च ततो भवती प्रसादा लोकात्रयेऽपि फलदा-
ननु देवितेन ॥ १६ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजंतोः स्वस्थैः
स्मृता मतिमतीषु भांददासि ॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणिका
त्वदन्यासर्वोपकारकरणा यस्य सदा र्द्रचित्ता ॥ १७ ॥ एभिर्है तैर्ज-
गदुपैति सुखं तथैते कुर्वन्नाम नरकाय चिराय पापं ॥ संग्राममृत्यु-
मधिगम्य दिवं प्रयांतुमत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि देवि ॥ १८ ॥
दृष्ट्वैवा किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु यत्प्राहिणोपिश-
सं ॥ लोकान्प्रयान्तरिषवोपि हि शस्त्रपूता इत्थं मतिर्भवति ते-
ष्वहितेषु साध्वी ॥ १९ ॥ खड्गप्रभानि करविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकांतिनिबहेन दृशोसुराणां ॥ यन्नागता विलयमंशुमर्दि
दुखं डयो ग्यानं तव विलोकयतां तदेतत् ॥ २० ॥

टीका— हे भगवती! तुमारी कृपासे नित्यप्रति सदाही आदरयुक्त होता
हुवा जो सुकृति मनुष्य है सो तुमहारी प्रसन्नताके अर्थ ज्योतिष्टोमादिक जे
कर्म हैं तिनको कर्त्ता है फिर ताके अनंतर तुमहारी प्रसन्नतासे स्वर्गमें जाता है
फिर ताके अनंतर मोक्षको प्राप्त होता है हे देवी! तिस कारण करिकै तीनों
लोकोमें तुमही फल देनेवाली हो ॥ १६ ॥ हे दुर्गे! तुम मन करिकै स्मरण
करी हुई सब प्राणीयोंका भय दूर कर्त्ती हो और स्थिर चित्तवालों करिकै
स्मरण करी हुई तुम उनको धर्म अर्थ काम मोक्ष इनका साधनभूत अत्यंत
श्रेष्ठ बुद्धि देती हो हे दारिद्र्य और दुःख और भय इनको दूर करनेवाली!
सबका उपकार करनेको सदैव आर्द्र है हृदय जाको ऐसी तुमहारेसे और दू-
सरी कौन है अर्थात् कोई नहीं है ॥ १७ ॥ तुमनें मारे जे ये महिपासुरसे
आदि ले करके दैत्य तिन करिकै जगत् सुखको प्राप्त हो और तिस प्रकार ये
असुर बहुत काल पर्यंत नरकके विषे प्राप्त होवेको पाप मत करो किंतु ये
असुर संग्रामके विषे मृत्युको प्राप्त होकर स्वर्गमें जावो ये निश्चय करिकै तीन

कारण मनमें विचार करिकै हे देवी! इन असुरोंको तुम मारती हो ॥ १८ ॥
 हे भगवती! दृष्टि करिकेही क्या सब असुरोंको भस्म नहीं करदो अर्थात्
 करिही दो तौभी शत्रुओंके विषे जो तुम शस्त्र छोडती हो सो हमारो शत्रुभी
 शस्त्रोंसे पवित्र होता हुवा यथेच्छ स्वर्गादिक लोकोंके विषे जावो इस प्रका-
 रसे दुष्ट दैत्योंके विषे तुल्लारी श्रेष्ठ बुद्धि है ॥ १९ ॥ और संग्रामके विषे तु-
 ल्लारे खड्गकी जे प्रभा ताके समूहके चारुतरफ फैलने करिकै और त्रिशूलकी
 प्रभाके समूह करिकै असुरोंकी जे दृष्टि ते नाशको प्राप्त न भई सो यह और
 ही कारण है क्यों कि कैसे हैं वे असुर है अमृतमयी किरण जाकी ऐसा
 अर्द्धचंद्र करिकै युक्त जो तुल्लारा मुख ताको देखते हुवे ॥ २० ॥

दुर्वृत्तवृत्तशमनंतवदेविशीलरूपंतथैतदविचिंत्यमतुल्यमन्यैः।
 वीर्यचहंतृहृतदेवपराक्रमाणावैरिष्वपिप्रकाटितैवदयात्वयेत्य
 म् ॥ २१ ॥ केनोपमाभवतुतेस्यपराक्रमस्य रूपंचशत्रुभय
 कार्यतिहारिकुत्र ॥ चित्तेकृपासमरनिधुरताचदृष्टात्वय्येवदेवि
 वरदेभुवनत्रयेपि॥ २२ ॥ त्रैलोक्यमेतदखिलंरिपुनाशनेनत्रातं
 त्वयासमरमूर्धनितेपिहत्वा ॥ नीतादिवंरिपुगणाभयमप्यपा
 स्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवंनमस्ते ॥ २३ ॥ शूलेनपाहि
 नोदेविपाहिखड्गेनचाश्विके ॥ घण्टास्वनेननः पाहिचापज्या-
 निःस्वनेनच॥ २४ ॥ प्राच्यांरक्षप्रतीच्यांच चण्डिकेरक्षदक्षिणे॥
 भ्रामणेनात्मशूलस्यउत्तरस्यांतथेश्वरि ॥ २५ ॥

टीका— फिर हेदेवि! तुम कैसीहो पापियोंके पाप दूर करनेवाला यह तु-
 ल्लारा स्वाभाविक गुणहै और तिसीप्रकार मन करिकेभी चितवन करनेको
 दुर्लभ और अद्वितीय होनेसे और कोई मनोहर रूपों करिकै समान नहीं
 ऐसा तुमारा रूपहै और तिसीप्रकार अपने आधीन कियेहैं देव जाँने ऐसा है
 पराक्रम जिनोंका ऐसे दैत्योंको मारनेवाला तुल्लारा पराक्रमहै फिर हेदेवि! वे-
 रियोंकेविषेभी तुमने ऐसे दयाही प्रगट करी ॥ २१ ॥ हेवरदान देनेवाली !

तुमारा इस पराक्रमकी तीन लोकमेंभी किसीके साथ उपमा होय अर्थात् किसीके साथ नहीं ऐसा तुझारा पराक्रमहै और शत्रुओंको भय करनेवाला और नको मनोहारी ऐसा रूप कहां ऐसा तुमाराही रूपहै और तुझारा चित्तके विषे रुषा और रणके विषे कठोरता यह तुम्हारे विषेही देखीहै ॥ २२ ॥ हेदेवि! संग्रामके विषे दैत्योंको मारि करिके तुमने संपूर्ण त्रिलोकीकी रक्षा करी फिर उन अपने दैत्योंकोभी संग्रामके विषे मारि करिके तुमने स्वर्गमें पहुँचादिये और दैत्योंसे उत्पन्न जो हमको भय था सो हमारा भयभी तुमने दूरकिया ऐसी जो तुमहो तुझारे अर्थ नमस्कारहै ॥ २३ ॥ हे अंबिके! त्रिशूल करिके हमारी शत्रुओंसे रक्षाकरो और खड्ग करिके रक्षाकरो और हे देवि ! घंटाके शब्द करिके और धनुषकी टंकार करिके तुम हमारी शत्रुओंसे और पापोंसे रक्षाकरो ॥ २४ ॥ हेचंडिके त्रिशूलको चारों और घुमाने करिके पूर्वमें और पश्चिममें और दक्षिणमें हमारी रक्षाकरो और किसीप्रकार हेईश्वरी उत्तरके विषे रक्षाकरो ॥ २५ ॥

सौम्यानियानिरूपाणित्रैलोक्येविचरंतिते ॥ यानिचात्यंतवो-
राणितैरक्षास्मांस्तथाभुवम् ॥ २६ ॥ खड्गशूलगदादीनियानि
चास्त्राणितेऽम्बिके ॥ करपल्लवसंगीनितैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ २७ ॥
ऋषिरुवाच ॥ एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नदनोद्भवैः ॥ अर्चि-
ताजगतां धात्रीतत्रगंधानुलेपनैः ॥ २८ ॥ भक्त्यासमस्तौघि-
दशैर्दिव्यैर्धूपैः सुधूपिता ॥ प्राहप्रसादसुमुखीसमस्तान्प्रण-
तान्मुरान् ॥ २९ ॥ देव्युवाच ॥ त्रियतां त्रिदशाः सर्वेयदस्म-
त्तोभिर्वांछितम् ॥ ददाम्यहमतिप्रीत्यास्तवैरोभिः सुपूजिता ॥ ३० ॥

टीका— और हेजगवती ! संसारको रचनवाले और पालना करनेवाले जे तुम्हारे सौम्यरूपहैं और संसारके संहार करनेवाले ऐसे जे तुम्हारे भयंकर रूप हैं ते दोनो प्रकारके रूप त्रिलोकीके विषे विचरतेहैं तिन दोनों प्रकारके रूपों करिके हमारी रक्षाकरो और या पृथ्वीकी रक्षा करो और पातालकी राक्ष-

करो ॥ २६ ॥ और हे भगवती ! हाथेंमें धारण किये ऐसे जे खड्ग और त्रिशूल और गदा इन आदिलेकर शस्त्र तिनकरिके और धनुषआदि जे अस्त्रहैं तिन करिके चारों तरफ शत्रुवोंसे और दुःखसे हमारी रक्षाकरो ॥ २७ ॥ तब ऋषि बोले कि हे राजन् ! जब इसप्रकारसे जगत्के पोषण करनेवाली भगवती देवता करिकै स्तुति करीहुई और दिव्य नंदन वनमें उत्पन्न होनेवाले पुष्पों करिकै और चंदन श्रीराग इत्यादिकोंकरिके पूजितहुई ॥ २८ ॥ और देवतावों करिकै भक्तिपूर्वक दिव्य धूपसे पूजितहुई ऐसी भगवती प्रसन्न होतीहुई देवतोंके प्रति बोलतीहुई ॥ २९ ॥ देवी बोली कि हे देवो ! सब तुम मेरेसे मनोवांछित वरदान मांगो तुमने स्तुतिकरी जिसकरिकै मैं बड़ी प्रसन्नहूं सो जो मांगोगे वही दूंगी ॥ ३० ॥

कर्तव्यमपर्यञ्चदुष्करंतन्नविद्महे ॥ इत्याकर्ण्यवचोदेव्याः प्र-
त्युचुस्तेदिवौकसः ॥ ३१ ॥ देवाञ्जुः ॥ भगवत्या कृतं सर्वं न किं-
चिदवीक्ष्यते ॥ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ॥ ३२ ॥
यदिचापिवरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥ संस्मृता संस्मृता त्वं
नो हिंसेथाः परमापदः ॥ ३३ ॥ यश्चमर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां
स्तोप्यत्यमलानने ॥ तस्य वित्तिर्द्विविधैर्धनदारादिसंपदाम् ॥
वृद्धये स्मत्प्रसन्नात्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥ ३४ ॥ ऋषिरुवाच ॥
॥ इति प्रसादिता देवैर्जगतोर्थे तथात्मनः ॥ तथेत्युक्त्वा भद्र-
कालीयभूवांतर्हितानृप ॥ ३५ ॥

टीका— फिर हे देवो ! और जो तुमको कार्य करणाहोय सो कहो उसको कुछ मुश्किल नहीं जानतीहूं ऐसे भगवतीके कोमल वचन सुन करिके देवता बोलनेलगे ॥ ३१ ॥ देव बोले हे देवि ! जिस कारणसे तुमने यह हमारा महिषासुर नाम शत्रु मारा याते तुमने सब हमारा प्रयोजन करिही दिया और कुछ काम बाकी न रहा ॥ ३२ ॥ हे महेश्वरी ! जो तुमने हमारेको वरदेना योग्यहीहै तो वही आपत्तियोंके विषे तुम बारंबार स्मरण करीहुई हमारी

गपत्ति दूरकरो ॥ ३३ ॥ और हे भगवती हे अमलानने जिन श्लोकोंकरिके तुलारी हमने स्तुति कही उन श्लोकोंकरिके जो कोई मनुष्य तुलारी स्तुति करेगा याते हमारेपर प्रसन्नहुई उस मनुष्यकी अश्वसे आदि लेकर जो धन और ऋद्धि और ऐश्वर्य इन करिके सहित जे धन और स्त्री पुत्रादिकनकी संपत्तिहै तिनकी तुम सदा वृद्धिके अर्थ हो ॥ ३४ ॥ तब ऋषि बोले हे सुरथ राजन् इस प्रकारसे जगत्के अर्थ और अपने अर्थ देवोंने प्रसन्नकरी ऐसी जो भद्रकाली सो तैसेही हो ऐसे कहकर अंतर्धान होती गई ॥ ३५ ॥

इत्येतत्कथितं भूपसंभूतासायथापुरा ॥ देवीदेवशरीरेभ्योजगत्र
यहितैपिणी ॥ ३६ ॥ पुनश्चगौरीदेहात्सासमुद्भूतायथाभवत् ॥
वधायदुष्टदैत्यानांतथाशुंभनिशुंभयोः ॥ ३७ ॥ रक्षणायचलो-
कानां देवानामुपकारिणी ॥ तच्छृणुष्वमयाख्यातं यथावत्कथया-
मिते ॥ ३८ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे दे-
वीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

टीका— हे राजन् तीनों लोकका हित चाहनेवाली भगवती महिषासुर
आदि दैत्योंके वधकेवास्ते पहिले जैसे सब देवोंके शरीरोंसे तेजरूप उत्पन्न
होती गई यह वृत्तांत मैंने तुल्लारेको कहा ॥ ३६ ॥ फिर दुष्ट दैत्योंके मारनेके
वास्ते और शुंभ निशुंभके मारनेकेवास्ते और तीनों लोकोंकी रक्षाकेवास्ते
गौरीका देहसे जैसे भगवती उत्पन्न गई सो तुमसे यथार्थ कहता हूं मेरा कहा
सुनो ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे शक्रादिकृत
देव्याः स्तुतिर्नामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

ऋषिरुवाच ॥ पुरा शुंभनिशुंभाभ्यामसुराभ्यांश्चीपतेः ॥ त्रै-
लोक्यं यज्ञभागाश्च हतामदबलाश्रयात् ॥ १ ॥ तावेव सूर्यतातद्र-
दधिकारं तथैदं द्रवम् ॥ कौवेरमथयाम्यंचक्राते वरुणस्य च ॥ २ ॥
तावेव पवनर्द्धिचक्रतुर्वह्निकर्म च ॥ अन्येषां चाधिकारान्सर्व-
यमेवाधितिष्ठति ॥ ततो देवा विनिर्धृता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥ ३ ॥

हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यांसर्वैरनिराकृताः ॥ महासुराभ्यांतां
देवींसंस्मरन्त्यपराजिताम् ॥ ४ ॥ तयास्माकं वरोदत्तो यथापत्सु
स्मृताखिलाः ॥ भवतानाशयिष्यामितत्क्षणात्परमापदः ॥ ५ ॥

टीका— ऋषि बोले पहिले तामसमन्वन्तरकेविषे कश्यपजीके सकाश
ते दनु स्त्रीके विषे तीन असुर उत्पन्न होते भये जिनोमें बड़ा तो नमुचि नामा
और छोटे शुंभ और निशुंभ तिनमें शुंभ और निशुंभ ए दो बड़े पराक्रमी भये
इन शुंभ निशुंभ दोनों असुरोंने मद और गर्व और सामर्थ्य इनके शरीरमें हो-
नेसे इंद्रका त्रैलोक्य खोस लिया ॥ १ ॥ और वे दोनों शुंभ निशुंभही सूर्य-
पनाका काम कर्त्तैभये और तिसी प्रकार चंद्रपनाका काम कर्त्तै भये और
तिसी प्रकार कुबेरपनाका और यमराजपनाका और वरुणपनाका काम कर्त्तै
भये ॥ २ ॥ और वेही पवनके निरंतर गतिरूपी जो ऐश्वर्य हैं सो कर्त्तै और
वेही अग्निका काम कर्त्तैभये इसी प्रकार और सब देवतोंकाभी अधिकार
आपही लैते भये और तिन शुंभ निशुंभ असुरोंसे हारेहुवे यातेही भट हो गयो
है राज्य जिनोका ऐसे जे देव ताते शुंभ निशुंभ असुरोंने स्वर्गसे निकास
दिये ॥ ३ ॥ फिर खुसगया है राज्य जिनोका ऐसे जे तिन दानवोंकरिके
स्वर्गसे निकासे हुवे संपूर्ण देवता ते नहीं किसी करिकेभी पराजित ऐसी जो
भगवती ताको स्मरण कर्त्तै भये ॥ ४ ॥ मैं आपत्तिकालकेविषे स्मरण करी
हुई उसी समय तुल्लारी संपूर्ण आपत्ति जे हैं तिनको नष्ट करुंगी इस प्रकारसे
भगवतीने हमारेको वर दिया है ॥ ५ ॥

इतिकृत्वामतिदेवाहिमवंतं न गेश्वरम् ॥ जग्मुस्तत्र ततो देवीं
विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥ ६ ॥ देवा ऊचुः ॥ नमो देव्यै महादेव्यै
शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म-
ताम् ॥ ७ ॥ रोद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ॥ नमो
जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ ८ ॥ ज्योत्स्नायै चंद्ररूपि-
ण्यै सुखायै सततं नमः ॥ कल्याण्यै प्रणतामृद्धयै सिद्धयै कर्म्यै

नमोनमः ॥ नैर्ऋत्यैभूभृतांलक्ष्म्यैशर्वाण्यैतेनमोनमः ॥ ९ ॥
दुर्गायैदुर्गपारायैसारायैसर्वकारिणि ॥ ख्यात्यैतथैवकृष्णायै
धूम्रायैसततंनमः ॥ १० ॥

टीका— इस प्रकार मनमें विचार करिके पर्वतराज हिमालय पर्वत जो है तहां जाते जये फिर विष्णुमाया भगवतीकी स्तुति कर्त्ते भये ॥ ६ ॥ देव बोले कि देवीके अर्थ नमस्कार है और महादेवीके अर्थ और कल्याणरूपा भगवतीके अर्थ निरंतर नमस्कार है और प्रकृतिके अर्थ नमस्कार है और भंगलरूपाके अर्थ नमस्कार है एकाग्र चित्त हुवे तिस भगवतीको हम प्रणाम कर्त्ते हैं ॥ ७ ॥ और संहारशक्तिके अर्थ नमस्कार है और कालत्रयकरिके अवाधित ऐसी नित्यरूपा भगवतीके अर्थ नमस्कार हो गौरीके अर्थ और धरणीरूपाके अर्थ नमस्कार ३ और जगत्का धारण करनेवालीके अर्थ नमस्कार देवी और कृतीके अर्थ नमस्कार है ॥ ८ ॥ और चांदिनीरूपाके अर्थ और चंद्ररूपिणीके अर्थ परमानंदरूपाके अर्थ निरंतर नमस्कार और कल्याणोंके अर्थ और प्रणाम करनेवाले तिनकी क्रद्धिके अर्थ और सिद्धिके अर्थ और कूर्मसंबंधिनी शक्तिके अर्थ नमस्कार और अलक्ष्मीके अर्थ और राजावोंकी लक्ष्मीके अर्थ और शर्वाणीके अर्थ नमस्कार २ ॥ ९ ॥ और दुःख करिके जानी जाय ऐसी दुर्गाके अर्थ और संसारसे दूरके अर्थ और सर्व कारिणीके अर्थ और विख्यातिरूपाके अर्थ और तिसी प्रकार कृष्णशक्तिके अर्थ और धूम्रवर्णाके अर्थ निरंतर नमस्कार हो ॥ १० ॥

अतिसौम्यातिरौद्रायैनमस्तस्यैनमोनमः ॥ नमोजगत्प्रति-
ष्ठायैदेव्यैकृत्यैनमोनमः ॥ ११ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुविष्णुमाये-
तिशब्दिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः ॥ १२ ॥
यादेवीसर्वभूतेषुचेतनेत्यभिधीयते ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यै
नमस्तस्यैनमोनमः ॥ १३ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुबुद्धिरूपेणसं-
स्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः ॥ १४ ॥

यादेवीसर्वभूतेषुनिद्रारूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यै
नमस्तस्यैनमोनमः ॥ १५ ॥

टी० और अतिसौम्यके अर्थ अर्थात् अतिसुंदरके अर्थ और अत्यंत भ-
यंकरके अर्थ नमस्कार नमस्कार नमस्कार और जगत्के उपादान कारणरूपके
अर्थ नमस्कार और देवशक्तिके अर्थ और क्रियारूपके अर्थ नमस्कार नमस्कार
नमस्कार ॥ ११ ॥ और जो भगवती सब भूतोंके विषे विष्णुमाया नामकरिके
कही है ताके अर्थ काय वाणी और मन इन करिके प्रत्येक नमस्कार नम-
स्कार नमस्कार ॥ १२ ॥ और जो सब प्राणियोंके विषे चैतन्यशक्ति कही-
जाती है ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ १३ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके
विषे बुद्धिरूप करिके स्थित है ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ १४ ॥ और
जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे निद्रारूप करिके स्थित है ताके अर्थ
नमस्कार ३ ॥ १५ ॥

यादेवीसर्वभूतेषुक्षुधारूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यै
नमस्तस्यैनमोनमः ॥ १६ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुच्छायारूपेणसं
स्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः ॥ १७ ॥
यादेवीसर्वभूतेषुशक्तिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यै
नमस्तस्यैनमोनमः ॥ १८ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुतृप्णारूपे-
णसंस्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः
॥ १९ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुक्षांतिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै
नमस्तस्यैनमोनमः ॥ २० ॥

टीका—और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे क्षुधारूप करिके स्थित है
ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ १६ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे छाया-
रूप करिके स्थित है ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ १७ ॥ और जो देवी संपूर्ण
प्राणियोंके विषे शक्तिरूप करिके स्थित है ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ १८ ॥
और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे तृप्णारूप करिके स्थित है ताके अर्थ

नमस्कार ३ ॥ १९ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे क्षांतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २० ॥

यादेवीसर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २१ ॥ यादेवीसर्वभूतेषु लज्जारूपेण सं
स्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २२ ॥
यादेवीसर्वभूतेषु शांतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै न-
मस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २३ ॥ यादेवीसर्वभूतेषु श्रद्धारू-
पेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः
॥ २४ ॥ यादेवीसर्वभूतेषु कांतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नम-
स्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २५ ॥

टीका— और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे जातिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २१ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके लज्जारूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २२ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणि-
योंके विषे शांतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २३ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे श्रद्धारूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २४ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे कांतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २५ ॥

यादेवीसर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्त-
स्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २६ ॥ यादेवीसर्वभूतेषु धृतिरूपे-
ण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २७ ॥
यादेवीसर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २८ ॥ यादेवीसर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण सं-
स्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २९ ॥
यादेवीसर्वभूतेषु दुयारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ३० ॥

टीका—और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे लक्ष्मीरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २६ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे धृतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २७ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे वृत्तिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २८ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे स्मृतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २९ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे दयारूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३० ॥

यादेवीसर्वभूतेषुनीतिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ ३१ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुतुष्टिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ ३२ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुपुष्टिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः ॥ ३३ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुमातृरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः ॥ ३४ ॥ यादेवीसर्वभूतेषु भ्रातिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ ३५ ॥

टीका—और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे नीतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३१ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे तुष्टिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३२ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे पुष्टिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३३ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे मातृरूपकरिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३४ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे भ्रातिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३५ ॥

इंद्रियाणामधिष्ठात्रीभूतानांचाखिलेषुया ॥ भूतेषुसततंव्याप्त्येतस्यैदेव्यैनमोनमः ॥ ३६ ॥ चित्तिरूपेणयाकृत्स्नमेतद्ब्रह्माप्यस्थिताजगत् ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै

नमोनमः ॥ ३७ ॥ स्तुतासुरैःपूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथासुरेन्द्रे-
शदिनेषुसेविता ॥ करोतुसानःशुभहेतुरीश्वरीशुभानिभद्रा-
प्यभिहंतुचापदः ॥ ३८ ॥ यासांप्रतंचोद्धतदैत्यतापितैरस्माभि
रीशाचसुरैर्नमस्यते ॥ याचस्मृतातत्क्षणमेवहन्तिनःसर्वापदो
भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ३९ ॥ ऋषिरुवाच ॥ एवंस्तवाभियुक्तानां
देवानांतत्रपार्वती ॥ स्नातुमभ्याययौतोयेजाह्नव्यानृपनंदन ॥ ४० ॥

टीका—और जो देवी संपूर्ण पञ्चमहाभूतोंकी आधार शक्ति है और
संपूर्ण प्राणियोंकेविषे ज्ञानके कारण ऐसी स्थूल सूक्ष्म जे इंद्रिय तिनको प्रेरण
करनेवालो ऐसी व्यामिरूप तिस देवीके अर्थ निरंतर नमस्कार ३॥ ३६ ॥ और
जो देवी चैतन्यशक्तिरूपकरिके संपूर्ण जगत्कूं व्याप्त करिके स्थित है ताके
अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३७ ॥ और जो शुभका कारण ईश्वरी अभीष्टवस्तुके
कारणसे पहिले ब्रह्मा आदिदेवोंकरिके स्तुतिकरिगई और तिसीप्रकार इंद्र
करिके नित्यप्रति सेवितहोतीभई सो भगवती हमारे निर्विघ्नपूर्वक मंगलकरो
और आपत्ति जे है तिनको दूर करो ॥ ३८ ॥ और जो देवी निर्मर्याद
जे शुभनिशुभ असुर तिनकरिके पीडित और भाक्तिकरिके नम्र है मूर्ति जि-
नोंकी ऐसे जे हम तिनकरके स्तुति करीजातीहै और जो देवी स्मरण करीहुई
उसीक्षण हमारी संपूर्ण आपत्तियोंको दूरकरतीहै सो भगवती हमारे निर्विघ्नपूर्व
क मंगल करो और आपत्ति जे है तिनकूं दूर करो ॥ ३९ ॥ तब ऋषि बोले
कि हे राजन् फिर उस हिमाद्रिपर्वतकेविषे इसप्रकार स्तुतिकेविषे युक्त जे
देवता तिनके सन्मुख श्रीगंगाजीके जलमें स्नान करनेको पार्वती भगवती
आतीभई ॥ ४० ॥

साव्रवीत्तान्सुरान्सुभूभवाद्भिःस्तूयतेत्रका ॥ शरीरकोशत
श्चास्याः समुद्धृताव्रवीच्छिवा ॥ ४१ ॥ स्तोत्रंममैतत्क्रियतेशुभ
दैत्यनिराकृतैः ॥ देवैःसमस्तैःसमरेनिशुंभेनपराजितैः ॥ ४२ ॥
शरीरकोशाद्यत्तस्याःपार्वत्यानिःसृताम्बिका ॥ कौशिकीतिस

मस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥ ४३ ॥ तस्यां विनिर्गतायां तु
कृष्णाभूत्सापि पार्वती ॥ कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृ-
ताश्रया ॥ ४४ ॥ ततोऽम्बिकां परं रूपं विभ्राणां सुमनोहरं ॥
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुंभनिशुंभयोः ॥ ४५ ॥

टीका— फिर वह पार्वती देवतासे प्रश्न कर्त्ती भई के हे देवो तुम मेरेसे
अन्य किसकी स्तुति कर्त्ते हो ताके अनन्तर देवताके उत्तर दीनेके पहिलेही
पार्वतीके शरीरकोशसे निकसकर प्रकटहुई शिवा नाम भगवती उत्तर देती भई
॥ ४१ ॥ निशुंभ करिके संग्रामके विषे हार हुवे और शुंभ करिके स्वर्गसे निकासे
हुवे ऐसे जे सब देव तिनकरिके यह मेरी स्तुति करी जाती है ॥ ४२ ॥ जिस
कारणसे तिस पार्वतीका शरीरकोशसे निकसी हुई जो अंबिका तिस कारणसे
सब लोकोके विषे कौशिकी इस नाम करिके कही जाती है ॥ ४३ ॥ फिर
पार्वतीका शरीरकोशसे शिवा निकसके बाद पार्वती कृष्णवर्ण होती भई हि-
माचलके विषे किया है स्थान जाने ऐसी कालिका नाम करिके विख्यात
भई ॥ ४४ ॥ ताके अनन्तर अत्यंत मनोहर रूपको धारण कर्त्ती हुई भगव-
तीको शुंभ और निशुंभ इनके नौकर चंड और मुंड ये देखते भये ॥ ४५ ॥

ताभ्यां शुंभाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा ॥ काप्यास्ते स्त्री
महाराजभासयंती हिमाचलम् ॥ ४६ ॥ नैव तादृक् कचिद्रूपं दृष्टं
केनचिदुत्तमम् ॥ ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वरा ॥ ४७ ॥
स्त्रीरत्नमतिचार्वंगी द्योतयंती दिशस्त्वपा ॥ सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र
तां भवान्द्रष्टुमर्हति ॥ ४८ ॥ यानिरत्नानि मणयोगजाश्वादी-
नि वै प्रभो ॥ त्रैलोक्ये तु समस्तानि सांप्रतंतानि ते गृहे ॥ ४९ ॥
ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् ॥ पारिजाततल्लश्चायं त
थैवोच्चैः श्रवा हयः ॥ ५० ॥

टीका— ताके अनन्तर तिनेने जाकर शुंभसे कहा के हे महाराज हिमाचल
पर्यंतकूं अपनी कांतिकरिके शोभायमान कर्त्ती हुई एक वहां बड़ी मनोहर

ही है ॥ ४६ ॥ ऐमा उत्तम रूप किसीने कहू नहीं देखा याने यह कोई ऐसी भी देवी है यह आप निश्चय जाणों हे असुरेश्वर आप उसको ग्रहण करो ॥ ४७ ॥ और अत्यंत मनोहर अंगवाली और सब स्त्रियोंकेविषे उत्तम और अपनी कांतिकरिके दशो दिशाकों प्रकाशमान कर्त्ती हुई हिमालय पर्वतकेविषे स्थित है सो हे दैत्येन्द्र तुम उसको देखनेकूं योग्य हो ॥ ४८ ॥ और हे प्रभो त्रिलोकीकेविषे संपूर्ण हाथी और घोड़े इनसे आदि लेकर जे रत्नसदृश है और हे प्रभो पद्मरागादिक जे मणी है इस समय ये संपूर्ण वस्तु तुझारा घरकेविषे वर्त्तमान है ॥ ४९ ॥ और हे प्रभो ऐरावत हार्थारूपी रत्न और कल्पवृक्षरूपी रत्न और उच्चैःश्रवा अश्वरूपी रत्न ये आप इंद्रके पासते लाये ॥ ५० ॥

विमानंहंससंयुक्तमेतत्तिष्ठतितेंगणे ॥ रत्नभूतमिहानीतंयदासी-
द्वेधसोद्भुतम् ॥ ५१ ॥ निधिरेषमहापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ॥
किंजल्किर्नाददौचाब्धिर्मालामम्लानपंकजाम् ॥ ५२ ॥ छत्रं
तेवारुणं गेहेकांचनस्रावितिष्ठति ॥ तथायंस्यंदनवरोयः पुरासी
त्प्रजापतेः ॥ ५३ ॥ मृत्योरुत्क्रांतिदानामशक्तिरीशत्वया
हृता ॥ पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥ ५४ ॥
निशुंभस्याब्धिजाताश्च समस्तारत्नजातयः ॥ बह्विश्वापि ददौ
तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥ ५५ ॥

टीका—और हंसों करिके युक्त रत्नरूपी जो ब्रह्माका अद्भुत विमान था सो यहां ल्याया हुआ तुझारा आँगनके विषे स्थित है ॥ ५१ ॥ और कुबेरसे ल्याया ऐसा निधिरूपी रत्न तुझारे घरके विषे वर्त्तमान है और भयसे समुद्र कमलोकी माला देतो भयो ॥ ५२ ॥ और सुवर्णकी वर्षा करनेवाला ऐसा वरुणका छत्र तुझारे घरके विषे स्थित है और तिसी प्रकार जो पहिले दक्ष प्रजाप-
तिके रथ था सो यहां लाया हुआ तुझारे घरके विषे स्थित है ॥ ५३ ॥ और हे ईश अंतकके सकाशते तुमने प्राणोंको खैचनेवाली शक्ति लई और वरु-
णका जो पाश है सो तुझारा भाई निशुंभका हाथके विषे है ॥ ५४ ॥ और

जितने प्रकारके समुद्रसे उत्पन्न होनेवाले रत्न हैं वे संपूर्ण तुल्लारा भाईके घरके विषे हैं और हे शुभ अग्निमें गेरनेसे पवित्र होय ऐसे सुवर्णमयी दो वस्त्र तुल्लारेको अग्निदेव देतो भयो ॥ ५५ ॥

एवंदैत्येन्द्ररत्नानिसमस्तान्याहृतानिते ॥ स्त्रीरत्नमेपाकल्या-
णोत्वयाकस्मान्नगृह्यते ॥ ५६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ निशम्येतिवचः
शुभःसतदाचंडमुंडयोः ॥ प्रेषयामाससुग्रीवंदूतंदेव्यामहासुरः
॥ ५७ ॥ शुभउवाच ॥ इतिचेतिचवक्तव्यासागत्वावचनान्मम ॥
यथाचाभ्येतिसंप्रीत्यातथाकार्यंत्वयालघु ॥ ५८ ॥ सतत्रगत्वा
यत्रास्तेशैलोद्देशेतिशोभने ॥ तांचदेवींततःप्राहशृक्षंमधुर-
यागिरा ॥ ५९ ॥ दूतउवाच ॥ देविदैत्येश्वरःशुभस्त्रैलोक्येप-
रमेश्वरः ॥ दूतोहंप्रेषितस्तेनत्वत्सकाशमिहागतः ॥ ६० ॥

टीका—हे दैत्येन्द्र इस प्रकार तुमने पूर्वोक्त सब रत्न संचय किये फिर शुभ करनेवाली अंबिका स्त्रीरूपी रत्न तुम क्यों ग्रहण नहीं कर्त्ते हो ॥ ५६ ॥ तब ऋषि बोले कि हे सुरथ राजन् इस प्रकार चंड और मुंड इनका वचन सुन करिके शुभ देवी संदेस लानेवाला ऐसा सुग्रीव नामा दूत ताको देवी पास भेजताभया ॥ ५७ ॥ शुभ बोला हे सुग्रीव तू वहां जा करिके मेरे वचनसे साम और भेद इन उपायों करिके इस प्रकार कहना के जिस तरह प्रीति करिके वह शीघ्र हमारे पास आ जाय तिस प्रकार तुल्लारेको कार्य कर्त्तव्य है ॥ ५८ ॥ ताके अनंतर जहां हिमालय पर्वतका श्रेष्ठ प्रदेशके विषे देवी विराजमान तहां जा करिके अत्यंत मधुर वाणी करिके उस देवीको मनोहर वाक्य बोलता भया ॥ ५९ ॥ दूत बोला कि हे देवी त्रिलोकीके विषे शुभ नामा दैत्येश्वर परमेश्वर है ताका भेजाहुवा दूत मैं यहां तुल्लारे पास आया हूँ ॥ ६० ॥

अव्याहताज्ञःसर्वासुयःसदादेवयोनिषु ॥ निर्जिताखिलदैत्यारिः
सयदाहशृणुष्वतत् ॥ ६१ ॥ ममत्रैलोक्यमखिलंममदेवावशा-
नुगाः ॥ यज्ञभागानहंसर्वानुपाश्रामिपृथक्पृथक् ॥ ६२ ॥

त्रैलोक्येवररत्नानिममवश्यान्यशेषतः ॥ तथैवगजरत्नंचहतं
देवेंद्रवाहनं ॥६३॥ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नंममामरैः॥उच्चैः
श्रवससंज्ञंतत्प्रणिपत्यसमर्पितम् ॥ ६४ ॥ यानिचान्यानिदेवे-
षुगंधर्वेपूरगेषुच ॥ रत्नभूतानिभूतानितानिमग्येवशोभने ॥६५॥

टीका—सदा देव दानवोंविषे नहीं रुकै आज्ञा जाकी और जीतलिये
सब देव जाने ऐसा जो शंभासुर ताने जो कहा सो मेरेसे तुम सुनो ॥ ६१ ॥
संपूर्ण त्रिलोकी मेरी है और संपूर्ण देव मेरे वशीभूत नौकर है और पृथक्
पृथक् इंद्रादि देवोंके निमित्त विधान किये आहुति रूपी जे यज्ञभाग हैं तिन
सबको मैंही भोजन कर्त्ता हूँ ॥ ६२ ॥ और जे त्रिलोकीके विषे सुंदर वस्तु
है ते संपूर्ण मेरे वश है और तिसी प्रकार इंद्रका वाहन गजरूपी रत्न हमारे
ल्याया हुवा है ॥ ६३ ॥ और क्षीर समुद्रके मंथनसे उत्पन्न भया ऐसा उच्चैः-
श्रवानामा जो अश्व सो देवताओंनिं प्रणाम करिके मेरे भेट किया ॥ ६४ ॥
और हे शोभने देवोंके विषे और गंधर्वोंके विषे और नागोंके विषे जे अन्य
मनोहर स्त्रीरूपी रत्न हैं ते संपूर्ण मेरेही विषे है ॥ ६५ ॥

स्त्रीरत्नभूतात्वादिविलोकेमन्यामहेवयम् ॥ सात्वमस्मानुपाग-
च्छयतो रत्नभुजोवयम् ॥ ६६ ॥ मां वाममानुजं वापि निशुंभमु-
रुविक्रमम् ॥ भजत्वं चंचलापांगिरत्नभूतासि वैयतः ॥ ६७ ॥
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् ॥ एतद्बुद्ध्या समालोच्य
मत्परिग्रहतां व्रज ॥ ६८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ इत्युक्ता सा तदा देवी
गंभीरांतःस्मितजा गौ ॥ दुर्गा भगवती भद्राय ये दंधार्यते जग-
त् ॥ ६९ ॥ देव्युवाच ॥ सत्यमुक्तं त्वयानात्र मिथ्या किंचित्त्व-
योदितम् ॥ त्रैलोक्याधिपतिः शुंभो निशुंभश्चापि तादृशः ॥ ७० ॥

टीका—हे देवी इसभूलोकके विषे तुमारेको हम उत्तम स्त्रीरूपीरत्न जा-
नतेहै सो तुम हमारेको प्राप्तहो याते हम उत्तम रत्नको भोगनेवाले होवे ॥६६॥
हे चपलकटाक्षोवाली तुम उत्तम रत्नरूपीहैं याते मेरेकी अथवा मेरा छोटा

भाई बड़ापराक्रमी निशुंभकू पतिभावसे अंगीकार करो ॥ ६७ ॥ और मेरा आश्रयसे तुम अत्यंत श्रेष्ठ ऐश्वर्यकी स्वामिनी अर्थात् मालिक होजावोगी हे देवी यह बुद्धिसे विचार करिके मेरे स्त्रीपनाको तुम प्राप्त हो ॥ ६८ ॥ तब क्कपि बोले कि हे सुरधराजन् जब इस प्रकारसे दूतने भगवतीको शुंभका संदेश कहा ताको सुनि हसतीभई भगवती उसदूतको बोलतीभई फिर कैसीहे देवी अगाधहै अभिप्राय जाको फिर कैसी है के दुःखकरिके जानीजाय फिर कैसीहै कल्याणरूपीहै वह कौन भगवती के जा करिके यह जगत् धारण कियाजाताहै सो ॥ ६९ ॥ देवी बोली के हे दूत त्रैलोक्यका राजा शुंभहै और निशुंभभी उसीके समानहै इसमे तुमने सत्य कहा कुछ मिथ्या नहीं कहा ॥ ७० ॥

किंत्वत्रयत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् ॥ श्रूयतामल्पबु-
द्धित्वात्प्रतिज्ञाया कृतापुरा ॥ ७१ ॥ यो मां जयति संग्रामे यो मे द-
पैव्यपोहति ॥ यो मे प्रातः बलोलोके समेभर्ता भविष्यति ॥ ७२ ॥
तदा गच्छतु शुंभो त्रिनिशुंभो वामहासुरः ॥ मां जित्वा किंचिरेणा-
त्र पाणिगृह्णातु मे लघु ॥ ७३ ॥ दूत उवाच ॥ अवलिप्तासि मैवं त्वं
देवि ब्रूहि ममाग्रतः ॥ त्रैलोक्येकः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुंभनिशुंभयोः
॥ ७४ ॥ अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवानवैद्युधि ॥ तिष्ठंति संमुखे
देवि किंपुनः स्त्रीत्वमेकिका ॥ ७५ ॥

टीका—इस शुंभका आश्रयणके विषे मेरा विचारहै परंतु जो मैंने प्रतिज्ञा करी सो मिथ्या कैसे करू जो मैंने पहिले बाल्यावस्थके विषे विगर विचारि करिके प्रतिज्ञा करीहै सो तुम सुनो ॥ ७१ ॥ जो मेरेको संग्रामके विषे जीते और जो मेरा गर्व दूरकरे और जो लोकके विषे मेरेसे बलवान् सो मेरा भर्ताहोगा ॥ ७२ ॥ फिर तिसप्रतिज्ञा कारणसे यहां मेरी प्रतिज्ञा पालनके विषे शुंभ आवों अथवा महासुर निशुंभ आवो फिर देखकरनेकरिके क्या है संग्रामके विषे मेरेको जीतकर शत्रु मेरा पाणिग्रहणकरो ॥ ७३ ॥ तब दूत बोला के हे देवी तुम ऐसे गवं मतकरो और तुम मेरे आगे यह कहो के त्रिलोकीके विषे ऐस

पुरुष कौनहै जो शुंभनिशुंभके आगे युद्ध करनेको खड़ा होवे अर्थात् कोई नहीं ॥ ७४ ॥ और हेदेवी संग्रामके विषे अन्य दैत्योकेभी सन्मुख संपूर्ण देव नहीं खड़ेरहतेहै फिर तु इकछी स्त्री युद्धके विषे दैत्योके सन्मुख कैसी खड़ी रहसकतीहो अर्थात् सर्वथा नहीं ॥ ७५ ॥

इंद्राद्यास्तकलादेवास्तस्थुर्येषांनसंयुगे ॥ शुंभादीनांकथंतेपां
स्त्रीप्रयास्यसिसंमुखम् ॥ ७६ ॥ सात्वंगच्छमयैवोक्तापाईवशुं-
भनिशुंभयोः॥ केशाकर्पणनिर्धूतगौरवामागमिष्यासि ॥ ७७ ॥
देव्युवाच ॥ एवमेतद्वलीशुंभोनिशुंभश्चातिवीर्यवान् ॥ किं-
रोमिप्रतिज्ञामेयदनालोचितापुरा ॥ ७८ ॥ सत्वंगच्छमयो-
क्तंतेयदेतत्सर्वमादृतः ॥ तदाचक्ष्वासुरेन्द्रायसचयुक्तंकरोतुतत्
॥ ७९ ॥ मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकेमन्वंतरेदेवीमाहात्म्ये दे-
व्यादूतसंवादोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

टीका—और संग्रामके विषे जिनके अगाड़ी युद्धकरनेको इंद्रादिक देव नहीं खड़े रहतेहैंये तिनशुंभनिशुंभके सन्मुख युद्धकरनेको तू स्त्री कैसी जायगी ॥ ७६ ॥ सो तुम मेरा कहनासे शुंभनिशुंभके पास चलो क्योंकि केशोके खैचने करिके दूर होगया बड़पन जाका ऐसी तुम शुंभनिशुंभके पास मत आवो इस दया करिके मैं तुमको कहताहूँ ॥ ७७ ॥ तब देवी बोली हे दूत शुंभ बड़ापराक्रमीहै और निशुंभ बड़ा पराक्रमीहै यह तुमने कहा सो अैसेही है परंतु क्या करूँ मेरी यह प्रतिज्ञा है मैंने पहिले विचार नहींकिया ॥ ७८ ॥ हे दूत सो तुम जावो और मैंने संपूर्ण तुमारेको यह कहा सो जाकर आदरयुक्त हुवा शुंभासुरके अर्थ कहो ताके अनंतर वह शुंभासुर उचितहो सो करो ॥ ७९ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये देव्यादूतसंवादोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

ऋषिरुवाच ॥ इत्याकर्ण्यवचोदेव्याःसदूतोमर्षपूरितः ॥ समा-
चष्टसमागम्यदैत्यराजायविस्तरात् ॥ १ ॥ तस्यदूतस्यत-

द्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः ॥ सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्र-
लोचनं ॥ २ ॥ हे धूम्रलोचना शुत्वं स्वसैन्यपरिवारितः ॥
तामानय बलादुष्टां केशाकर्षणविह्वलां ॥ ३ ॥ तत्परित्राण
दः कश्चिद्यदिवोत्तिष्ठते परः ॥ सहंतव्यो मरो वापियक्षो गंधर्व-
ववा ॥ ४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ तेनाज्ञस्ततः शीघ्रं सदैवो धूम्रलो-
चनः ॥ वृतः पृथ्वा सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥ ५ ॥

टीका—ताके अनंतर ऋषि बोले हे सुरथराजन् इस प्रकार देवीका वचन
श्रवण करिके वह दूत क्रोध करिके भराहुवा देवीका पर्वतके सकाशते आक-
रिके विस्तारते शुभासुरके अर्थ कहता भया ॥ १ ॥ तिस दूतका मुखसे देवी
का वाक्य श्रवण करिके ताके अनंतर क्रोध युक्तहुवा असुरोका राजा शुं-
भासुर दैत्योका मालिक ऐसा जो धूम्रलोचन ताहि कहता भया ॥ २ ॥ हे धूम्र
लोचन तुम अपनी सेना करिके युक्तहुवा केशोंके खैचने करिके व्याकुल ऐ-
सी जो दुष्टिनी देवी है ताहि बलात्कारसें शीघ्र ल्यावो मेरेकूं प्राप्त करो ॥ ३ ॥
और ताहि ग्रहण करनेको इच्छा करे ऐसा ताकी रक्षा करनेवालो जो कोई
और शत्रुता करिके खड़ा होवे सो मारनेके योग्य है चाहिये देव होवे चाहिये
यक्ष होवे अथवा गंधर्व होवे ॥ ४ ॥ तब ऋषि बोले हे राजन् ताके अनंतर
शुभकरिके आज्ञा दियाहुवा ऐसा वह धूम्रलोचन दैत्य साठि हजार असुरोका
समूह करिके युक्तहुवा शीघ्र जाता भया ॥ ५ ॥

सदृष्ट्वा तां ततो दिवीं तुहिना च लसंस्थिताम् ॥ जगादोच्चैः प्रयाहीति
मूलं शुभनिशुंभयोः ॥ ६ ॥ नचेत्प्रीत्याद्यभवती मद्भर्तारमु-
पैष्यति ॥ ततो बलान्नयाम्येप केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ७ ॥
दैव्युवाच ॥ दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् च लसंवृतः ॥ बलान्नयसि
मामेवं ततः किं ते करोम्यहं ॥ ८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ इत्युक्तः सोभ्यधा-
वत्तामसुरो धूम्रलोचनः ॥ हुंकारेणैव तं भस्मसाचकारां विकाततः

॥ ९ ॥ अथक्रुद्धंमहासैन्यमसुराणांतथाम्बिका ॥ ववर्षसाय
कैस्तोक्षैस्तथाशक्तिपरश्वधैः ॥ १० ॥

टीका—फिर वह धूम्रलोचन हिमाचलके विषे स्थित ऐसी जो देवी ताहि दे-
सकर हे देवि तुम शुभनिशुभके पास चलो इस प्रकारसे ऊचेस्वरकरिके
बोलताभया ॥ ६ ॥ और जो तुम आज अपनी रुची करिके हमारा स्वामी
शुभ जो है ताहि नहीं प्राप्त होगी तो तिसकारणते यह धूम्रलोचननामा जो मैं
असुर हू सो अबही केशोंके खैचनेकरिके वेवश ऐसी जो तुम हो ताहि बला-
त्कार करिके हमारा स्वाधी शुभ जो है तिन्हे प्राप्तकरूगा ॥ ७ ॥ तब देवी बोली
के हे धूम्रलोचन तु बलवान्हे और सेनाकरिके युक्त है और शुभासुरका
भेजाहुवाहै सो तु इस प्रकार पूर्वोक्त केश खैचनेकरिके वेवश ऐसी मैं जो
हू ताहि बलात्कारसे प्राप्तकरे तो ताके अनंतर मैं तेरा क्या कहू अर्थात्
कुछनहीं ॥ ८ ॥ तब ऋषि बोले के देवी करिके ऐसै कहाहुवा धूम्रलोचनअसुर
वेग करिके देवी जो है ताहि सन्मुख दौडताभया ताके अनंतर वह अंबिका
हुंकार करिकेही ताहि भस्म कर्त्तीभिई ॥ ९ ॥ फिर धूम्रलोचन भस्म होनेके
बाद क्रोधयुक्तहुई ऐसी जो असुरोकी सेना है ताहि तीखे बाणों करिके और
शाग्य सहित कुठारोके संपात करिके अंबिका आच्छादन कर्त्तीभिई ॥ १० ॥

ततोद्युतसटःकोपात्कृत्वानादंसुभैरवं ॥ पपातासुरसेनायांसि-
होदेव्यास्तुवाहनः ॥ ११ ॥ कांश्चित्करप्रहारेणदैत्यानास्ये
नचापरान् ॥ आक्रम्यचरणेनान्यान्निजघानमहासुरान् ॥ १२ ॥
केषांचित्पाटयामास नखैःकोष्ठानिकेसरी ॥ तथातलप्रहारेण
शिंरांसिकृतवान्पृथक् ॥ १३ ॥ विच्छिन्नबाहुशिरसःकृतास्ते-
नतथापरे ॥ पपौचरुधिरंकोष्ठादन्येषांधुतकेसरः ॥ १४ ॥
क्षणेनतद्ग्लंसर्वक्षयंतीतमहात्मना ॥ तेनकेसरिणादेव्यावाहने
नातेकोपिना ॥ १५ ॥

टीका—ताके अनंतर क्रोधसे कंपाये हैं कोंधेके केश जाने ऐसादेवीका

वाहन सिंह भयंकर गर्जना करिके असुरोंकी सेनाके विषे उछल कर पड़ता भया ॥ ११ ॥ फिर कितनेही जे दैत्य है तिन्है करके प्रहार करिके मारता भया और कितनेही जे है तिन्है मुखके प्रहार करिके मारता भया और कितनेही जे अन्य है तिन्है चरणके प्रहार करिके मारता भया ॥ १२ ॥ और कितनेही दैत्योंका नखों करिके पेट फाड़ता भया और तिसी प्रकार कितनेही दैत्योंका शिर जे है तिन्है चनपटके प्रहार करिके धड़से अलग कर्त्ता भया ॥ १३ ॥ फिर वा सिंहने और कितनेही हाथ शिर कटेहुवे करिदिये फिर कंपाय है कांधाके केश जाने ऐसा सिंह अन्य कितनेही दैत्योंका पेट फाड़ कर उनका पेटसे रुधिर पीतोभयो ॥ १४ ॥ अत्यंत क्रोधवाला ऐसा देवी-वाहन जो सिंह है तानै संपूर्ण धूम्रलोचनकी सेना जो है ताहि क्षणभरकरिके नाशको प्राप्त कर दई ॥ १५ ॥

श्रुत्वा तमसुरं देव्यानिहतं धूम्रलोचनं ॥ बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीके
सरिणा ततः ॥ १६ ॥ चुकोप दैत्याधिपतिः शुंभः प्रस्फुरिता-
ताधरः ॥ आज्ञापयामास च तौ चंडमुंडौ महासुरौ ॥ १७ ॥ हे चं-
डहे मुंडव लैर्वहुभिः परिवारितौ ॥ गच्छतं तत्र गत्वा च सासमानि-
यतां लघु ॥ १८ ॥ केशेष्वकृष्य वद्धा वा यदि वः संशयो
युधि ॥ तदा शेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यतां ॥ १९ ॥ तस्यां
हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते ॥ शीघ्रमागम्यतां वद्धा गृही-
त्वा तामथा विक्राम ॥ २० ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके
मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये धूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

टीका—ताके अनंतर देवीने भस्म किया ऐसा धूम्रलोचन जो असुर है ताहि सुन करिके और देवीके सिंहने संपूर्ण धूम्रलोचनका सैन्य नष्ट किया ताहि सुन करिके ॥ १६ ॥ क्रोधसे कंपाये है होठ जाने ऐसा दैत्येश्वर शुंभ कर्त्ता भया और चंड और मुंड ये जे महाअसुर है तिन्है आज्ञा देते

भयो ॥ १७ ॥ हे चंड हे मुंड तुम बहुतमी सेना करिके सहित जहां वह देवी विराजमान है तहां जावो वहां जाकर उस देवीको शीघ्र ल्यावो ॥ १८ ॥ हे चंड मुंड सेनावो तुम केश खैचकर अथवा रस्सीसे बांधकर वा देवीको भेरे समीप ल्यावो जो युद्ध प्रवृत्त हो जाय तिसके विप्रे लोनेमें संदेह होय तो संपूर्ण शस्त्रोंके प्रहार करिके ता देवीको सब जने मारो ॥ १९ ॥ ताकूं मारेके बाद और सिंहको मारकर पृथ्वीमें गिरायेके बाद तुम शीघ्र आवो और जीवती लपनेकी सामर्थ्य होय तो वा अंबिकाको रस्सीसे बांध और ग्रहणकर शीघ्र आवो ॥ २० ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये धूम्रलोचनवधोनाम पष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

ऋषिरुवाच ॥ आज्ञप्तास्तेततोदैत्याश्चंडमुंडपुरोगमाः ॥
चतुरंगवल्लोपेताययुरभ्युद्यतायुधाः ॥ १ ॥ ददृशुस्तेततो
देवीमीपद्धासांव्यवस्थिताम् ॥ सिंहस्थोपरिशैलेंद्रशृंगेमहति
कांचने ॥ २ ॥ तेदृष्ट्वातांसमादातुमुद्यमंचक्रुरुद्यताः ॥ आकू-
प्टचापासिधरास्तथान्येतत्समीपगाः ॥ ३ ॥ ततः कोपंच
कारोच्चैरंविकातानरीन्प्राति ॥ कोपेनचास्यावदनंमपीवर्ण
मभूत्तदा ॥ ४ ॥ भ्रुकुटीकुटिलात्तस्याललाटफलकाद्द्रुतं ॥
कालीकरालवदनाविनिष्क्रांतासिपाशिनी ॥ ५ ॥

टीका—ताके अनंतर शुभ करिके आज्ञा दियेहुए और उठाये है शस्त्र जिनोने ओर चतुरंगिणी सेनाकरिके युक्त और चंड मुंड हैं अगाडी चलने वाले जिनोके ऐसे जे दैत्य ते भगवतीके पास जाते भये ॥ १ ॥ ताके अनंतर हिमालयकी सुवर्णमय शिखरकेविषे स्थित जो सिंह ताके ऊपर बैठी हुई और मंद है हास्य जाको ऐसी जो देवी नाहि ते दैत्य देखते भये ॥ २ ॥ फिर वे देव करिके ताके अनंतर उद्युक्त हुवे ताहि ग्रहण करनेको उद्यम कर्तेभये कैसे हे वे दैत्य खैचा है धनुष जिनोने ऐसे और खड्ग धारण करनेवाले ऐसे और तिसी प्रकार अन्य कितनेही भगवतीके पास जाते भये ॥ ३ ॥ ताके

अनंतर अंबिका तिन शत्रूनके प्रति अत्यंत कोप करीं भई तब कोपकरिके याको मुख स्याहीकी समान श्याम होतो भयो ॥ ४ ॥ ता समय अंबिकाको भृकुटीके चढानेते वाकों ऐसी जो ललाटरूपी पटल ताके सकाशते भयंकर है मुख जाको और खड्ग पाश ए है हाथोंकेविषे जाके ऐसी काली नाम कोई अन्य शक्ति निकसती भई अर्थात् प्रकट होती भई ॥ ५ ॥

विचित्रखट्वांगधरानरमालाविभूषणा ॥ द्वीपिचर्मपरीधानाशु-
ष्कमांसातिभैरवा ॥ ६ ॥ अतिविस्तारवदनाजिह्वाललनभी-
षणा ॥ निमग्नारक्तनयनानादापूरितादिङ्मुखा ॥ ७ ॥
सावेगेनाभिपतिताघातयन्तीमहासुरान् ॥ सैन्ये तत्रसुरारी
णामभक्षयततद्रुलम् ॥ ८ ॥ पार्ष्णिग्राहांकुशग्राहयोधघंटासम
न्वितान् ॥ समादायैकहस्तेनमुखेचिक्षेपवारणान् ॥ ९ ॥ तथैवयो-
धंतुरगैरथंसारथिनासह ॥ निक्षिप्यवक्रेदशनैश्चर्वयंत्यतिभैरवं १० ॥

टीका—कैसी है वह काली अनेक तरहके हैं चित्राम जाके ऐसा खट्वा-
गको धारण करे ऐसी फिर कैसी है प्रेतोंके मुंडोंकी माला है आभूषण जाके
ऐसी फिर कैसी है व्याघ्रके चर्मका है वस्त्र जाके ऐसी फिर कैसी है हाडचर्म
मात्र है शरीर जाका ऐसी यातेही अति भयंकर ऐसी ॥ ६ ॥ फिर कैसी है
अत्यंत है विस्तार जाको ऐसी है मुख जाको फिर कैसी है जिह्वाके आस्वा-
दन करनेकी जो इच्छा ताकरिके भयंकर है फिर कैसी है गड़े हुये हैं लाल
नेत्र जाके फिर कैसी है सिंहनादकरिके पूर्ण किये हैं दशों दिशाओंके मध्य
जाने ॥ ७ ॥ फिर वह काली तिस असुरोंकी सेनाकेविषे वेग करिके पड़ती
हुई महा असुर जे हैं तिन्हें मारतीहुई असुरोंकी सेना जो है ताहि भक्षण
करीं भई ॥ ८ ॥ और जे भाला लेकरिके हाथियोंके पीछे चलनेवाले ऐसे
जे हाथियोंके शिक्षक हैं और जे हाथियोंको चलानेवाले महावत हैं और
जे हाथियोंके सवार योद्धा हैं और जे हाथियोंके गलेमें बंधी हुई घंटा हैं
तिन सब करिके सहित जे हाथी हैं तिन्हें एक हाथ करिके ग्रहण करि काली

मुखकेविषे गेरती भई अर्थात् खाती भई ॥ ९ ॥ और तिस प्रकारही घोडो करिके सहित जे योद्धा तिन्हें और सारथियोंकरिके सहित जे रथ हैं तिन्हें मुखकेविषे गेर करि दातोंकरिके मृत्यु जो है ताहि चर्बण करवाती भई ॥ १० ॥

एकंजग्राहकेशोपुग्रीवायामथचापरम् ॥ पादेनाक्रम्यचैवान्यमु-
रसान्यमपोथयत् ॥ ११ ॥ तैर्मुक्तानिचशस्त्राणिमहास्त्राणित-
थासुरैः ॥ मुखेनजग्राहरूपादशनैर्मथितान्यपि ॥ १२ ॥ व-
लिनांतद्वलंसर्वमसुराणांदुरात्मनां ॥ ममर्दाभक्षयञ्चान्यान-
न्यांश्चाताडयत्तथा ॥ १३ ॥ असिनानिहताःकेचित्केचित्खट्वां
गताडिताः ॥ जग्मुर्विनाशमसुरादंताग्राभिहतारणे ॥ १४ ॥
क्षणेनतन्महासैन्यमसुराणानिपातितं ॥ दृष्ट्वाचंडोभिदुद्रावतां
कालीमतिभीषणां ॥ १५ ॥

टीका—ताके अनंतर केशोकेविषे एक दानव जो है ताहि पकडती भई
याके अनंतर गलकेविषे अन्य दानव जो है ताहि पकडतीभई और पैर क-
रिके पकड एक दानव जो है ताहि मारतीभई और पैर पकडिके एक दानव
जोहै ताहि मारतीभई ॥ ११ ॥ ता समय चंड मुंडसे आदि लेकर जे दानव है
तिन्होंने और तिसीप्रकार अन्य असुरोंने कालीके सन्मुख बाहें ऐसे खड्ग
आदि लेकर जे शस्त्र और आग्नेयसे आदि लेकर जे बड़े अस्त्र तिन्हे कोथसे
मुख करिके काली ग्रहण कर्त्तीभई और ग्रहण करिके दातोंसे चूर्जितभी क-
र्त्तीभई ॥ १२ ॥ फिर दुष्टहै अंतःकरण जिनोका और बलवान् ऐसे जे चं-
डमुंडसे आदि लेकर असुर तिनकी संपूर्ण सेना जो है ताहि काली नष्ट कर्त्ती
भई ता सेनाकेविषे कितने जे है तिन्हें भक्षण कर्त्तीभई और कितनेही जेहैं
तिन्हें मारतीभई ॥ १३ ॥ फिर उस रणमें कितनेही असुर कालीने खड्गके
पहारकरिके मारे हुये नाशको प्राप्त होतेभये और कितनेही खाटके पाये
करिके ताडन कियेहुये विनाशको प्राप्त होतभये और तिसी प्रकार दंतके
अग्रभाग करिके ताडन कियेहुये विनाशको प्राप्त होतेभये ॥ १४ ॥ फिर

क्षणभर करिकै कालीने पृथ्वीमें गिराई ऐसी जो वह असुरोंकी महासेना है ताहि देखकर अतिभयंकर जो काली है ताहि युद्ध करनेको चंड सन्मुख दौड़तो भयो ॥ १५ ॥

शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षींतामहासुरः ॥ छादयामासचक्रैश्चमु-
 ङःक्षितैःसहस्रशः ॥ १६ ॥ तानिचक्राण्यनेकानिविशमाना-
 नितन्मुखं ॥ बभुर्यथार्कविंशानिसुबहूनिघनोदरम् ॥ १७ ॥
 ततो जहासातिरूपाभीमैर्भरवनादिनी ॥ कालीकरालवक्त्रा-
 तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥ १८ ॥ उत्थायचमहासिंहदेवीचंडम-
 धावत् ॥ गृहीत्वाचास्यकेशेषुशिरस्तेनासिनाच्छिनत् ॥
 ॥ १९ ॥ छिन्नेशिरसिदैत्येन्द्रश्चेकनादंसुभैरवं ॥ तेननादेनम-
 हतात्रासितंभुवनत्रयं ॥ २० ॥

टीका—ताके अनंतर भयंकरहैं नेत्र जाके ऐसी जो कालीहै ताहि बा-
 णोंकी वर्षा करिकै और मस्तक कोटेहैं जिनो करिकै ऐसे जे हजार हजार
 चक्रहैं तिना करिके चंड आच्छादित कर्त्तोभयो ॥ १६ ॥ फिर चंड करिके
 चलायेगये जे अनेकचक्र ते कालीका मुख जोहै ताहि प्रवेश हुये शोभायमा-
 न होतेभये कैसे कि जैसे उस्तातकेविषे बहुत सूर्यके विष मेघका उदर जो
 है ताहि प्रवेश होतेहुवे शोभायमान होतेहैं ॥ १७ ॥ फिर रणके उत्सवते
 काली अत्यंत क्रोध करिके भयंकर जैसे होय तैसे हँसती भई काली कैसी
 है भयंकर शब्द करे ऐसी फिर कैसीहै भयंकर जो मुख ताकेविषे दुःख क-
 रिके देखीजाय ऐसी जो ढाढ तिन करिकै उज्ज्वल अर्थात् श्वेतवत्प्रतीयमा-
 न ऐसी ॥ १८ ॥ ताके अनंतर काली महाखड्ग उठायकर रोप करिके चंडके
 सन्मुख दौड़ती भई फिर चंडके केश सँच करि तिस महाखड्गसे शिर काट-
 तीभई ॥ १९ ॥ फिर देवी करिके शिर कटेसंते तासमयही दैत्येन्द्र चंड
 महाभयंकर शब्द कर्त्तोभयो तिस वडे भयंकर शब्द करिके तीनों लोक
 घासको प्राप्तकिये ॥ २० ॥

अथमुंडोभ्यधावत्तांदृष्ट्वाचंडनिपातितं ॥ तमप्यपातयद्भूमौ
खट्वांगाभिहतंरूपा ॥ २१ ॥ हतशेषंततः सैन्यंदृष्ट्वाचंडं
निपातितं ॥ मुंडंचसुमहावीर्यदिशोभेजेभयातुरम् ॥ २२ ॥
शिरश्चंडस्यकालीसागृहीत्वामुण्डमेवच ॥ प्राहप्रचंडादृहासमि
श्रमभ्येत्यचंडिकां ॥ २३ ॥ मयातवात्रोपहृतौचण्डमुंडौ
महापशू ॥ युद्धयज्ञेस्वयंशुभंनिशुभंचहनिष्यसि ॥ २४ ॥
ऋषिरुवाच ॥ तावानीतौततोदृष्ट्वाचंडमुंडौमहासुरौ ॥ उवाच
कालीकल्याणी ललितंचंडिकावचः ॥ २५ ॥

टीका—योंके अनंतर कालीने संग्रामकेविषे गिराया ऐसा जो चण्डहै
ताहि देखकरिके मुंड कालीके सन्मुख दौडतो भयो फिर खट्वांग प्रहार करिके
ताडित ऐसा जो मुंडहै ताहिभी रोष करिके पृथ्वीमें गिरातीभई ॥ २१ ॥
फिर मरेहुवे दानवोंसे बाकी रही ऐसी जो दानवोंकी सेनाहै सो देवीने संग्रामके
विषे गिराया ऐसा जो चंडहै ताहि और बडापराक्रमी मुंड जोहै ताहि देखकर
भयकरिके बिह्वलहुई रणभूमिके सकाशते निकस करिके दौडजातीभई
॥ २२ ॥ ताके अनंतर काली चंडका शिर जोहै ताहि और मुंडका शिर
जोहै ताहि ग्रहण करिके और चंडिका जोहै ताहि प्राप्त होकर प्रगल्भ जो
आधिक हास ताकरिके मिलाहुवा जैसे तैसे बोलतीभई ॥ २३ ॥ हे चंडिके
इस युद्धरूपी यज्ञकेविषे चंड और मुंड ये महापशू मैंने तुझारे भेदकियेहैं
और देवगणकी प्रीतिके अर्थ शुभ और निशुभ जो दो पशूहैं तिन्हे तुमही
मारोगी ॥ २४ ॥ तब ऋषि बोले ताके अनंतर कालीकरिके लायेहुये जे
चंड मुंड महाअसुर हैं तिन्हे चंडिका देखकर काली जोहै ताहि मनोहर वचन
बोलती भई ॥ २५ ॥

देव्युवाच ॥ यस्माच्चंडंचमुंडंचगृहीत्वात्वमुपागता ॥ चामुं-
डेतिततो लोकेख्यातादेवीभविष्यसि ॥ २६ ॥ इति मार्कण्डे-
यपुराणेशावर्णिकेप्रबन्तरे देवीमाहात्म्येचण्डमुण्डवधोनाम
सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

टीका—देवी बोली हे काली जिसकारणते चंड और मुंड जोहैं ताहि ग्रहण करिकै तुम मैं जोहूं ताहि प्राप्तहुई हो तिसकारणते लोककेविषे तुम चामुंडा इस नाम करिकै विख्यात देवी होगी ॥ २६ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकेमन्त्रंतरे देवीमाहात्म्ये चंडमुंडवधोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

ऋषिरुवाच॥ चंडे च निहतैर्दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ॥ बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥ १ ॥ ततः कोपपराधीनचेताः शुभः प्रतापवान् ॥ उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेशह ॥ २ ॥ अद्य सर्ववलैर्दैत्याः पडशीतिरुदायुधाः ॥ कंबूनां च तुराशीतिर्निर्यान्तुस्त्ववलैर्वृताः ॥ ३ ॥ कोटिवीर्याणि पंचाशदसुराणां कुलानिवै ॥ शतंकुलानि धूम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ ४ ॥ कालकादौर्हदामौर्याः कालिकेयास्तथासुराः ॥ युद्धाय सज्जा निर्यातु आज्ञया त्वरिता मम ॥ ५ ॥

टीका—तब ऋषि बोले कालीकरिकै चंड मारे गये संते और तिसी प्रकार मुंड मार पृथ्वीमें गिराये संते और ताकरिकेही असंख्यात सेना नष्टहुये संते ताके अनंतर कोप करिके परवशहैं चित्त जाको और प्रतापी ऐसी असुरोंको ईश्वर जो शुभासुर सो दैत्योंकी संपूर्ण सेना जेहैं तिनको चंडिकाके पास जाने रूपी उद्योग आज्ञा करतो भयो ॥ १ ॥ २ ॥ आज मेरी आज्ञा करिकै छयासी जे तुम प्रधान दैत्य हो ते उठायेहैं शस्त्र जिन्होंने ऐसे संपूर्ण अपनी चतुरंगिनी सेना जे हैं तिन करिकै युक्त हुवे देवीके साथ युद्ध करनेको जावो और कंबुनाम जे दैत्यहैं तिनके चौराशी समूह भेद जे हैं ते अपनी सेना करिकै युक्तहुवे देवीके साथ युद्ध करनेको जावो ॥ ३ ॥ और कोटि वीर्य नाम जे असुरोंके पंचाशकुल ते और धूम्र नाम असुर जे तिनके जे सौकुल ते मेरी आज्ञा करिकै देवीके साथ युद्ध करनेको जावें ॥ ४ ॥ और कालक नामा जे असुर और दौर्हद नामा जे असुर और मौर्य नामा जे असुर और तिसी प्रकार कालकेय नामा जे असुर ते संपूर्ण मेरी आज्ञा करिके शीघ्र तैयार होतेहुये देवीके साथ युद्ध करनेको जावो ॥ ५ ॥

इत्याज्ञाप्यासुरपतिःशुम्भोभैरवशासनः ॥ निर्जगाममहासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥ ६ ॥ आयातंचण्डिकादृष्टातत्सैन्यमतिभीषणम् ॥ ज्यास्वनैःपूरयामासधरणीगगनांतरम् ॥ ७ ॥ सचसिंहोमहानादमतीवकृतवानृष ॥ घण्टास्वनेनतन्नादमविकाचाप्यहंयत् ॥ ८ ॥ धनुर्ज्यासिंहघण्टानानादापूरितदिङ्मुखा ॥ निनादैर्भीषणैःकालीजिग्येविस्तारितानना ॥ ९ ॥ तंनिनादमुपश्रुत्यदैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् ॥ देवीसिंहस्तथाकालीशरौघैःपरिवारिताः ॥ १० ॥

टीका—फिर भयंकर है शिक्षा जाकी ऐसा असुरपति शुंभ इस प्रकार असुर जे हैं तिन्हें आज्ञा देकर बड़ी है सेना हजारों जिनकेविषे ऐसे बहुत दानवनकरिके युक्तहुवा देवीके साथ युद्ध करनेको जाता भया ॥ ६ ॥ ताके अनंतर चंडिका आताहुवा जो शुंभ है ताहि और बाकी जो भयंकर सेना है ताहि देखकर धनुषको प्रत्यंचाके टंकार शब्दन करिके आकाश पृथ्वीका मध्य जो है ताहि पूर्ण करताभई ॥ ७ ॥ ताके अनंतर हे नृप वह भगवतीका सिंहभी बड़ा शब्द कर्त्ता भया फिर अविका घंटाके शब्दकरिके सिंहके शब्दको बढाती भई ॥ ८ ॥ फिर धनुषकी प्रत्यंचाके और सिंह और घंटा इन शब्दोंकरिके पूर्ण किये हैं दिशावोंके मुख जानें और फाडा है मुख जाने ऐसी देवी तिन दैत्यनको जीतती भई ॥ ९ ॥ ताके अनंतर धनुषकी प्रत्यंचा सिंह घंटा इनका चारों दिशामें व्याप्त ऐसा शब्द सुनके दैत्यसेनानें देवी और सिंह और तिसी प्रकार काली ये सब बाणोंके समूह करिके रोक दिये ॥ १० ॥

एतस्मिन्नंतरेभूपाविनाशायसुरद्विषाम् ॥ भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥ ११ ॥ ब्रह्मेशगुहविष्णूनांतथेद्रस्य च शक्तयः ॥ शरीरेभ्योविनिष्क्रम्यतद्रूपैश्चण्डिकाययुः ॥ १२ ॥ यस्यदेवस्ययद्रूपंयथाभूषणवाहनम् ॥ तद्रदेवहितच्छक्ति-

रसुरान्योद्धुमाययौ ॥ १३ ॥ हंसयुक्तविमानस्थासाक्षसूत्र-
कमण्डलुः ॥ आयाताब्रह्मणःशक्तिब्रह्माणीसाभिधीयते ॥ १४ ॥
माहेश्वरीवृषारूढात्रिशूलवरधारिणी ॥ महाहिवलयाप्राप्ताच-
न्द्रलेखाविभूषणा ॥ १५ ॥

टीका—और इस देवी दानवोंके संग्रामके होतेसंते मध्यमें दानवोंके विना-
शके अर्थ और देवोंकी वृद्धिके अर्थ ब्रह्मा शिव स्वामी कार्तिक विष्णु तथा
इंद्र इन सबकी सामर्थ्यरूपी जे शक्ति हैं ते इनके शरीरोंते निकसकर अपने
अपने देवोंके समान रूपों करिके चण्डिकाके समीप आतीं भई ॥ ११ ॥ १२ ॥
फिर जिस देवका जैसा रूप और जैसा भूषण और जैसा वाहन तिसी प्रकार
तिस देवकी असुरोंते रणमें युद्ध करनेको देवीके पास आती भई ॥ १३ ॥ हंस-
युक्त विमानमें बैठी हुई और स्फटिक मणियोंका माला पहरे हुये और कम-
ण्डलु लिये हुये ब्रह्माकी शक्ति युद्ध करनेको आती भई सो ब्रह्माणी इस नाम
करिके कही जाती है ॥ १४ ॥ और माहेश्वरी शक्ति वृषभके ऊपर बैठीहुई
और त्रिशूलको धारण किये हुये और बड़े सर्पोंका है कडा जांके अर्द्धचंद्र
है मस्तकमें आभूषण जाके ऐसी असुरोंके साथ युद्ध करनेको भगवतीके
पास आती भई ॥ १५ ॥

कौमारीशक्तिहस्ताच मयूरवरवाहना ॥ योद्धुमभ्याययौदैत्या-
नंविकागुहरूपिणी ॥ १६ ॥ तथैवैष्णवीशक्तिर्गुरुडोपरि-
संस्थिता ॥ शंखचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥ १७ ॥
यज्ञेवाराहमतुलंरूपंयाविभ्रतीहरेः ॥ शक्तिःसाप्याययौतत्रवा-
राहीविभ्रतीतनुम् ॥ १८ ॥ नारसिंहीनृसिंहस्यविभ्रतीसदृशंवपुः ।
प्राप्तातत्रसटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥ १९ ॥ वज्रहस्तातथैवैद्री
गजराजोपारिस्थिता ॥ प्राप्तासहस्रनयनायथाशक्रस्तथैवसा ॥ २० ॥
टीका—फिर शाम्य है हाथमें जाके और श्रेष्ठ मयूर है वाहन जाके और
स्वामीकार्तिकके समानहै रूप जाके ऐसी कौमारी अंबिका दैत्योंके साथ युद्ध

करनेको आतीभिई ॥ १६ ॥ और तिसीप्रकार वैष्णवीशक्ति गरुडके ऊपर बै-
 ंहुई और शंख चक्र गदा शार्ङ्ग धनुष खड्ग ये शस्त्रहै हाथमें जाके ऐसी
 विष्णुकी समान वैष्णवीशक्ति उस रणमें असुरोंके साथ युद्ध करनेको
 आतीभिई ॥ १७ ॥ फिर ताके अनंतर उपमा करिकै रहित विष्णुका बरा-
 हरूप जो है ताहि धारण कर्त्तीहुई जो प्रकट होतीभिई सो शक्तिभी बराहका
 शरीर धारण कर्त्तीहुई रणमें आतीभिई ॥ १८ ॥ ताके अनंतर काँधके केशरो-
 का जहां तहां ताडन करिकै दूर करेहैं नक्षत्रोंके समूह जाने ऐसी नृसिंहके
 समान शरीर धारण कर्त्तीहुई नारसिंही शक्ति असुरोंते रणमें युद्ध करनेको
 आतीभिई ॥ १९ ॥ फिर तिसीप्रकार वज्रहै हाथमें जाके और ऐरावत हा-
 थीके ऊपर बैठीहुई और हजारहैं नेत्र जाके ऐसी ऐंद्री शक्ति रणमें प्राप्त
 होतीभिई जैसा इंद्र तैसीही वह ॥ २० ॥

ततःपरिवृतस्ताभिरीशानोदेवशक्तिभिः ॥ हन्यन्तामसुराः
 शीघ्रममप्रीत्याहचंडिकाम् ॥ २१ ॥ ततोदेवीशरीरात्तुविनिष्कां
 तातिभीषणा ॥ चंडिकाशक्तिरत्युग्राशिवाशतनिनादिनी ॥ २२
 साचाहधुम्रजटिलमीशानमपराजिता ॥ दूतत्वंगच्छभगव-
 न्पाश्वर्शुभनिशुभयोः ॥ २३ ॥ ब्रह्मिशुभंनिशुभंचदानवावाति
 गर्वितौ ॥ येचान्येदानवास्तत्रयुद्धायसमुपस्थिताः ॥ २४ ॥
 त्रैलोक्यमिंद्रोलभतादेवाःसंतुहविर्भुजः ॥ यूयंप्रयातपातालं
 यदिजीवितुमिच्छथ ॥ २५ ॥

टीका—ताके अनंतर तिन देव शक्तियों करिकै युक्त महेश मेरी प्रीति
 करिकै तुम असुरोंको जलदी मारो इस प्रकार चंडिकाको कहताभया
 ॥ २१ ॥ फिर ताके अनंतर चंडिका देवीके शरीरतेभी अत्यंत भयंकर
 और अत्यंत उग्र स्वभाववाली और शोकहों गीदडियोंकरिकै सहित
 शब्द कर्त्तीहुई फिर चंडिकाशक्ति निकसतीभिई ॥ २२ ॥ फिर शत्रुवों
 करिकै अपराजित वह भगवती धूम्र जटावाला शिव जोहै ताहि बोलतीभिई

कि हे दूत तुम शुंभ निशुंभके पास जावो ॥ २३ ॥ तीन भुवनको जीतकर अत्यंत गर्वयुक्त जे शुंभ निशुंभ दानव हैं तिन्हें और जे उनकी तरफ संग्राममें शूरवीरपनाका गर्व करिके युद्ध करनेकेवास्ते तैयारहैं तिन्हें तुम यह हितकारी वचन कहो ॥ २४ ॥ इंद्र त्रिलोकी जोहै ताहि प्राप्तहो और इंद्रादिक देव यज्ञोके विषे यथाभाग हविष जेहैं तिन्हें भोजन करनेवालेहो और हे शुंभादिक दैत्यो तुम सभही जो जनिको चाहतेहो तो पाताल जावो ॥ २५ ॥

बलावलेपादथचेद्भवंतोयुद्धकांक्षिणः ॥ तदागच्छत तृप्यंतुमच्छिवाःपिशितेनवः ॥ २६ ॥ यतोनियुक्तोदूत्येनतयादेव्याशिवःस्वयम् ॥ शिवदूतीतिलोकेस्मिस्ततः साख्यातिमागता ॥ २७ ॥ तेषिश्रुत्वावचोदेव्याःशर्वाख्यातंमहासुराः ॥ अमर्षापूरिताजग्मुर्यत्रकात्यायनीस्थिता ॥ २८ ॥ ततःप्रथममेवाग्रेशरक्षत्पृष्टिवृष्टिभिः ॥ ववर्षुरुद्धतामर्षास्तांदेवीममरारयः ॥ २९ ॥ साचतान्प्रहितान्वाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान् ॥ चिच्छेदलीलयाध्मातधनुर्मुक्तैर्महेष्टुभिः ॥ ३० ॥

टीका—और जो बलके गर्वते तुम युद्धकी इच्छा कर्तेहो तो मेरे साथ युद्ध करने आवो फिर मेरा परिवार जे शृगालहै ते तुझारे मांस करिके तृप्तहो ॥ २६ ॥ जिसकारण ते देवीने दूतभाव करिके शिव भेजाथा तिसकारणते इस लोकके विषे वह देवी शिवदूती इसनामको प्राप्तभई ॥ २७ ॥ फिर शुंभादिक महाअसुरभी शिव करिके कहा ऐसा देवीका संदेश सुनकै क्रोध करिके भरेहुवे जहां कात्यायनी भगवती स्थित थी तहां आतेजये ॥ २८ ॥ ताके अनंतर देवताके शत्रु और बढाहै क्रोध जिनोके ऐसे शुंभादिक दानव पहिलेही देवीके वक्षस्थलके विषे बाणोंके तथा पोलंडी लाठियोंके और खड्गके प्रहारों करिके देवीको आच्छादित कर्तेजये ॥ २९ ॥ फिर ताके अनंतर शुंभादिक असुरोंने चलाये ऐसे जे बाण और त्रिशूल और शक्ति और कुहाड़े और जे संपूर्ण शस्त्र तिन्हें चंडिका विन श्रम करिके प्रत्यंचाकी

टंकार करिकै शब्दायमान जो धनुष तासे छोडेहुवे तीखे बाण तिन करिकै काटतीभई ॥ ३० ॥

तस्याग्रतस्तथाकालीशूलपातविदारितान् ॥ खट्वांगपोथितां
 श्वारीन्कुर्वतीव्यचरत्तदा ॥ ३१ ॥ कमंडलुजलाक्षेपहतवीर्यां
 न्हतौजसः ॥ ब्रह्माणीचाऽकरोच्छन्नून्येनयेनस्मधावति ॥ ३२ ॥
 माहेश्वरीत्रिशूलेनतथाचक्रेणवैष्णवी ॥ दैत्याञ्जघानकौमारी
 तथाशक्त्यातिकोपना ॥ ३३ ॥ ऐंद्रीकुलिशपातेनशतशोदै-
 त्यदानवाः ॥ पेतुर्विदारिताःपृथ्व्यांरुधिरौघप्रवर्षिणः ॥ ३४ ॥
 ॥ तुंडप्रहारविध्वस्तादंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः ॥ वाराहमूर्त्यान्यपतं
 श्चक्रेणचविदारिताः ॥ ३५ ॥

टीका—तब संग्रामकालके विषे चंडिकाके आगे काली चंडिकाकी तरह
 त्रिशूलके प्रहारों करिकै विदारित और खट्वांगके प्रहार करिके असुरोंको नष्ट
 कर्त्ती हुई रणमें विचरती भई ॥ ३१ ॥ और ब्रह्माणी आदि शक्ति जिस
 जिस मार्ग करिकै असुरोंको साथ युद्ध करनेको जाती भई तहां तहां मार्गके
 विषे कमंडलुके जलका प्रोक्षण करिकै नष्ट पराक्रम और नष्टतेज दैत्योंको
 कर्त्ती भई ॥ ३२ ॥ फिर उस चंडिकाके आगे माहेश्वरी त्रिशूल करिके
 वैष्णवी चक्र करिके और अति क्रोधयुक्त कौमारी शांग करिकै दैत्यनको
 मारती भई ॥ ३३ ॥ और ऐंद्रीशक्तिके वज्रके प्रहार करिकै विदारित रुधिर
 के समूहकी वर्षा कर्त्ते हुवे सैकड़ों दैत्य दानव पृथ्वीमें पडते भये ॥ ३४ ॥
 और ता संग्रामके विषे वाराहमूर्ति शक्तिके मुखका प्रहार करिकै और उसकी
 डाढ़ोंकी लफनियो करिकै विदीर्ण है छाती जिनोकी और चक्रके प्रहार क-
 रिकै विदारित ऐसे विध्वस्त हुवे दानव पृथ्वीमें पडते भये ॥ ३५ ॥

नखैर्विदारितांश्चान्यान्यभक्षयंतीमहासुरान् ॥ नारसिंहीचचारा
 जौनादापूर्णदिगंतरा ॥ ३६ ॥ चंडाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभि
 दूषिताः ॥ पेतुःपृथिव्यांपतितस्तांश्चखादाथसातदा ॥ ३७ ॥

इतिमातृगणंकुद्धमर्दयन्तमहासुरान् ॥ दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्न
 शुदैवारिसैनिकाः ॥ ३८ ॥ पलायनपरान्दृष्ट्वादित्यान्मातृग-
 णादितान् ॥ योद्धुमभ्याययौकुद्धोरक्तबीजोमहासुरः ॥ ३९ ॥
 रक्तबिंदुर्यदाभूमौपतत्यस्यशरीरतः ॥ समुत्पततिमेदिन्यां
 तत्प्रमाणोमहासुरः ॥ ४० ॥

टीका—और सिंहनाद करिकै पूर्ण कियेहै दिशावोंके मध्य जाने ऐसी
 नारसिंही शक्ति नखों करिकै विदारित जे दानव तिन्है और अन्य जे महा
 असुर तिन्है भक्षण कर्त्ता हुई संग्राममें विचरती भई ॥ ३६ ॥ फिर ता संग्रा-
 मके विषे शिवदूती शक्तिने भयंकर अट्टहासन करिकै मूर्छाको प्राप्त किये
 ऐसे जे दैत्य ते पृथ्वीमें पडतेभये ताके अनंतर पृथ्वीमें पडेहुवे जे दैत्यहैं तिन्हें
 वह शिवदूती भक्षण कर्त्ताभई ॥ ३७ ॥ अनेक उपायों करिकै असुरोंको नष्ट
 कर्त्ताहुवा ऐसा क्रोधयुक्त हुवा ब्रह्माणी आदि शक्तियोंका जो समूह ताहि
 देखकर असुर डरपेहुवे भागि जातेभये ॥ ३८ ॥ और ब्रह्माणीति आदि ले मा-
 तृगण करिकै पीडित और इसकारण तेही डरपे हुवे ऐसे जे दैत्य तिन्हें देख
 कर क्रोधयुक्त हुवा महाअसुर रक्तबीज देवीके साथ युद्ध करनेको आता
 गया ॥ ३९ ॥ फिर ता रणमें जब रक्तबीजके शरीरते रुधिरकी बिंदु पृथ्वीमें
 पड़े तब पृथ्वीमें रक्तबीजके समान महाअसुर उत्पन्न होजाय ॥ ४० ॥

युयुधेसगदापाणिर्निद्रशक्त्यामहासुरः॥ततश्चैद्रीस्ववज्रेणरक्तबी
 जमताडयत् ॥४१॥ कुलिशेनाहतस्याशुबहुसुस्त्रावशोणितं॥
 समुत्तस्थुस्ततोयोधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥ ४२ ॥ यावन्तः
 पतितास्तस्यशरीराद्रक्तबिंदवः ॥ तावन्तःपुरुपाजातास्तद्री
 यंबलविक्रमाः ॥ ४३ ॥ तेचापियुयुधुस्तत्रपुरुपारक्तसंभवाः॥
 समंमातृभिरत्युग्रंशस्त्रपातातिभीषणम् ॥४४॥ पुनश्चवज्रपाते
 नक्षतमस्यशिरोयदा॥ववाहरक्तंपुरुपास्ततोजातास्सहस्रशः॥४५॥

टीका—फिर वह महाअसुर रक्तबीज गदा हाथमें लिये हुये ऐंद्रीशक्तिके साथ युद्ध कर्त्ताभया ताके अनंतर ऐंद्रीशक्ति अपने वज्र करिके रक्तबीजको ताड़न कर्त्तीभिई ॥ ४१ ॥ ता समय ऐंद्रीका वज्रके प्रहार करिके ताड़ित जो रक्तबीज ताके शरीरते बहुत रुधिर पृथ्वीमें पड़ताभया ता रुधिरते रक्तबीजके समान रूपवाले और समान पराक्रमवाले कई योधा उत्पन्न होतेभये ॥ ४२ ॥ फिर जितना रुधिरका बिंदु रक्तबीजका शरीरते पड़ा उतनाही संख्या रक्तबीजके समान शूर वीर और पराक्रमी दैत्य उत्पन्न होतेभये ॥ ४३ ॥ फिर वे रक्तबीजके रुधिरते उत्पन्नहुवे जे दैत्यहैं वेभी उस रणके विषे ब्रह्माणीते आदि ले जो मातृगण है ताके साथ दारुण जैसे होय तैसे और शस्त्रोंके प्रहार करिके भयंकर जैसे होय तैसे युद्ध कर्त्तेभये ॥ ४४ ॥ फिर ऐंद्रीशक्तिने किया जो वज्रमहार ता करिके इस रक्तबीजका शिर विदीर्ण होताभया फिर उस शिरते रुधिर बहता भया फिर वा रुधिरके प्रवाहते हजारों दैत्य उत्पन्न होते भये ॥ ४५ ॥

वैष्णवीसमरेचैनंचक्रेणाभिजघानह ॥ गदयाताडयामासऐंद्रीत
मसुरेश्वरं ॥ ४६ ॥ वैष्णवीचक्रभिन्नस्यरुधिरस्रावसंभवैः ॥
सहस्रशोजगद्व्याप्तंतत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥ ४७ ॥ शक्त्याजघा-
नकौमारीवाराहीचतथासिना ॥ माहेश्वरीत्रिशूलेनरक्तबीजंम-
हासुरम् ॥ ४८ ॥ सचापिगदयादैत्यःसर्वाएवाहनत्पृथक् ॥ मातृ-
कोपसमाविष्टोरक्तबीजोमहासुरः ॥ ४९ ॥ तस्याहतस्यबहुधाश-
क्तिशूलादिभिर्भुवि ॥ पपातयोवैरक्तौघस्तेनासञ्छतशोसुराः ॥ ५० ॥

टीका—फिर उस रणमें वैष्णवीशक्ति रक्तबीजको चक्रके प्रहार करिके मारतीभिई और पीछे यही असुर ऐंद्रीशक्तिके साथ युद्ध करनेको प्राप्तभया जब वैष्णवीशक्ति इस असुरको गदाके प्रहार करिके ताड़न कर्त्तीभिई ॥ ४६ ॥ फिर वैष्णवीशक्तिके चक्रप्रहार करिके विदारित जो रक्तबीज तिसके रुधि-
रका प्रवाहते उत्पन्न भये जे रक्तबीजके समानाकार हजारों महासुर तिन क-

रिक्के जगत् व्याप्त होताभया ॥ ४७ ॥ फिर उस संग्रामके विषे कौमारीशक्ति रक्तबीज जो है ताहि शांगके प्रहार करिके और तिसी प्रकार वाराहीशक्ति खड्गके प्रहार करिके और माहेश्वरी त्रिशूलके प्रहार करिके ताड़न कर्त्ती भई ॥ ४८ ॥ फिर वह महाअसुर रक्तबीज क्रोधयुक्त हुवा ब्रह्माण्ति आदि लेकर जे संपूर्ण शक्ति हैं तिन्हें गदाके प्रहार करिके पृथक् पृथक् ताड़न कर्त्ताभया ॥ ४९ ॥ फिर संग्रामके विषे शक्ति त्रिशूल इन आदि शस्त्रोंके प्रहार करिके ताड़ित हुवा जो रक्तबीज ताके शरीरते निकसा रुधिरका प्रवाह जो पृथ्वीमें पड़ता भया ता करिके कोटिन दैत्य उत्पन्न होतेभये ॥ ५० ॥

तैश्चासुरासृक्संभूतैरसुरैस्सकलंजगत् ॥ व्याप्तमासीत्ततोदेवा
भयमाजगुरुत्तमम् ॥ ५१ ॥ तान्विषण्णान्सुरान्दृष्ट्वाचंडिका
प्राहसत्त्वरा ॥ उवाचकालीचामुंडेविस्तीर्णैवदनंकुरु ॥ ५२ ॥
मच्छस्त्रपातसंभूतान्रक्तबिंदून्महासुरान् ॥ रक्तबीजात्प्रतीच्छ
त्वंवक्रेणानेनवेगिना ॥ ५३ ॥ भक्षयंतीचररणेतदुत्पन्नान्म
हासुरान् ॥ एवमेपक्षयंदैत्यःक्षीणरक्तोगमिष्यति ॥ ५४ ॥
भक्ष्यमाणास्त्वयाचोग्रानचोत्पत्स्यंतिचापरे ॥ ऋपिरुवाच ॥
इत्युक्त्वातांततोदेवीशूलेनाभिजघानतम् ॥ मुखेनकालीजगृ
हेरक्तबीजस्यशोणितम् ॥ ५५ ॥

टीका—फिर ताके अनंतर रक्तबीजके रुधिरते उत्पन्न भये जे दैत्य तिन करिके सम्पूर्ण जगत् व्याप्त होताभया तिस कारण ते देवता अधिक भय जो हैं ताहि प्राप्त होतेभये ॥ ५१ ॥ फिर चंडिका भयभीत जे देव हैं तिन्हें देख कर बोली हे देवो तुम मत डरपो फिर कालीको बोलतीभई कि हे चामुंडे तुम अपना मुख विस्तृत करो ॥ ५२ ॥ फिर बोली तुम अत्यंत वेगवाले विस्तृत मुख करिके मेरे शस्त्रोंके प्रहारों करिके उत्पन्न जे रुधिरके बिंदु तिन्हें रक्तबीजके शरीरते पीवो नहीं तो रक्तबिंदु पृथ्वीमें पड़ताही अन्य असुरनको उत्पन्न करदेगा ॥ ५३ ॥ और चामुंडे रक्तबीजका रुधिरते उत्पन्न भये जे

महादैत्य तिन्हें तुम भक्षण कर्त्तीहुई संग्राममें विचरो इसप्रकार यह दैत्य क्षीण रक्त हुवा नाशको प्राप्त होजायगा और जे रक्तबीजके रुधिरते उत्पन्न भये भयंकर दैत्य हैं ते तुम्हारे करिके भक्षण कियेहुये नहीं उत्पन्न होंगे ॥५४॥ तब अपि बोले कि हे सुरथराजन् इसप्रकारसे चंडिका कालीके प्रति कह कर त्रिशूलके प्रहार करिके तिस रक्तबीजको ताडन कर्त्तीभई फिर रक्तबीजके रुधिरको काली मुख करिके पीतीभई ॥ ५५ ॥

ततोसावाजधानाथगदयातत्रचंडिकाम् ॥ नचास्यावेदनांचक्रे
गदापातोल्पिकामपि ॥ ५६ ॥ तस्याहतस्यदेहात्तुबहुसुखाव-
शोणितम् ॥ यतस्ततस्तद्वक्त्रेणचामुंडासंप्रतीच्छति ॥ ५७ ॥
मुखेसमुद्रतायेस्यारक्तपातान्महासुराः ॥ तांश्चखादाथचामुं-
डापपौतस्यचशोणितम् ॥ ५८ ॥ देवीशूलेनचक्रेणवाणैर-
सिभिरिष्टिभिः ॥ जवानरक्तबीजंतंचामुंडापीतशोणितम् ॥
॥ ५९ ॥ सपपातमहीपृष्ठेशस्त्रसंहतितोहतः ॥ नीरक्तश्चमहीपाल
रक्तबीजोमहासुरः ॥ ६० ॥

टीका—ताके अनंतर तिस संग्राममें यह रक्तबीज दैत्य गदाके प्रहार क-
रिके चंडिका जो है ताहि ताडन कर्त्ताभया चंडिका परमानंदस्वरूप है याते
ताको गदाका प्रहार कुछभी वेदना नहीं कर्त्ताभया ॥ ५६ ॥ फिर चंडिकाके
शस्त्रों करिके ताडित जो रक्तबीज ताके शरीरते जो बहुत रुधिर झरताभया
सो चामुंडा अपना मुख करिके पीतीभई ॥ ५७ ॥ फिर कालीके मुखमें रक्त-
बीजका रुधिर पडनेते उत्पन्न भये जे महाअसुर तिन्हें चामुंडा काजी भक्षण
कर्त्तीभई और रक्तबीजका रुधिर पीतीभई ॥ ५८ ॥ फिर चामुंडाने पियोहै रुधिर
जाको ऐसो जो रक्तबीज ताहि चंडिका त्रिशूलके प्रहार करिके और चक्रके
प्रहार करिके और बाणोंके प्रहार करिके और खड्गोंके प्रहार करिके और
रिष्टियोंके प्रहार करिके ताडन कर्त्तीभई ॥ ५९ ॥ फिर हे राजन् शस्त्रोंके समूहते
ताडित और रुधिररहित हुवा रक्तबीज मराहुवा पृथ्वीमें पडता भया ॥ ६० ॥

ततस्तेहर्षमतुलमवापुस्त्रिदशानृप॥ तेषामातृगणोमतोननतां
सृङ्मदोद्धतः॥६१॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकेमन्वन्तरे
देवीमाहात्म्येरक्तबीजवधोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

टीका—हे सुरथ फिर रक्त बीजके वधके अनन्तर संपूर्ण देव अपरिमित
हर्षको प्राप्त होतेभये और रक्तबीजसे आदिले दैत्योंको रुधिर पानते मदोत्क-
ट जो ब्रह्माणी ते आदिले मातृगणहैं सो मदोन्मत्त हुवा नाचताभया ॥६१॥
इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकेमन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये भाषाटीकायां रक्तबीज-
वधोनाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

॥ राजोवाच ॥ विचित्रमिदमाख्यातं भगवन्भवतामम ॥
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥ १ ॥ भूयश्चेच्छा-
च्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ॥ चकार शुभोयत्कर्म निशुं
भश्चातिकोपनः ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच ॥ चकार कोपमतुलं रक्त
बीजे निपातिते ॥ शुभासुरो निशुं भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥ ३ ॥
हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामपमुद्रहन् ॥ अभ्यधावन्निशुं भो-
थमुख्ययासुरसेनया ॥ ४ ॥ तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च म-
हासुराः ॥ संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धाहंतुं देवीमुपाययुः ॥ ५ ॥

टीका—तब सुरथराजा बोलतेभये कि हे भगवन् आपने रक्तबीजके वध
विषयक यह देवीके चरित्रको विचित्र माहात्म्य मेरेसे कहा ॥ १ ॥ हे भगवन् देवी
ने रक्तबीजको पृथ्वीमें डाले सते क्रोधयुक्त हुये शुंभ और निशुंभ फिर जो संग्राम
लक्षण कर्म कर्ते भये सो आपने अधिक जैसे होय तैसे मैं सुना चाहताहूँ ॥ २ ॥
तब ऋषि बोले कि हे राजन् देवीने रक्तबीजको मार पृथ्वीमें डाले सते और
जे दैत्यहैं तिनको संग्रामके विषे मारे सते शुंभासुर और निशुंभ ये बड़ा क्रोध
कर्ते भये ॥ ३ ॥ तबके अनन्तर देवी करिके हत अपनी सैन्यको देखकर क्रोधयु-
क्त हुवा निशुंभ अपनी मुख्य असुरोंकी सेनाकरि सहित देवीके सम्मुख दौ-
ड़ताभया ॥ ४ ॥ फिर वा निशुंभके अगाडी तथा पिछाडी और दाहिने वामे

वर्त्तमान जे महाअसुर ते क्रोधयुक्त ओठपुट चावते हुवे देवीको मारनेको समीप प्राप्त होतेभये ॥ ५ ॥

आजगाममहावीर्यःशुंभोपिस्वबलैर्वृतः ॥ निहतुंचंडिकांकोपा-
त्कृत्वायुद्धंतुमातृभिः ॥ ६ ॥ ततोयुद्धमतीवासीदेव्याः शुंभ
निशुंभयोः ॥ शरवर्षमतीवोग्रमेघयोरिववर्षतोः ॥ ७ ॥
चच्छेदाऽस्ताञ्छरास्ताभ्यांचंडिकास्वशरोत्करैः ॥ ताड-
यामासचांगेषुशस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥ ८ ॥ निशुंभोनिशितंखड्गं
चर्मचादायमुप्रभं ॥ अताडयन्मूर्ध्नि सिंहदेव्यावाहनमुत्तमम् ॥
॥ ९ ॥ ताडितेवाहनेदेवीक्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ॥ निशुंभस्या
शुचिच्छेदचर्मचाप्यष्टचंद्रकं ॥ १० ॥

टीका—फिर तकि अनंतर शुंभभी अपनी सेना करिकै युक्तहुवा ब्रह्माणी
आदि शक्तियेते युद्ध करिके क्रोधते चंडिकाके मारनेको चंडिकाके समीप
प्राप्त होताभया ॥ ६ ॥ तकि अनंतर अत्यंत भयंकर बाणोंकी भेवकीसी
तरह वर्षा कर्त्तेहुये जे शुंभ और निशुंभ दैत्यहै तिनका और भगवतीका पर
स्पर बडाही युद्ध होताभया ॥ ७ ॥ फिर तिन शुंभनिशुंभ दैत्योंकरिकै छोडे
हुवे जे बाणहै तिन्हे चंडिका अपने बाणनके समूह करिकै काटतीभई याके
अनंतर शुंभ निशुंभ जे हैं तिन्हे शस्त्रोंके समूह करिकै रोम रोमकेविषे ताडन
कर्त्तीभई ॥ ८ ॥ फिर निशुंभ तीखा और प्रकाशमान खड्ग और प्रकाशमा-
न ढाल लेकरके देवीवाहनसिंहके मस्तकमें ताडन कर्त्ताभया ॥ ९ ॥ फिर
निशुंभने देवीके वाहन सिंहसे ताडन कियेसंते चंडिका क्षुरप्रमाण करिकै नि-
शुंभका खड्ग जोहै ताहि और आठहैं चंद्राकार लिखित जाकेविषे ऐसी
ढाल जोहै ताहि काटतीभई ॥ १० ॥

छिन्नेचर्मणिखड्गेचशक्तिचिक्षेपसोमुरः ॥ तामप्यस्यद्विधाच
क्रेचक्रेणाभिमुखागतां ॥ ११ ॥ कोपाध्मातोनिशुंभोयशूलं
जग्राहदानवः ॥ आयातंमुष्टिपातेनदेवीतच्चाप्यचूर्णयत् ॥ १२ ॥

अथादायगदांसोपिचिक्षेपचंडिकांप्रति ॥ सापिदेव्यास्त्रिशू-
लेनभिन्नाभस्मत्वमागता ॥ १३ ॥ ततःपरशुहस्तंतमायां
तदैत्यपुंगवं ॥ आहत्यदेवीवाणौघैरपातयतभूतले ॥ १४ ॥
तस्मिन्निपतितेभूमौनिशुंभेभीमविक्रमे ॥ भ्रातर्यतीवसंकुद्धः
प्रययौहंतुमंबिकाम् ॥ १५ ॥

टीका—फिर चंडिकाने निशुंभके खड्ग और ढाल काटतेते निशुंभ देवीके
प्रति शक्ति शस्त्र फेकताभया फिर सन्मुख आवतीहुई याकी शक्तिकाभी
चंडिका चक्र करिकै दो टूक कर्त्तीभई ॥ ११ ॥ याके अनंतर अत्यंत क्रो-
धयुक्त हुवा निशुंभ देवीके प्रति त्रिशूल फेकताभया फिर आतेहुवे तिस त्रि-
शूलकाभी चंडिका मुष्टिके प्रहार करिकै चूर्ण कर्त्तीभई ॥ १२ ॥ याके अनं-
तर फिर निशुंभभी गदा ग्रहण करिकै चंडिकाके प्रति फेकताभया फिर वह
गदाभी देवीके आग्निबीजगर्भ त्रिशूल करिकै खंडितहुई भस्मको प्राप्त हो-
तीभई ॥ १३ ॥ ताके अनंतर फरशी है हाथमें जाके और दैत्योमें श्रेष्ठ ऐसा
आताहुवा निशुंभ जोहै ताहि चंडिका वाणोंके समूह करिकै ताडन कर पृ-
थ्वीकेविषे गिरातीभई ॥ १४ ॥ फिर घोर है पराक्रम जाके विषे ऐसा वह
निशुंभ भ्राता पृथ्वीमें पड़ेसंते अत्यंत क्रोधयुक्त हुवा शुंभ अंबिकाको मारने-
को शीघ्र जातोभयो ॥ १५ ॥

सरथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः ॥ भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्या-
प्याशेष्वभौनभः ॥ १६ ॥ तमायांतंसमालोक्य देवीशंस्रमवा-
दयत् ॥ ज्याशब्दंचापिधनुषश्चकारातीवदुस्तहं ॥ १७ ॥
पूरयामासककुभोनिजघंटास्वनेनच ॥ समस्तदैत्यसैन्यानां
तेजोवधविधायिना ॥ १८ ॥ ततः सिंहोमहानादैस्त्याजितेभ-
महामदैः ॥ पूरयामासगगनं गांतथैवदिशोदश ॥ १९ ॥
ततःकालीसमुत्पत्यगगनंक्षमामताडयत् ॥ कराम्यांतन्निनादे-
नप्राक्स्वनास्तेतिरोहिताः ॥ २० ॥

टीका—फिर वह शुभ रथमें स्थितहुवा मुद्रिका प्रकारकरिकै ग्रहण कियेहैं उत्तम शस्त्र जिनोकेविषे ऐसी जे बड़ी ऊँचि अतुल आठमुजा तिन करिकै संपूर्ण आकाशको व्याप्त करताता कालकेविषे शोभायमान होतोभयो ॥ १६ ॥ फिर तिसको आताहुवा देखिके देवी शंख बजातीभई और धनुषकी प्रत्यंचाका बडाही दुःसह शब्दभी कर्त्तीभई ॥ १७ ॥ फिर चंडिका संपूर्ण असुरोंके सैन्यका तेजको नष्ट करनेवाला ऐसा अपनी घंटाका जो शब्द है ता करिकै दशोदिशोंको संवर्द्धमान कर्त्तीभई ॥ १८ ॥ फिर ताके अनंतर दूर कियेहैं हाथियोंके महामद जिनोने ऐसा जो कंठ गर्जनहै तिन करिकै सिंह आकाश जो है ताहि पूर्ण कर्त्तोभयो और तिसीप्रकार पृथ्वी और दशोदिशा तिन्हे पूर्ण कर्त्तोभयो ॥ १९ ॥ फिर ताके अनंतर चामुंडा काली उछल करिकै हाथेसे आकाश और पृथ्वी जोहै तिन्हें ताडन कर्त्तीभई फिर या पृथ्वी और आकाशके ताडनके शब्द करिकै शंख प्रत्यंचा घंटा सिंह इनके जे शब्द थे ते आच्छादित होतेभये ॥ २० ॥

अट्टाट्टहासमशिवंशिवदूतीचकारह ॥ तैः शब्दैरसुरास्त्रैः शुभः कोपपरंययौ ॥ २१ ॥ दुरात्मंस्तिष्ठतिष्ठेतिव्याजहारांबिकायदा ॥ तदाजयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥ २२ ॥ शुभेनागत्ययाशक्तिर्मुक्ताज्वालातिभीषणा ॥ आयांतीबन्धिकूटाभासानिरस्तामहोल्कया ॥ २३ ॥ सिंहनादेनशुभस्य व्याप्तलोकत्रयान्तरम् ॥ निर्घातनिःस्वनोघोरोजितवानवनीपते ॥ २४ ॥ शुभमुक्ताञ्छरान्देवीशुभस्तत्प्राहिताञ्छरान् ॥ चिच्छेदस्वशरैरुग्रैः शतशोथसहस्रशः ॥ २५ ॥

टीका—और शिवदूती तासमय बडा कठोर अट्टाट्टहास कर्त्तीभई फिर अट्टाट्टहासते उत्पन्नभये जे शब्दहैं तिन करिकै असुर त्रासको प्राप्त होतेभये और शुभ अत्यंत कोपको प्राप्त होतोभयो ॥ २१ ॥ फिर हे शुभदुरात्मन् तू खडारहै खडारहै ऐसे संग्रामकेविषे जब अंबिका कहतीभई तब आका-

शमें स्थितहुये देवोंने जय जय शब्द किया अर्थात् हे अंबिके तुम शत्रुओंका तिरस्कार करो इस प्रकारसे कहा ॥ २२ ॥ फिर शुंभने आकरिके ज्वाला करिके बड़ी भयंकर ऐसी शांग भगवतीके सन्मुख छोड़ी अग्निके तुल्यहै कांति जाकी ऐसी आतीहुई शांगको अंबिका अपनी महोल्का शांग करिके निरस्त कर्त्ताभिई ॥ २३ ॥ हे सुरथ तासमय शुंभके कंठ गर्जन करिके लोकत्रयका मध्य व्याप्त होता गया तोभी ताहि देवीको मारो मारो यह जो शुंभके सैनिकनका शब्दहै सो शुंभका शब्द जोहै ताहि तिरस्कृत कर्त्ताभिया ॥ २४ ॥ फिर ता संग्रामकेविषे देवी अपने उग्रबाणों करिके सौ सौ हजार हजार शुंभके छोड़ेहुए जे बाणहैं तिन्हैं काटतीभिई और शुंभ देवीके छोड़ेहुये जे बाणहैं तिन्हैं अपने बाणों करिके काटताभिया ॥ २५ ॥

ततःसाचण्डिकाक्रुद्धाशूलेनाभिजघानतम् ॥ सतदाभिहतो
भूमौमूर्च्छितोनिपपातह ॥ २६ ॥ ततोनिशुंभःसंप्राप्यचेत
नामात्तकार्मुकः॥आजघानशरैर्देवींकालींकेसरिणंतथा ॥२७॥
पुनश्चकृत्वावाहूनामयुतंदनुजेश्वरः ॥ चक्रायुतेनदितिज
श्छादयामासचंडिकाम् ॥ २८ ॥ ततोभगवतीक्रुद्धादुर्गा
दुर्गार्तिनाशिनी ॥ चिच्छेदतानिचक्राणिस्वशरैःसायकांश्च
तान् ॥ २९ ॥ ततोनिशुंभोवेगेनगदामादायचंडिकाम् ॥
अभ्यधावतवैहंतुंदैत्यसेनासमावृतः ॥ ३० ॥

टीका—फिर शुंभको संग्राममें अपने समान देखिके वह चंडिका क्रोध युक्त हुई त्रिशूलके प्रहार करिके तिस दैत्यको ताडन कर्त्ताभिई फिर वह शुंभ त्रिशूलके प्रहार करिके ताडित मूर्छित हुवा पृथ्वीमें पडताभिया ॥ २६ ॥ ताके अनंतर पहिले मूर्छाको प्राप्तहुवा निशुंभ चेतना जो है ताहि प्राप्त होकर ग्रहण क्रियोहै धनुष जाने ऐसा बाणोंके प्रहार करिके काली देवी जोहै ताहि ताडन कर्त्ताभिया और तिसी प्रकार सिंह जो है ताहि ताडन कर्त्ताभिया ॥ २७ ॥ और तासमय फिर वह निशुंभ मायावी दशहजार भुजावाला वनिके चक्रके

प्रहार करिके चंडिका जोहै ताहि ताडन कर्त्तोभयो ॥ २८ ॥ ताके अनंतर
संकटमें पीडाको नष्ट करनेवाली ऐसी दुर्गा भगवती क्रोधयुक्त हुई अपने
बाणों करिके वा दैत्यके चक्र और बाण जे हैं तिन्हें काटतीभई ॥ २९ ॥

फिर ताके अनंतर निशुंभ वेग करिके गदा जो है ताहि ग्रहण करिके दैत्य-
नकी सेना करिके युक्त हुवा चंडिका जो है ताहि मारनेको दौडताभया ॥ ३० ॥

तस्यापततएवाशुगदांचिच्छेदचंडिका ॥ खड्गेनशितधारेण
सचशूलंसमाददे ॥ ३१ ॥ शूलहस्तंसमायांतंनिशुंभममरार्द्ध-
नम् ॥ हृदिबिब्याधशूलेनवेगाविद्धेनचंडिका ॥ ३२ ॥ भिन्न-
स्यतस्यशूलेनहृदयात्रिःसृतोपरः ॥ महाबलोमहावीर्यस्तिष्ठे-
तिपुरुषोवदन् ॥ ३३ ॥ तस्यनिष्क्रामतोदेवीप्रहस्यस्वनव-
त्ततः ॥ शिरश्चिच्छेदखड्गेनततोसावपतद्भुवि ॥ ३४ ॥ ततः
सिंहश्चादोग्रदंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् ॥ असुरांस्तांस्तथाका-
लीशिवदूतीतथापरान् ॥ ३५ ॥

टीका—फिर आताहुवाही निशुंभकी गदा जो है ताहि चंडिका तीखी
धारवाले खड्ग करिके तत्काल काटतीभई फिर वह दानव त्रिशूल ग्रहण कर्त्तो
भयो ॥ ३१ ॥ फिर त्रिशूल है हाथमें जिसके और देवतानको दुःख देनेवाला
ऐसा आताहुवा निशुंभ जो है ताहि चंडिका वेगते फेकाहुवा जो त्रिशूल है
ता करिके हृदयकेविषे बांधती भई ॥ ३२ ॥ फिर त्रिशूलके प्रहार करिके
भिन्नहुवा जो निशुंभ है ताके हृदयते हे देवि तू कहां जायगी खड़ी रहै ऐसे
कहताहुवा बड़ा पराक्रमी और बड़ा वीर अन्य पुरुष निकसताभया ॥ ३३ ॥
फिर रेरे दुष्ट ! तू खड्गारह खड्गारहै मन्मयी मायाको प्राप्त होकर तू फिर मेरे-
कोही मारनेको उद्युक्त हो रहाहै यातै मैं तेरेको अवहीं मारूंगी इसप्रकार हैं-
सके निशुंभके हृदयते निकसता हुवा जो निशुंभका अवतार है ताको देवी ख-
ड्गके प्रहार करिके शिर काटतीभई ताके अनंतर निशुंभ रणभूमिकेविषे पड़-
ताभया ॥ ३४ ॥ ताके अनंतर उग्रदंष्ट्रानकरिके संपिष्ट है श्रीवा निनोकी

ऐसे जे असुर हैं तिन्हें सिंह खाताभया और सिंह भक्षित असुरोंते अन्य जे असुर हैं तिन्हें काली भक्षण कर्त्ताभई तिनोंसेभी अन्य जे हैं तिन्हें शिवदूती भक्षण कर्त्ताभई ॥ ३५ ॥

कौमारीशक्तिनिभिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ॥ ब्रह्माणोमंत्रपूते
नतोयेनान्येनिराकृताः ॥ ३६ ॥ माहेश्वरीत्रिशूलेनभिन्नाः
पेतुस्तथापरे ॥ वाराहीतुंडवातेनकेचिच्चूर्णीकृताभुवि ॥ ३७ ॥
खंडंखंडंचचक्रेणवैष्णव्यादानवाः कृताः ॥ वज्रेणचैंद्रीहस्ताय
विमुक्तेनतथापरे ॥ ३८ ॥ केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टामहाह-
वात् ॥ भक्षिताश्चापरेकालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॥ ३९ ॥
इति श्रीमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिके मन्वन्तरेदेवीमाहात्म्येनि
शुंभवधोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

टीका—और कितनेही महाअसुर कौमारीकी शक्तिके प्रहार करिकै छि-
न्नभिन्न हुवे नाशको प्राप्त होतेभये और कितनेही अन्य असुर ब्रह्माणिके
मंत्रते पवित्र जल करिकै नष्ट करदिये ॥ ३६ ॥ और तिसीप्रकार अन्य
कितनेही असुर माहेश्वरीके त्रिशूलेके प्रहार करिकै भिन्नहुवे रणभूमिकेविषे
पड़तेभये और कितनेही वाराहीशक्तिके मुखके प्रहार करिकै चूर्णितहुवे रण-
भूमिकेविषे पड़तेभये ॥ ३७ ॥ फिर वैष्णवीशक्तिने चक्रके प्रहार करिकै
खंडयनाको दानव प्राप्त करदिये और तिसीप्रकार कितनेही अन्य दानव ऐंद्री
शक्तिके हस्ताय करिकै प्रेरित जो वज्र ताके प्रहार करिकै खंडितहुये नष्ट
होतेभये ॥ ३८ ॥ फिर ता संग्रामकेविषे कितनेही तो असुर नष्ट होतेभये
और कितनेही तिस संग्रामते डरपके भागजातेभये और कितनेही असुर
काली और शिवदूती और सिंह इनोने भक्षण किये ॥ ३९ ॥ इति मार्क-
ण्डेयपुराणे सावर्णिकमन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये निशुंभवधोनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

ऋषिरुवाच ॥ निशुंभनिहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसंमितम् ॥ हन्यमा-
नं बलैश्च शुंभः रुद्धो ब्रवीद्वचः ॥ १ ॥ बलाबलेपाहुष्टे त्वं मादु-

गैर्गर्वमावह ॥ अन्यासांवलमाश्रित्य युध्यसेयातिमानिनी ॥ २ ॥
 देव्युवाच ॥ एकैवाहं जगत्प्रद्वितीयाकाममापरा ॥ पश्यै-
 तादुष्टमप्येवविशंत्योमद्विभूतयः ॥ ३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ततःसम-
 स्तास्तादेव्योब्रह्माणीप्रमुखालयम् ॥ तस्यादेव्यास्तनौजग्मुरे-
 कैवासीत्तदाविका ॥ ४ ॥ देव्युवाच ॥ अहंविभूत्याबहुभिरिह रू-
 पैर्यदास्थिता ॥ तत्संहृतमयैकैवतिष्ठाम्याजौस्थिरोभव ॥ ५ ॥

टीका—तब ऋषि बोले कि हे सुरथराजन् फिर शुभ प्राणोंके समान देवी
 करिके माराहुवा ऐसा निशुभ भ्राता जो है ताहि देखकर और अपनी सेना
 देवी करिके हन्यमान देखकर क्रोधयुक्त हुवा वचन बोलताजया ॥ १ ॥
 हे दुर्गे दुष्टनी बलके संबंधसे तू गर्व मतकरे जो तू ब्रह्माणीआदि शक्तियोंका
 बल जो हे ताहि आश्रय करिके निरंतर अहंकारवाली हुई युद्ध कर्ची है सो
 सर्वथा दूसरेके बलका आश्रय लेकर युद्धकेविषे तेरेको गर्व करना अनु-
 चित है ॥ २ ॥ ताके अनंतर देवी बोलतीभई कि हे दुष्ट शुभ इस जगत्के
 विषे परमात्मरूप एक मैहीं मेरेले अन्य दूसरी कौन हे अर्थात् कोई नहीं
 और ये जे ब्रह्माणी आदि लेकर मेरी विभूति हैं तिन्हें मेरे विषेही प्रवेश
 होतीहुई तू देख ॥ ३ ॥ तब ऋषि बोले कि हे सुरथराजन् ताके अनंतर
 ब्रह्माणी हे मुख्य जिनोंके विषे ऐसी जे आठ शक्ति हैं वे सब तिस चंडि-
 काके शरीरमें ऐक्यको प्राप्त होतीभई अर्थात् लीन होतीभई तब एक अं-
 विका देवीही अद्वितीय रहतीभई ॥ ४ ॥ फिर देवी बोलती भई हे शुभ मैं
 इस रणभूमिके विषे बहुत रूपों करिके जो बहुत्व अंगीकार करा सो बहुत्व
 समेटलिया अब मैं एकही स्थितहूँ तू अब संग्रामकेविषे स्थिरहो ॥ ५ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ततःप्रवृत्तेयुद्धंदेव्याःशुभस्यचोभयोः ॥ प-
 श्यतांसर्वदेवानामसुराणांचदारुणम् ॥ ६ ॥ शरवर्षैःशितैः
 शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैवदारुणैः ॥ तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयंकरं
 ॥ ७ ॥ दिव्यान्यस्त्राणिशतशोमुमुचेयान्यथाविका ॥ बभञ्ज

तानिदैत्येन्द्रस्तत्प्रतीवातकर्तृभिः ॥ ८ ॥ मुक्तानितेनचास्त्रा-
णिदिव्यानिपरमेश्वरी ॥ वभञ्जलीलयैवोग्रहङ्कारोच्चारणादि-
भिः ॥ ९ ॥ ततश्शरशतैर्देवीमाच्छादयतसोसुरः ॥ सापितत्कु-
पितादेवीधनुश्चिच्छेदचेष्टुभिः ॥ १० ॥

टीका—तब ऋषि बोले कि हे सुरथराजन् ताके अनंतर देवी और शुभ
इन दोनोंका परस्पर युद्ध प्रवृत्त होताभया वह कैसा युद्धहुवा कि देखतेहुये
संपूर्ण देव तिनको जे भयंकर ऐसा ॥ ६ ॥ फिर बाणोंकी वर्षा करिके तीखें
शस्त्रों करिके और कठोर अस्त्रों करिके शुभका और देवीका संपूर्ण लोकको
भय करनेवाला ऐसा बहुत युद्ध होताभया ॥ ७ ॥ याके अनंतर अंबिका
शुभकेविषे जे सैकड़ों दिव्यास्त्र छोडे तिन्हें तिनका विध्वंस करनेवाले
अस्त्रों करिके शुभ काटताभया ॥ ८ ॥ फिर शुभने छोडे जे दिव्य अस्त्र हैं तिन्हें
परमेश्वरी हंकारोच्चारणादि करिके विनापरिश्रम करिकेही काटतीभई ॥ ९ ॥
ताके अनंतर हजारों बाणों करिके वह भगवती क्रोधयुक्त हुई बाणों करिके शुभको ध-
नुष जो है ताहि काटतीभई ॥ १० ॥

छिन्नेधनुपिदैत्येन्द्रस्तथाशक्तिमथाददे ॥ चिच्छेददेवीचक्रेणता-
मप्यस्यकरेस्थिताम् ॥ ११ ॥ ततःखड्गमुपादायशतचंद्रचभा-
नुमत् ॥ अभ्यधावतताहंतुदैत्यानामधिपेश्वरः ॥ १२ ॥
तस्यापततएवाशुखड्गचिच्छेदचंडिका ॥ धनुर्मुक्तैःशितैर्वा-
णैश्चर्मचार्ककरामलं ॥ १३ ॥ अश्वाश्रपातयामासरथंसारथिना
सह ॥ हताश्वःसतदादैत्यश्छिन्नधन्वाविसाराथिः ॥ जग्राहमुद्ग-
रंघोरमविकानिधनोद्यतः ॥ १४ ॥ चिच्छेदापततस्तस्यमुद्गरं
निशितैःशरैः ॥ तथापिसोभ्यधावतामुष्टिमुद्यम्यवेगवान् ॥ १५ ॥

टीका—फिर देवीने शुभका धनुष काटे संति शुभ. तिसीप्रकार शक्ति शस्त्र
ग्रहण कर्त्ताभयो याके अनंतर देवी शुभके हाथमें स्थित जो शक्ति शस्त्रहै

ताहिबी चक्र करिके काटतीभिई ॥ ११ ॥ ताके अनंतर दैत्योंके अधिप जे धूम्रलोचनादिक तिनका ईश्वर शुंभ खड्ग जो है ताहि ग्रहण करिके और सौ है लिखेहुवे चंद्राकार जाके विषे और प्रकाशमान ऐसा जो ढालहै ताहि ग्रहण करिके ता देवीके मारनेको दौडताभया ॥ १२ ॥ फिर आता-हुवा ही जो शुंभहै ताका खड्ग जो है ताहि अत्यंत प्रकाशमान जो ढालहै ताहि चंडिका धनुष करिके छोडेहुवे जे तीखे बाणहैं तिन करिके काटती भई ॥ १३ ॥ और अश्व जे हैं तिन्हें और सारथि करिके सहित जो रथहै ताहि चंडिका बाणों करिके पृथ्वीमें गिरातीभिई फिर मारेगयेहैं अश्व जाके और दूदगयाहै धनुष जाका और विगतहुवाहै सारथि जाका ऐसा वह शुंभदैत्य अंबिकाके मारनेमें उद्युतहुवा भयंकर मुद्गर ग्रहण कर्त्ताभया ॥ १४ ॥ फिर ताके अनंतर प्रहार करनेकी इच्छा कर्त्ताहुवा जो शुंभ है ताका मुद्गर जोहै ताहि सो देवी तीखे बाणों करिके काटतीभिई तौभी मूका ऊंचा करिके शुंभ देवीके मारनेको दौडताभया ॥ १५ ॥

समुष्टिपातयामासहृदयैदैत्यपुंगवः ॥ देव्यास्तंचापिसादेवाति
लेनोरस्यताडयत् ॥ १६ ॥ तलप्रहाराभिहतोनिपपातमही-
तले ॥ सदैत्यराजःसहसापुनरेवतथोत्थितः ॥ १७ ॥ उत्पत्य
चप्रगृह्योच्चैर्देवींगगनमास्थितः ॥ तत्रापिसानिराधारायुधते
नचंडिका ॥ १८ ॥ नियुद्धंखेतदादैत्यश्चंडिकाचपरस्परम् ॥
चक्रतुःप्रथमंसिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥ १९ ॥ ततोऽनियुद्धंसुचि-
रंकृत्वातेनांबिकासह ॥ उत्पात्यभ्रामयामासचिक्षेपधरणीतले २० ॥

टीका—फिर वह दैत्यनमें श्रेष्ठ शुंभ देवीके हृदयकेविषे मुष्टिका प्रहार कर्त्ताभया फिर वह शुंभ जोहै ताहिभी करतल करिके वक्षस्थलकेविषे ताडन कर्त्ताभिई ॥ १६ ॥ फिर वह दैत्यराज देवीके करतलके प्रहारकरिके ताडितहुवा महीतलकेविषे पडताभया फिर वह दैत्य वेग-करिके तिसी प्रकार संग्रामभूमिमें खडाहोताभया ॥ १७ ॥ फिर देवी जोहै

ताहि ग्रहण करिके महीतलते उड़कर आकाशकेविषे स्थित होताभया
 तहांभी निराधार हुई भगवती तिस शुंभके साथ युद्धकर्त्तीभई ॥ १८ ॥ फिर
 तब आकाशमें आरोहण कालकेविषे शुंभ दैत्य और चंडिका ये पहिले
 सिद्ध और मुनि इनको विस्मय करनेवाला ऐसा परस्पर बाहुयुद्ध कर्त्तेभये
 ॥ १९ ॥ फिर अंबिका शुंभके साथ बहुत काल युद्ध करिके ताके अनंतर
 शुंभका पैर पकड़ उठाके भ्रमातीभई पीछे भ्रमा करिके भगवती शुंभ जोहै ता-
 हि पृथ्वीतलकेविषे फेकतीभई ॥ २० ॥

सक्षितो धरणींप्राप्यमुष्टिमुद्यम्यवेगितः ॥ अभ्यधावतदुष्टा
 त्माचंडिकानिधनेच्छया ॥ २१ ॥ तमायांतंततोदेवीसर्वदै-
 त्यजनेश्वरम् ॥ जगत्यांपातयामासभित्त्वाशूलेनवक्षसि ॥ २२ ॥
 सगतासुःपपातोर्व्यां देवीशूलग्रविक्षतः ॥ चालयन्सकलां
 पृथ्वींसाब्धिद्वीपांसपर्वताम् ॥ २३ ॥ ततःप्रसन्नमखिलंहतेत-
 स्मिन्दुरात्मनि ॥ जगत्स्वास्थ्यमतीवापनिर्मलंचाभवन्नभः ॥
 ॥ २४ ॥ उत्पातमेवास्सोलकायेप्रागासंस्तेशमंययुः ॥ सरितोमा
 र्गवाहिन्यस्तथाशुंभेनिपातिते ॥ २५ ॥

टीका—फिर आकाशते देवी करिके फेकाहुवा दुष्टात्मा शुंभदैत्य पृथ्वी
 जोहै ताहि प्राप्त होकरिके मुष्टि उठा करिके चंडिकाको मारनेकी इच्छा
 करिके दौड़ताभया ॥ २१ ॥ फिर ताके अनंतर आताहुवा जो संपूर्ण दैत्यों-
 का ईश्वर शुंभहै ताहि भगवती त्रिशूलके प्रहार करिके वक्षस्थलमें वेधन
 करि पृथ्वीमें गिरातीभई ॥ २२ ॥ वह दैत्य देवीका त्रिशूलके अग्रभाग क-
 रिके हत और गये प्राण जाके ऐसाहुवा पर्वतों करिके और समुद्र द्वीपों क-
 रिके सहित जो पृथ्वीहै ताहि चलायमान कर्त्ताहुवा पृथ्वीके विषे पड़ताभया
 ॥ २३ ॥ फिर देवीने तिस दुरात्मा शुंभको मारे संते ता कारणते संपूर्ण
 जगत् प्रसन्न होतोभयो और फिर जगत् अत्यंत स्वस्थपनाको प्राप्त होतोभयो
 और आकाश निर्मल होतोभयो ॥ २४ ॥ और ज्वाला करिके सहित जे

शुंभ मरे पाहिले उत्पातके मेघथे वे शांतिको प्राप्त होतेभये देवीने शुंभको पृ-
थ्वीमें गिरायेसंते उत्पथते तिसीप्रकार मार्गवाहिनी नदिया होतीभई ॥ २५ ॥

ततोदेवगणास्सर्वेहर्षनिर्भरमानसाः ॥ बभूवुर्निहतेतस्मिन्गंध-
र्वाललितंजगुः ॥ २६ ॥ अवादयंस्तथैवान्येननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥

वबुः पुण्यास्तथावातास्सुप्रभोभूद्विवाकरः ॥ २७ ॥ जज्वलुश्चाग्न-
यः शांताः शांतदिग्जनितस्वनाः ॥ २८ ॥ इति श्रीमा० पु० साव-
र्णिकेमन्वंतरेदेवीमाहात्म्ये शुंभवधोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

टीका—और वा दैत्यको देवीने मारेसंते तिसकारणते हर्ष करिके पूर्णहै
मन जिनके ऐसे देवगण होतेभये और गंधर्व मनोहर गातेभये ॥ २६ ॥ और
तासमय कितनेही अन्य गंधर्व वादित्र बजातेभये और अप्सरावोंके गण नृत्य
कर्त्तेभये और तासमय शीतल मंद सुगंध पवन चलतेभये और तिसीप्रकार
सूर्य सुप्रभ होताभया ॥ २७ ॥ और आहवनीय अग्नि यज्ञनेके निर्मल
जलती और दिशावोंकेविषे उत्पन्न ऐसे उत्पातको सूचन करनेवाले जे शब्द
ते शांत होतेभये ॥ २८ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणसावर्णिकेमन्वंतरेदेवीमाहा-
त्म्येभापाटीकायांशुंभवधोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

ऋषिरुवाच ॥ देव्याहतेतत्रमहासुरेन्द्रेसेन्द्राः सुरावन्दिपुरोगमा-
स्ताम् ॥ कात्यायनीतुष्टुबुरिष्टलाभाद्रिकासिवक्राब्जविकासि-
ताशाः ॥ १ ॥ देवाञ्जुः ॥ देविप्रपन्नार्तिहरेप्रसीदप्रसीदमातर्जगतो
खिलस्य ॥ प्रसीदविश्वेश्वरिपाहिविश्वत्वमीश्वरीदेविचराचरस्य
॥ २ ॥ आधारभूताजगतस्त्वमेकामहीस्वरूपेणयतः स्थितासि ।
अपांस्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायतेकृत्स्नमलंघ्यवीर्ये ॥ ३ ॥
त्वंवैष्णवोशक्तिरनंतवीर्याविश्वस्यबीजं परमासिमाया ॥ संमो-
हितं देविसमस्तमेतत्त्वंवैप्रसन्नाभुविमुक्तिहेतुः ॥ ४ ॥ विद्याः
समस्तास्तवदेविभेदाः स्त्रियः समस्ताः सकलंजगच्च ॥ त्वयै
कयापूरितमंयैतत्कातेस्तुतिःस्तव्यपरापरोक्तिः ॥ ५ ॥

टीका—फिर कपि बोले कि हे सुरथराजन् चंडिकाने संग्रामकेविषे शुं-
भासुर मारेसंते अपने इष्टके लाभते प्रसन्नहै मुख जिनोंका ऐसे इंद्र करिके स-
हित अग्निसे आदि लेकर जे देव ते तिस कात्यायनी भगवतीकी स्तुति कर्त्त-
भये ॥ १ ॥ तब देव भगवतीकी स्तुतिके उपयोगी वाक्य बोलतेभये हे शरणागतका
दुःख हरनेवाली भगवती तुम प्रसन्नहो हे संपूर्ण जगत्की माता तुम प्रसन्नहो
हे विश्वेश्वरि तुम प्रसन्नहो हे देवि तुम लक्ष्मीरूप करिकै जगत्की रक्षा करो
और हे देवी तुम चराचर जगत्की व्यापकहो ॥ २ ॥ और हे देवी जा कार-
णते तुम पृथ्वीरूप करिकै स्थितहो ताते जगत्का आधार रूप एक तुमहीहो
अन्य नहीं और नहीं उलांघ सकाजाय पराक्रम जाका ऐसी जलोंका स्वरूप
करिके स्थित जो है भगवती तुमहो सो तुम करिकै संपूर्ण जगत् बढायाजा-
ताहै ॥ ३ ॥ हे देवि तुम कैसीहो अनंतहै पराक्रम जाको ऐसीहै और वि-
श्वका कारण माया तुमहीहो और जा करिकै अशेष जगत्की विष्णु पालना
कर्त्ताहै ऐसी विष्णुकी सामर्थ्यलक्षण वैष्णवी शक्ति तुमही हो हे देवि तुल्लारी
मायाने यह संपूर्ण जगत् मोहितकिया अर्थात् ममताके वशीभूत किया
और तुम प्रसन्नहुई पृथ्वीकेविषे मुक्तिका कारण हो ॥ ४ ॥ और हे देवि
श्रुति स्मृति पुराण इनते आदि लेकर जे विद्याहैं वे तुल्लाराही अंशहैं और
ब्रह्माण्डी आदि लेकर जे संपूर्ण शक्तिहैं वे तुल्लाराही अंशहैं और संपूर्ण यह
जगत् तुल्लारे करिकै पूर्ण है हे भगवति स्तुति और स्तुत्य इनके भेदमें स्तुति
होती है हे भगवति एकत्वके विषे तुल्लारी क्या स्तुति करीजाय ॥ ५ ॥

सर्वभूतायदादेवीभुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ त्वंस्तुतास्तुतयेका
वाभवंतिपरमोक्तयः ॥ ६ ॥ सर्वस्यबुद्धिरूपेणजनस्यहृदिसं
स्थिते ॥ स्वर्गापवर्गदेदेविनारायणिनमोस्तुते ॥ ७ ॥ कलाका
ष्टादिरूपेण परिणामप्रदायिनी ॥ विश्वस्योपरतौशक्ते नाराय-
णिनमोस्तुते ॥ ८ ॥ सर्वमंगलमांगल्येशिवेसर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये
त्र्यंबकेगौरिनारायणिनमोस्तुते ॥ ९ ॥ सृष्टिस्थितिबिनाशानां-

शक्तिभूतेसनातनि॥गुणाश्रयेगुणमयेनारायणिनमोस्तुते ॥१०॥

टीका—फिर हे भगवति भुक्तिमुक्तिकी देनेवाली तुम विश्वरूपही इस प्रकारसे जब तुम स्तुति कीगई तब तुम्हारी स्तुतिके अर्थ कौनसी श्रेष्ठ उक्तियां हैं कि जिन करिके तुम स्तुति कीजातीहो अर्थात् नहीं ॥ ६ ॥ हे देवि संपूर्ण प्राणियोंके हृदयकेविषे स्थितहै स्वर्ग मोक्षकी देनेवाली हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कार है ॥ ७ ॥ क्षण मुहूर्त्त अहोरात्र पक्ष मास ऋतु अयन संवत्सर इन आदि कालरूप करिके मनुष्यादिकनको बाल्य तरुण वृद्ध अवस्था देनेवाली तिसी प्रकार संसारके अन्तमें रुद्ररूप ऐसी हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कार है ॥ ८ ॥ और हे सर्व मंगलोंका मंगलरूप हे कल्याण करनेवाली हे शरणागतवत्सल हे त्रिनेत्रे हे गौरि हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कार है ॥ ९ ॥ और जगत्का रचनां पालन और संहार इनको करनेवाली हे शक्तिरूप और हे सनातनि हे गुणनका आश्रय हे गुणमयि हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कार है ॥ १० ॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्तिहरेदेविनारायणिनमोस्तुते॥११॥ हंसयुक्तविमानस्थेत्रेक्षणीरूपधारिणि॥ कौशांभःक्षरिकेदेविनारायणिनमोस्तुते॥ १२ ॥ विशूलचंद्राहिधरेमहावृषभवाहिनि ॥ माहेश्वरीस्वरूपेणनारायणिनमोस्तुते ॥ १३ ॥ मयूरकुवकुटवृतेमहाशक्तिधरेनधे ॥ कौमारीरूपसंस्थानेनारायणिनमोस्तुते ॥ १४ ॥ शंखचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ॥ प्रसीदवैष्णवीरूपेणनारायणिनमोस्तुते॥१५॥

टीका—हे शरणागत ऐसे गरीब और दुःखीओंको दुःखोंते रक्षा करने में तत्पर हे सर्वलोकका दुःख हरनेवाली हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कार है ॥ ११ ॥ हे हंसयुक्त विमानमें स्थित ब्रह्मणीका रूप धारण करने वाली और हे कुशोदकका शत्रुवोंपर सेचन करनेवाली हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कार है ॥ १२ ॥ और माहेश्वरी स्वरूप करिके हे विशूल

चंद्रको धारण करनेवाली हे महावृषभवाहिनि हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कार है ॥ १३ ॥ मयूर और कुक्कुट इन करिके युक्त और महाशक्ति को धारण करनेवाली और पापों करिके रहित और कुमारशक्तिकासाहे शरीरका अवयव जाके ऐसी जो नारायणि तुमहो सो तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥ १४ ॥ और शंख चक्र गदा शार्ङ्ग धनुष येग्रहण किये हैं परम आयुष जाने ऐसी वैष्णवीरूप हे नारायणि तुम प्रसन्नहो तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥ १५ ॥

गृहीतोयमहाचक्रेदंश्रोद्धृतवसुंधरे ॥ वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोस्तुते ॥ १६ ॥ नृसिंहरूपेणो ग्रेण हंतुं दैत्यान्कृतोद्यमे ॥ त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोस्तुते ॥ १७ ॥ किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले ॥ वृत्रप्राणहरे चैद्रि नारायणि नमोस्तुते ॥ १८ ॥ शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्ये महाबले ॥ घोररूपे महारावे नारायणि नमोस्तुते ॥ १९ ॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरो मोलाविभूषणे ॥ चामुंडे मुंडमथने नारायणि नमोस्तुते ॥ २० ॥

टीका—और ग्रहण कियो है उग्रचक्र जाने और दंष्ट्राओं करिके उठाई है पृथ्वी जाने और वराहके रूपको धारण करनेवाली और कल्याणरूपिणी ऐसी जो हे नारायणि तुमहो तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥ १६ ॥ और उग्र जो नृसिंह रूप है ता करिके दैत्य जेहें तिन्हें मारनेको कियो है उद्यम जाने और त्रैलोक्यकी रक्षा करिके सहित ऐसी जो हे नारायणि तुमहो तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥ १७ ॥ और मुकुटको धारण करनेवाली और बड़ा है वज्र जिसका और हजार नेत्र जेहें तिन करिके प्रकाशमान और वृत्रासुरका प्राण हरनेवाली ऐसी ऐंद्रीशक्तिरूप जो हे नारायणि तुमहो सो तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥ १८ ॥ और शिवदूती स्वरूप करिके मारा है दैत्योंका महासैन्य जाने और घोर है रूप जाको और बड़ा है शब्द जाका ऐसी जो हे नारायणि तुमहो तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥ १९ ॥ और दंष्ट्राओं करिके भयंकर है मुख जाको

और नरमुंडोंकी मालाकाहे आभूषण जिसके ऐसी चंडमुंडको मारनेवाली चामुंडारूप जो हेनारायणि तुमहो सो तुझारे अर्थ नमस्कारहै ॥ २० ॥

लक्ष्मिलज्जेमहाविद्येश्रद्धेपुष्टेस्वधेध्रुवे ॥ महारात्रिमहामाये
नारायणिनमोस्तुते ॥ २१ ॥ मेधेसरस्वतिवरेभूतिवाभ्रवि
तामसि ॥ नियतेत्वंप्रसीदेशेनारायणिनमोस्तुते ॥ २२ ॥
सर्वतःपाणिपादांतिसर्वतोक्षिशिरोमुखे ॥ सर्वतःश्रवणघ्राणे
नारायणि नमोस्तुते ॥ २३ ॥ सर्वस्वरूपेसर्वेशेसर्वशक्तिस
मन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहिनोदेविदुर्गेदेविनमोस्तुते ॥ २४ ॥
एतत्तेवदनंसौम्यलोचनत्रयभूषितम् ॥ पातुनः सर्वभीतिभ्यः
कात्यायानि नमोस्तुते ॥ २५ ॥

टीका—और लक्ष्मी लज्जा महाविद्या श्रद्धा पुष्टि स्वधा ध्रुवा महारात्रि
महामाया इनरूप जो हे नारायणि तुमहो सो तुझारे अर्थ नमस्कार है ॥ २१ ॥
और मेधारूप सरस्वतीरूप और श्रेष्ठ ऐश्वर्यरूप कृष्णकी ज्ञानिनीरूप और
तामसी शक्तिरूप और अदृष्टरूप और समर्थ ऐसीजो हे नारायणि तुमहो से
प्रसन्नहो तुझारे अर्थ नमस्कारहै ॥ २२ ॥ और चारो तरफहैं हाथ पैर
अवयव जाके और चौतरफहैं नेत्र और शिर और मुख जाके और चौतरफहैं
कान और नाक जाके ऐसी जो हे नारायणि तुमहो सो तुझारे अर्थ नमस्का-
रहै ॥ २३ ॥ और संपूर्ण जगत्है स्वरूप जाको और सबकी स्वामिनी और
संपूर्ण शक्तियों करिके समन्वित ऐसी जो हेदेवि तुमहो सो भयोंते हमारी
रक्षा करो हे दुर्गेदेवि तुझारे अर्थ नमस्कारहो ॥ २४ ॥ और तीन नेत्रों करिके
अलंकृत जो तुझारा यह सुंदर मुखहै सो संपूर्णभयोंते हमारी रक्षाकरो
हेकात्यायानि तुझारे अर्थ नमस्कारहो ॥ २५ ॥

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसृदनम् ॥ त्रिशूलपातुनोभीते
भेद्रकालिनमोस्तुते ॥ २६ ॥ हिनस्तिदैत्यतेजांसिस्वनेना-
पूर्ययाजगत् ॥ सावन्टापातुनोदेविपापेभ्योनःसुतानिव ॥ २७ ॥

असुरासृग्वसापंकचर्चितस्तेकरोज्ज्वलः ॥ शुभायखड्गोभवतु
चंडिकेत्त्वानंतावयम् ॥ २८ ॥ रोगानशेषानपहंसितुष्टाददासि
कामान्सकलानभीष्टान् ॥ त्वामाश्रितानां विषन्नराणां त्वामा-
श्रिता ह्यश्रयतां प्रयांति ॥ २९ ॥ एतत्कृतं यत्कदनं त्वया व्यधर्म
द्विपां देवि महासुराणाम् ॥ रूपैरनेकैर्बहुधात्ममूर्तिं कृत्वाऽम्बि-
केतत्प्रकरोतिकान्या ॥ ३० ॥

टीका—और ज्वालावों करिके उच्च और बड़ा भयंकर और संपूर्ण अ-
सुरोंका हिंसक ऐसा जो हे भद्रकालि तुल्लारा विश्रुत है सो हमारी भयते रक्षा
करो तुल्लारे अर्थ नमस्कार हो ॥ २८ ॥ और जो तुल्लारी घंटा अपना शब्द
करिके जगत् जो है ताहि पूर्ण कर दैत्यनके तेज जे हैं तिन्हें नष्ट कर्त्ती भई
सो तुल्लारी घंटा पापोंते पुत्रोंकीसी तरह हमारी रक्षा करो ॥ २७ ॥ और
असुरोंका रुधिर और मेद रूप जो कीच ता करिके व्याप्त ऐसे तुल्लारे हाथमें
जो उज्ज्वल खड्ग सो जगत्का और हमारे कल्याणके अर्थ हो हे चंडिके हम
तुल्लें प्रणाम कर्त्ते हैं ॥ २८ ॥ और हे भगवती तुम आराधन करिके प्रसन्न
हुई तुल्लारे आश्रित जे मनुष्य हैं तिनका संपूर्ण रोग नष्ट कर्त्ती हो और ति-
नको संपूर्ण मनोवांछित अर्थ देती हो और हे देवी तुल्लारे आश्रित जे नर हैं
तिनके विपत्ति नहीं है और तुल्लारे आश्रित जे नर हैं वे तुल्लारी रूपाते राजत्व
देवत्व पदवीको प्राप्त होते हैं ॥ २९ ॥ फिर हे देवी इस समय ब्रह्माणीति
आदि अनेक रूपों करिके बहुत प्रकारकी अपनी मूर्ति जो है ताहि करिके
धर्मके द्वेषी ऐसे असुर जे हैं तिनका जो नाश यह तुमने किया सो यह असु-
रोंका नाश तुल्लारेते अन्य स्त्री कौन करनेको समर्थ है अर्थात् कोई नहीं ॥ ३० ॥

विद्यामुशास्त्रेषु विवेकदोषेष्वप्युवाक्येषु च कात्वदन्या ॥ मम
त्वर्गतेति महांधकारे विभ्रामयस्येतदतीव विश्वम् ॥ ३१ ॥ रक्षां-
सियत्रोगविपाश्वनागायत्रारयोदस्युवलानियग ॥ दावानलो
यत्र तथाग्निमध्येतत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ ३२ ॥ वि-

इवेश्वरीत्वंपरिपासिविश्वंविश्वात्मिकाधारयसीतिविश्वम् ॥
 विश्वेश्वंद्याभवतीभवंतिविश्वाश्रयायेत्वयिभक्तिनम्राः ३३-
 विप्रसीदपरिपालयनोऽरिभित्तिर्नित्यंयथासुखधादधुनैवसद्यः ॥
 पापानिसर्वजगतांप्रशमंनयाशुउत्पातपाकजनितांश्चमहोपस-
 र्गान् ॥ ३४ ॥ प्रणतानांप्रसीदत्वदेविविश्वार्तिहारिणि ॥
 त्रैलोक्यवासिनामीड्येलोकानांवरदाभव ॥ ३५ ॥

टीका—और हे देवि आन्वीक्षिकति आदिले चतुर्दश विद्याके होतेसेत
 और ज्ञानके प्रकाशक मनुस्मृत्यादिक धर्मशास्त्रोंके होतेसंते और आदि वा-
 क्योंके होतेसंते अर्थात् वैदिक पुराणोंके होतेसंते बड़ा है अंधकार जाके
 विषे ऐसा ममत्तारूपी जो गर्त्तहै ताके विषे यह विश्व जो है ताहि तुम भगवती
 हो सो तुमते अन्य देवी कौनहै अर्थात् कोई नहीं ॥ ३१ ॥ और हे देवि
 जहां दैत्यहैं और जहां उग्रहैं विष जिनोमें ऐसे सर्पहैं और जहां शत्रुहैं और
 जहां चोरोंके समूह हैं और तिसीप्रकार जहां समुद्रके विषे दावानल अग्निहै
 तहां पड़ेहुये जे मनुष्यहैं तिनकी तुम सर्वत्र स्मरण करीहुई तहां तहां स्थित
 हुई रक्षा कर्त्तीहो ॥ ३२ ॥ और हे देवि तुम विश्वेश्वरीहो याते विश्वकी रक्षा
 कर्त्तीहो और तुम विश्वात्मिकाहो याते विश्वको धारण कर्त्तीहो और ब्रह्मा-
 दिक जे हैं तिन करिकेभी तुम स्तुति करने योग्य हो और हे भगवती जे तु-
 हारे विषे भक्ति करिके नम्र हैं वे जगत्के धारण करनेवाले हैं ॥ ३३ ॥ और
 हे देवि तुम हमारे ऊपर प्रसन्न होवो जैसे शुभासुरके बधते हमारी पालना करी
 तिसीप्रकार अगाडी होनेवाले शत्रुभयते नित्य हमारी रक्षा करो और संपूर्ण
 जगत्के पाप जे हैं तिन्हें शीघ्र नाशको प्राप्त करो और उत्पातनका फल दान
 काल करिके उत्पन्न भये जे उपद्रव तिन्हें शीघ्र नाशको प्राप्त करो ॥ ३४ ॥
 हे विश्वका दुःख हरनेवाली भक्ति करिके नम्र जे हैं तिनके ऊपर प्रसन्नहो
 हे त्रैलोक्यवासियों करिके स्तुति करने योग्य देवि तुम लोकोंको मनोवांछित
 वरदान देनेवाली होवो ॥ ३५ ॥

देव्युवाच ॥ वरदाहंसुरगणावरंयंमनसेच्छथ ॥ तंवृणुध्वंप्रय-
च्छामिजगतामुपकारकम् ॥ ३६ ॥ देवाञ्जुः ॥ सर्वबाधाप्र-
शमनंत्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेतत्त्वयाकार्यमस्मद्वैरि-
विनाशनम् ॥ ३७ ॥ देव्युवाच ॥ वैवस्वतंतरे प्राप्तेअष्टाविं-
शतिमेयुगे ॥ शुंभोनिशुंभश्चैवान्याबुत्पत्स्येतेमहासुरौ ॥ ३८ ॥
नंदगोपगृहेजातायशोदागर्भसंभवा ॥ ततस्तौनाशयिष्यामि
विंध्याचलनिवासिनी ॥ ३९ ॥ पुनरप्यतिरौद्रेणरूपेणपृ-
थिवीतले ॥ अवतीर्यहनिष्यामिवैप्रचित्तांश्वदानवान् ॥ ४० ॥

टीका—तब देवी बोलतीभई कि हे देवगणों मैं तुझारेको वरदान देनेवाली
हूँ सो जो तुम जगत्का उपकार करनेवाला वर मन करिके इच्छा कर्ते हो
सो मांगो मैं दूंगी ॥ ३६ ॥ तब देव बोलतेभये हे संपूर्ण त्रैलोक्यकी स्वा-
मिनी तुझे त्रैलोक्यके संपूर्ण दुःखका विनाश करना योग्य है और ऐसेही
जगत्का उपकारक जो हमारे वैरियोंका विनाशहै सो करना योग्यहै ॥ ३७ ॥
तब देवी बोलतीभई हे देवो तुम श्रवण करो मैंने जगत्के उपकारके अर्थ ये
पराक्रम किये अब फिर वैवस्वत मन्वन्तरके मध्यमें आनेवाली अट्टाईसवी
युगचौकड़ी प्राप्त होतेसंते अर्थात् द्वापर कलियुगकी संधिके विषे अन्य शुंभ
और निशुंभ ये दो महाअसुर उत्पन्न होंगे ॥ ३८ ॥ ताके अनंतर नंद गो-
पिका गृहके विषे उत्पन्न भई यशोदाके गर्भते है जन्म जाको ऐसी मैं विंध्या-
चलके विषे निवास कर्तीहुई तिन दोनों शुंभ और निशुंभ दैत्योंको नष्ट क-
रूंगी ॥ ३९ ॥ फिर उसी अट्टाईसवी चौकड़ीमें द्वापरके अनन्तर कलियुगके
विषे बड़ा भयंकर रूप करिके फिरभी पृथ्वीतलमें अवतार लेकर वैप्रचित्ति
नाम जे दानवहैं तिन्हें मारूंगी ॥ ४० ॥

भक्षयंत्याश्वतानुग्रन्वैप्रचित्तान्महासुरान् ॥ रक्तादंताभवि-
प्यंतिदाडिमीकुसुमोपमाः ॥ ४१ ॥ ततोमादेकताःस्वर्गेमर्त्यलो-
केचमानवाः ॥ स्तुवंतोव्याहरिष्यंतिसततंरक्तदंतिकाम् ॥ ४२ ॥

भूयश्च शतवार्पिक्यामनावृष्ट्यामनंभसि ॥ मुनिभिः संस्तुता
भूमौ संभविष्याम्ययोनिजा ॥ ४३ ॥ ततः शतेननेत्राणां निरो
क्षिष्यामियन्मुनीन् ॥ कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां
ततः ॥ ४४ ॥ ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः ॥ भरिष्या
मिसुराः शकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ॥ ४५ ॥

टीका—और वैप्रचिन्तिनाम उग्र महाअसुर जे हैं तिन्हें भक्षण कर्त्ताहुई
का मेरा दाढयूके पुष्पके समान रक्तदांत होंयगे ॥ ४१ ॥ ताकारणते स्वर्ग-
लोकके विषे देवता और भूलोकके विषे मनुष्य ये मेरी निरंतर स्तुति कर्त्ते-
हुवे मेरेको रक्तदंतिका नाम करिके कहेंगे ॥ ४२ ॥ फिर शतवर्षपर्यन्त
वर्षा नहींहोने करिके नदी तडागादिकमेंभी जल नहींहोतेसंते मुनियों करिके
स्तुति करीहुई अयोनिज प्रकट हूंगी ॥ ४३ ॥ ताके अनंतर शत नेत्रन करिके
मुनि जेहैं तिन्हें मैं देखूंगी ताकारणते मनुष्य मेरेको शताक्षी कहेंगे ॥ ४४ ॥
ताके अनंतर संपूर्ण लोक जो है ताहि अपने शरीरते उत्पद्यमान और वृष्टि
होनेतक प्राणोंके धारक ऐसे जे शाकहैं तिनकरिके मैं पोषण करूंगी ॥ ४५ ॥

शाकं भरीति विख्यातिं तदायास्याम्यहं भुवि ॥ तत्रैव च वधि-
ष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥ ४६ ॥ पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं
कृत्वा हिमाचले ॥ रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात् ॥
॥ ४७ ॥ तदामां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ॥ भीमादेवीति
विख्यातं तन्मेनामभविष्यति ॥ ४८ ॥ यदारुणाख्यं स्रैलोक्ये
महाबाधां करिष्यति ॥ तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वा संख्येयपटपदम्
॥ ४९ ॥ त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् ॥ भ्रा-
मरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः ॥ ५० ॥

टीका—तब पृथ्वीके विषे मैं शाकंभरी यह जो संज्ञाहै ताहि प्राप्तहूंगी
फिर तहांही दुर्गनामा जो महाअसुरहै ताहि मारूंगी ॥ ४६ ॥ और हेदेवो
फिरभी जब मैं हिमाचलके विषे घोररूप करिके मुनि जोहैं तिनकी रक्षाके

कारणते राक्षस जेहें तिन्हें भक्षण करूंगी ॥ ४७ ॥ तब आसमन्ताव
नम्र है मूर्ति जिनोंकी ऐसे वसिष्ठादिक मुनि मेरी स्तुति करेंगे और ताकारणते
भीमादेवी यह विख्यात मेरा नाम होगा ॥ ४८ ॥ और हे देवो त्रिलोकीके विषे
जब अरुणनामा महासुर बड़ी पीडा करेगो तब मैं असंख्येय हूँ भ्रमर जाके
विषे ऐसो भ्रामररूप जोहै ताहि करिकै त्रिलोकीके हितके अर्थ अ-
रुणासुर जोहै ताहि मारूंगी तब लोक सर्वत्र भ्रामरीनाम करिकै मेरी
स्तुति करेंगे ॥ ४९ ॥ ५० ॥

इत्थं यदा यदा बाधादानवोत्था भविष्यति ॥ तदा तदा वतीर्याहं
करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥ ५१ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके
मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये नारायणीस्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥
टीका—और हे देवो जब जब लोकोंको दानवोंते पीडा उत्पन्न होगी
तब तब अवतार लेकर शत्रुओंका नाश करूंगी ॥ ५१ ॥ इति श्रीमार्कण्डे
यपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये टीकायां नारायणीस्तुतिर्नामैकादशो
ऽध्यायः ॥ ११ ॥

देव्युवाच ॥ एभिः स्तवैश्च मानित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ॥
तस्याहंसकलां वाधां नाशयिष्याम्यसंक्षयम् ॥ १ ॥ मधुकै-
टभनाशं च महिषासुरघातनम् ॥ कीर्तयिष्यंति ये तद्ब्रह्मं शुभ-
निशुभयोः ॥ २ ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ॥
स्तोष्यंति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ३ ॥ न तेषां दु-
ष्कृतं किंचिदुष्कृतोत्थानचापदः ॥ भविष्यति न दारिद्र्यं न चै-
वैष्टवियोजनम् ॥ ४ ॥ शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वानराजतः ॥
न शस्त्रानलतो यौघात्कदाचित्संभविष्यति ॥ ५ ॥

टीका—फिरभी देवी बोलतीमई कि हे देवो इन स्तोत्रों करिकै एकाग्र-
चित्त हुवा जो कोई नित्य मेरी स्तुति करेगा तिसकी निस्संदेह संपूर्ण वाधा
मैं नष्टकरूंगी ॥ १ ॥ और मधुकैटभका है नाश जाके विषे और महिषासुर-

का घात जाके विषे और तिसीप्रकार शुभ निशुभका है वधप्रतिपादन जाके विषे ऐसे जो मेरो उत्तम माहात्म्य ताहि अष्टमी और चतुर्दशी और नवमी इन तिथियोंके विषे जे कोई पुरुष एकाग्र चित्तहुवे भक्ति करिके सुनेगे अथवा पाठ करेंगे तिनका संपूर्ण पाप नष्टहोगा और पापोंते उठी जे आपत्ति है वे सब नष्ट होगी और तिनके कभी दरिद्रता नहींहोगी और कभी पुत्र धनादिकोंते वियोग नहींहोगा ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ और तिनको शत्रुते और चोरते और राजते कभी भय नहीं होगा और शस्त्रते और अग्निते और जलके प्रवाहते कभी तिन्होंका घात नहीं होनेका ॥ ५ ॥

तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः ॥ श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ ६ ॥ उपसर्गान् शेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् ॥ तथात्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥ ७ ॥ यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ् नित्यमायतनेन मम ॥ सदानतद्विमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ८ ॥ बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्यं महोत्सवे ॥ सर्वममैतच्चरितमुच्चार्यैवाव्यमेव च ॥ ९ ॥ जानता जानता वापि बलिपूजां तथाकृताम् ॥ प्रतीक्षिष्याम्यहं प्रीत्या बह्निहोमं तथाकृतम् ॥ १० ॥

टीका—ताकारणते एकाग्रचित्त पुरुषोंको प्रकट कल्याणकारक पूजनीय ऐसा मेरा माहात्म्य जोहै सो भक्ति करिके सदा श्रवण करने योग्यहै ॥ ६ ॥ और मेरा माहात्म्य जोहै ताहि श्रवण कर्नेहुये और पठन कर्नेहुये जे पुरुषहैं तिनके महामारीते उत्पन्न भये जे संपूर्ण उपद्रव तिन्हें मेरा माहात्म्य दूर करेहै और तिसीप्रकार अध्यात्म अधिभूत अधिदैव अर्थात् शरीरोत्पन्न व्याध्यादिक और प्रेतादिजनित भयभ्रमादिक और देवकृत दारिद्र्यादिक ये तीन प्रकारको जो उत्पातहै ताहि मेरा माहात्म्य दूर करेहै ॥ ७ ॥ और जहां मेरे मंदिरके विषे मेरा माहात्म्य पुरुषों करिके शुद्धरीतिसे पढाजाताहै उस स्थानको मैं नहीं छोडोगी और उस गृहके विषे मेरा सान्निध्य

स्थितहै॥८॥और महानवमी इत्यादिक तिथियोंके विषे छाग भेपादि पशुवों-
करिकै जो देवनिमित्तक बलिदान तासमयके विषे और हवनकालके विषे
और पुत्रजन्मविवाहादिक महोत्सवोंके विषे संपूर्ण मेरा माहात्म्य
मनुष्योंके पढने योग्यहै और श्रवण करने योग्यहै ॥ ९ ॥ और ता प्रकार
करिकै गुरुपदिष्ट कर्त्तव्यता जोहै ताहि जानता और नहीं जानता जो भक्ति-
मान् पुरुषहै ता करिकै किया जो बलिदान और पूजा और तिसीप्रकार अ-
ग्निके विषे तिलमध्वादिक हवन तिन्हे मैं प्रीतिकरिकै स्वीकार करूंगी ॥ १० ॥

शरत्कालेमहापूजाक्रियतेयाचवार्पिकी ॥ तस्याममैतन्माहा-
त्म्यंश्रुत्वाभक्तिसमन्वितः ॥ ११ ॥ सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधा-
न्यसुतान्वितः ॥ मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥ १२ ॥
श्रुत्वाममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः ॥ पराक्रमं च युद्धे-
पुजायते निर्भयः पुमान् ॥ १३ ॥ रिपवः संक्षयं याति कल्याणं चो-
पपद्यते ॥ नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥ १४ ॥
शांतिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने ॥ ग्रहपीडासु चोग्रासु
माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥ १५ ॥

टीका—जो आश्विनशुक्लप्रतिपदाते लेकर शरत्कालके विषे महापूजा क-
रीजाती और जो चैत्रशुक्ल प्रतिपदाते लेकर वार्षिकी पूजा करीजातीहै ताके
विषे मेरा यहजो चरित्रत्रयलक्षणमाहात्म्यहै ताहि भक्तियुक्त हुवा मनुष्य
सुनकर मेरी कृपाते संपूर्ण बाधा करिकै विनिर्मुक्त और धन धान्य सुत करिकै
युक्तहोगा इसमें संदेह नहीं ॥ ११ ॥ १२ ॥ और मेरा यह माहात्म्य जोहै
ताहि गुरुते सुनकर और तिसीप्रकार जगत्का अभ्युदय करनेवाली ब्रह्माण्या
दि शक्तिरूप जे मेरी उत्पत्तिहै तिन्है और मेरे वीरपराक्रम जे हैं तिन्है
सुनकर पुरुष युद्धनके विषे निर्भय होताहै ॥ १३ ॥ और मेरा माहात्म्य
जोहै ताहि सुनतेहुवे जे पुरुषहैं तिनके शत्रु नाशको प्राप्त होतेहैं और तिनके
मंगल उत्पन्न होताहै और तिनका कुल समृद्धिको प्राप्त होताहै ॥ १४ ॥

और उपद्रवोका संपूर्ण शांतिकर्मके विषे और तिसीप्रकार दुष्टस्वम दीखनेमें और बहुत अनिष्ट ग्रहों करिके जे पीडाहै तिनमें पुरुष मेरा माहात्म्य जो है ताहि सुनें ॥ १५ ॥

उपसर्गाःशमयांतिग्रहपीडाश्चदारुणाः ॥ दुःस्वप्नंचनृभिर्दृष्टं सु-
स्वप्नमुपजायते ॥ १६ ॥ बालग्रहाभिभूतानां बालानां शांति-
कारकम् ॥ संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥ १७ ॥ दुर्वृ-
त्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम् ॥ रक्षोभूतपिशाचानां पठना
देवनाशनम् ॥ १८ ॥ सर्वमभैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम् ॥
सर्वकृत्स्नमेतदादिमध्यावसानलक्षणं ॥ १९ ॥ पशुपुष्पार्घ्यधू-
पैश्वर्गंधदीपैस्तथोत्तमैः ॥ विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रेक्षणीयैरह-
र्निशम् ॥ २० ॥

टीका—फिर मेरे माहात्म्यके श्रवणते उपद्रव शांतिको प्राप्त होताहै और शानि आदि ग्रहों करिके जे कठोर पीडा हैं ते शांत होतीहैं और मनुष्योंने देखा जो खोटा स्वम है सो श्रेष्ठस्वम होताहै ॥ १६ ॥ और श्मशानमें रहने-वाले ऐसे पूतनाते आदि लेकर जे बालग्रह तिन करिके पीडित जे बालक तिनके मेरा माहात्म्यश्रवण शांतिका कारणहै और एक कार्य करनेवाले पुरुषोंके समूहमें भेद होतेसते मेरा माहात्म्यका श्रवणही उत्तम मैत्रीका साधन है ॥ १७ ॥ फिर मेरा माहात्म्य कैसाहै कि संपूर्ण दुष्टोंके बलकी हानि करनेवाला और पठनमात्रते रक्षो भूत पिशाच इनको दूर करनेवाला ॥ १८ ॥ और सर्व कृत्स्न एतद् इसप्रकार आदि मध्य अंतमें है चिन्ह जाके विषे ऐसा मेरा यह संपूर्ण माहात्म्य मनुष्यको मेरे समीप प्राप्त करनेवालाहै ॥ १९ ॥ और पशु पुष्प अर्घ्य और धूप इन करिके और गंध दीप इन करिके और तिसीप्रकार ब्राह्मणोंको तरह तरहके उत्तम जिमानो करिके और हवनोकरिके और तिसीप्रकार हरवखत नृत्य गीतादिकनकरिके ॥ २० ॥

अन्यैश्चाविविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेणया ॥ प्रीतिमें क्रियते सास्मि-

न सकृदुच्चरितेश्रुते ॥ २१ ॥ श्रुतंहरतिपापानितथारोग्यं
 प्रयच्छति ॥ रक्षां करोति भूतेभ्योजन्मनां कीर्तनं मम ॥ २२ ॥
 युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिवर्हणम् ॥ तस्मिच्छ्रुते वैरि कृतं
 भयं पुंसां न जायते ॥ २३ ॥ युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्म-
 र्षिभिः कृताः ॥ ब्रह्मणा च कृता यास्ताः प्रयच्छंतु शुभांगतिम् ॥
 ॥ २४ ॥ अरण्ये प्रांतरे वापि दावाग्निपरिवारितः ॥ दस्युभिर्वा
 वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः ॥ २५ ॥ सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने
 वा वनहास्तिभिः ॥ राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञतो बध्यो बंधगतोपि वा ॥
 ॥ २६ ॥ आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥ पतत्सुचापि
 शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे ॥ २७ ॥ सर्वा बाधा सुघोरा सुवेदनाभ्य
 दितोपि वा ॥ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात् ॥ २८ ॥

टीका—और तिसी प्रकार तरह तरह के अन्य भोगों करिके और तिसी-
 प्रकार मेरी प्रीतिके अर्थ दानों करिके जो संपूर्ण कामनाको देनेवाली
 प्रीति करी जाती है सो प्रीति एकवार उच्चारण किया और श्रवण
 किया जो मेरा माहात्म्य है ताके विषे भक्तिकरिके भक्तोंने करी जाती है
 ॥ २१ ॥ फिर श्रवण किया हुआ मेरा माहात्म्य पाप जे हैं तिनहै दूरकर्ता है
 और तिसी प्रकार सेवन करनेवालोंको आरोग्य देता है और मेरे जे ब्रह्मणी
 आदि रूप करिके प्रादुर्भाव है तिनका जो कीर्तन सो भक्तोंकी भूत पिशा-
 चादिकनसे रक्षा कर्ता है ॥ २२ ॥ और मेरा जो दुष्ट दैत्यनको हनन करने-
 वाला चरित्र होता भया ताके श्रवण करे संते श्रवण करनेवाले पुरुषोंको युद्ध-
 नके विषे वैरि करिके भय नहीं होता है ॥ २३ ॥ और हे देवो जे तुमने मेरी
 स्तुति करी है और ताके पहिले सुमेधा मार्कण्डेय इत्यादि ब्रह्मर्षियोंने जे मेरी
 स्तुति करी है और मधु और कैटभ इन दैत्योंके भयते ब्रह्मने जे मेरी स्तुति
 करी है वे स्तुति मनुष्यों करिके पढी हुई मनुष्य जे हैं तिनके अर्थ शुभांगति
 जो है ताहि देगी ॥ २४ ॥ अरण्यके विषे जो वर्तमान और तिसी प्रकार म-

तुप्योंकरिके शून्य मार्गके विषे वर्तमान और तिसीप्रकार दावाग्रि करिके चौतरफ रुकाहुवा और तिसीप्रकार चौरों करिके रोकाहुवा और तिसी प्रकार उद्यानमें शत्रुवों करिके ग्रहण कियाहुवा वनमें मारनेको सिंह भगेरो करिके अनुपातहुवा और तिसीप्रकार हाथियों करिके मारनेको पीछे दौड़ा गया हुवा और क्रोधयुक्त राजाने यह मारने योग्यहै इसप्रकार आज्ञा दिया हुवाभी और तिसीप्रकार कैदीखानामें प्राप्तहुवा और तिसीप्रकार समुद्रके विषे नौकामें स्थित पवन करिके व्याकुल हुवा और बड़े जयंकर संग्रामके विषे शस्त्रोंके पडतेसंतेभी वर्तमानहुवा और तिसीप्रकार सम्पूर्ण वेदना जे हैं तिनके विषे तिस दुःखका अनुभवोंके विषे वर्तमान जो मनुष्य सो भेरा यह माहात्म्य जो है ताहि स्मरण करताहुवा संकटते छूटजाय २५।२६।२७।२८॥

ममप्रभावारिंसाहाद्यादस्यवोवैरिणस्तथा ॥ दूरादेवपलायंते
स्मरतश्चरितंमम॥२९॥ऋषिरुवाच॥ इत्युक्त्वासाभगवतीचंडि
काचंडीविक्रमा ॥ पश्यतामेवदेवानांतत्रैवांतरधीयत ॥ ३० ॥

टीका—और मेरे प्रभावते सिंह व्याघ्रादिक और चौर और तिसीप्रकार शत्रु ये सब भेरा चरित्र स्मरण कर्ताहुवा जो पुरुष है ताकेसकासते डरपके भाग जातेहैं ॥ २९ ॥ तब ऋषि बोले हे सुरथराजन् प्रचंड है पराक्रम जाको ऐसी चंडिका देवतावोंके प्रति इस प्रकार कहकर देवतावोंके देखतेहुवेंही तहां अंतर्धान होतीभई ॥ ३० ॥

तेपिदेव्यानिरातंकाः स्वाधिकारान्यथापुरा ॥ यज्ञभागभुजः
सर्वेचक्रुर्विनिहतारयः ॥ ३१ ॥ दैत्याश्चदेव्यानिहतेशुंभेदे-
वरिपौधुधि ॥ जगद्धिध्वंसकेतस्मिन्महोभ्रतुलविक्रमे ॥ निशुंभे
चमहावीर्यशेषाःपातालमाययुः ॥ ३२ ॥ एवंभगवतीदेवीसा
नित्यापिपुनःपुनः ॥ संभूयकुरुतेभूपजगतःपरिपालनम्॥३३॥
तयैतन्मोह्यतेविश्वंसैवाविश्वंप्रसूयते ॥ सायाचिताचविज्ञानं
तुष्टाऋद्धिप्रयच्छति ॥३४॥ व्यासंतयैतत्सकलं ब्रह्मांडंमनुजे-

न सकृदुच्चरितेश्रुते ॥ २१ ॥ श्रुतंहरतिपापानितथारोग्यं
 प्रयच्छति ॥ रक्षांकरोतिभूतेभ्योजन्मनांकीर्तनंमम ॥ २२ ॥
 युद्धेषुचरितंयन्मेदुष्टदैत्यनिवर्हणम् ॥ तस्मिञ्छ्रुतेवैरिकृतं
 भयंपुंसांनजायते ॥ २३ ॥ युष्माभिःस्तुतयोयाश्वयाश्वव्रह्म-
 षिभिः कृताः ॥ ब्रह्मणाचकृतायास्ताःप्रयच्छंतुशुभांगतिम् ॥
 ॥ २४ ॥ अरण्येप्रांतरेवापिदावाग्निपरिवारितः ॥ दस्युभिर्वा
 वृतःशून्येगृहीतोवापिशत्रुभिः ॥ २५ ॥ सिंहव्याघ्रानुयातोवावने
 वावनहस्तिभिः ॥ राज्ञाक्रुद्धेनचाज्ञप्तोवध्योबंधगतोपिवा ॥
 ॥ २६ ॥ आघूर्णितोवावातेनस्थितःपोतेमहार्णवे ॥ पतत्सुचापि
 शस्त्रेषुसंग्रामेभृशदारुणे ॥ २७ ॥ सर्वाबाधासुघोरासुवेदनाभ्य
 दितोपिवा ॥ स्मरन्ममैतच्चरितंनरोमुच्येतसंकटात् ॥ २८ ॥

टीका—और तिसीप्रकार तरह तरहके अन्य भोगों करिके और तिसी-
 प्रकार मेरी प्रीतिके अर्थ दानों करिके जो संपूर्ण कामनाको देनेवाली
 प्रीति करी जातीहै सो प्रीति एकवार उच्चारण किया और श्रवण
 किया जो मेरा माहात्म्य है ताके विषे भक्तिकरिके भक्तोंने करीजातीहै
 ॥ २१ ॥ फिर श्रवण कियाहुवा मेरा माहात्म्य पाप जे हैं तिन्है दूरकर्त्ताहै
 और तिसीप्रकार सेवन करनेवालोंको आरोग्य देताहै और मेरे जे ब्रह्मणी
 आदि रूप करिके प्रादुर्भाव है तिनका जो कीर्तन सो भक्तोंकी भूत पिशा-
 चादिकनसे रक्षा कर्त्ताहै ॥ २२ ॥ और मेरा जो दुष्ट दैत्यनको हनन करने-
 वाला चरित्र होताभया ताके श्रवण करेसंते श्रवण करनेवाले पुरुषोंको युद्ध-
 नके विषे बैर करिके भय नहीं होताहै ॥ २३ ॥ और हे देवो जे तुमने मेरी
 स्तुति करीहै और ताके पहिले सुमेधा मार्कण्डेय इत्यादि ब्रह्मर्षियोंने जे मेरी
 स्तुति करीहै और मधु और कैटभ इन दैत्योंके भयते ब्रह्माने जे मेरी स्तुति
 करी है वे स्तुति मनुष्यों करिके पढ़ीहुई मनुष्य जे हैं तिनके अर्थ शुभगति
 जो है ताहि देगी ॥ २४ ॥ अरण्यके विषे जो वर्त्तमान और तिसीप्रकार म-

तुप्योंकरिके शून्य मार्गके विषे वर्त्तमान और तिसीप्रकार दायाग्रि करिके चौरफ रुकाहुवा और तिसीप्रकार चौरों करिके रोकाहुवा और तिसी प्रकार उद्यानमें शत्रुओं करिके ग्रहण कियाहुवा वनमें मारनेको सिंह भगेरो करिके अनुयातहुवा और तिसीप्रकार हाथियों करिके मारनेको पीछे दौड़ा गया हुवा और क्रोधयुक्त राजनि यह मारने योग्यहै इसप्रकार आज्ञा दिया हुवाभी और तिसीप्रकार कैदीखानामें प्राप्तहुवा और तिसीप्रकार समुद्रके विषे नौकामें स्थित पवन करिके व्याकुल हुवा और बड़े भयंकर संग्रामके विषे शत्रुओंके पडतेसतेभी वर्त्तमानहुवा और तिसीप्रकार सम्पूर्ण वेदना जे हैं तिनके विषे तिस दुःखका अनुभवोंके विषे वर्त्तमान जो मनुष्य सो मेरा यह माहात्म्य जो है ताहि स्मरण करताहुवा संकटते छूटजाय २५।२६।२७।२८॥

ममप्रभावार्तिहाद्यादस्यवोवैरिणस्तथा ॥ दूरादेवपलायंते
स्मरतश्चरितंमम॥२९॥ऋषिरुवाच॥ इत्युक्त्वासाभगवतीचंडि
काचंडीविक्रमा ॥ पश्यतामेवदेवानांतत्रैवांतरधीयत ॥ ३० ॥

टीका—और मेरे प्रभावते सिंह व्याघ्रादिक और चौर और तिसीप्रकार शत्रु ये सब मेरा चरित्र-स्मरण कर्ताहुवा जो पुरुष है ताकेसकासते डरपके भाग जातेहैं ॥ २९ ॥ तब ऋषि बोले हे सुरथराजन् प्रचंड है पराक्रम जाको ऐसी चंडिका देवताओंके प्रति इस प्रकार कहकर देवताओंके देखतेहुवैही तहां अंतर्धान होतीआई ॥ ३० ॥

तेपिदेव्यानिरातंकाः स्वाधिकारान्यथापुरा ॥ यज्ञभागभुजः
सर्वेचक्रुर्विनिहतारयः ॥ ३१ ॥ दैत्याश्चदेव्यानिहतेशुभेदे-
वरिपौयुधि ॥ जगद्विध्वंसकेतस्मिन्महोद्रेतुलविक्रमे ॥ निशुभे
चमहावीर्यशेषाः पातालमाययुः ॥ ३२ ॥ एवंभगवतीदेवीसा
नित्यापिपुनःपुनः ॥ संभूयकुरुतेभूपजगतःपरिपालनम्॥३३॥
तयैतन्मोह्यतेविश्वंसैवविश्वंप्रसूयते ॥ सायाचिताचविज्ञानं
तुष्टाऋद्धिप्रयच्छति ॥३४॥ व्याप्तंतयैतत्सकलंब्रह्मांडमनुजे-

श्वर ॥ महाकाल्यामहाकालेमहामारीस्वरूपया ॥ ३५ ॥

टीका—फिर ताके अनंतर देवी करिके मारेगयेहैं शत्रु जिनेके ऐसे वे देवकी जैसे पहिले निर्भयथे तिसीप्रकार निर्भयहुवे यज्ञोंके भाग भोगतेहुये अपने जे अधिकार अर्थात् व्यापार तिन्हे कर्तेभये ॥ ३१ ॥ फिर हे राजन् देवीने जगत्का विध्वंस करनेवाला देवताओंके प्रबलशत्रु शुभको युद्धके विषे मारेसंते और निशुभको मारेसंते फिर शेषदैत्य भयभीत हो पातालको भागजाते भये ॥ ३२ ॥ हेराजन् भगवती नित्यभीहै परंतु इसप्रकार बारंबार अवतार लेकर जगत्का परिपालन कर्तीहै ॥ ३३ ॥ और तिसी करिके यह जगत् रचाजाताहै और तिसी करिके मोहाजाताहै सो भगवती भक्तोंकरिके प्रार्थितहुई भक्तोंके प्रति ज्ञान देतीहै और प्रसन्नहुई संपत्ति देतीहै ॥ ३४ ॥ फिर हेराजन् महामारीस्वरूप जो महाकालीहै ता करिके प्रलयकालके विषे यह संपूर्ण ब्रह्मांड व्याप्त होताहै ॥ ३५ ॥

सैवकालेमहामारीसैवसृष्टिर्भवत्यजा ॥ स्थितिकरोतिभूतानांसैवकालेसनातनो ॥ ३६ ॥ भवकालेनृणांसैवलक्ष्मीवृद्धिप्रदागृहे ॥ सैवाभावेतथालक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ॥ ३७ ॥ स्तुतासंपूजितापुष्पैर्धूपगंधादिभिस्तथा ॥ ददातिवित्तंपुत्रांश्चमार्तिधर्मे गतिंशुभाम् ॥ ३८ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरेदेव्या श्रितमाहात्म्यं भगवतीवाक्यं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

टीका—और वह नित्य भगवती प्रलयकालके विषे महामारी कहीजातीहै और सृष्टिकालमें सर्गशक्ति कही जातीहै और वही जगत्का पालन कर्तीहै याते पालनशक्ति कहीजातीहै ॥ ३६ ॥ और वही मनुष्योंके घरोंमें संपत्तिकालके विषे लक्ष्मीके वृद्धिको देनेवालीहै फिर वही आपत्कालके विषे लक्ष्मीका नाशके अर्थ अलक्ष्मी होजातीहै ॥ ३७ ॥ और हेराजन् वह भगवती मनुष्यों करिके स्तुति करीहुई और तिसीप्रकार पुष्प गंध धूप इत्यादिकों करिके पूजितहुई तिन भक्त मनुष्योंके अर्थ धन और पुत्र और धर्म

के विषे श्रेष्ठ बुद्धि और शुभगति ये सर्ववस्तु देतीहै ॥ ३८ ॥ इति श्रीमा-
कंडेयपुराणसावर्णिकेमन्वंतरे देवीमाहात्म्ये भाषाटीकायां द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

ऋषिरुवाच ॥ एतत्ते कथितं भूपदेवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥
एवं प्रभावासा देवीयये दंधार्यते जगत् ॥ विद्या तथैव क्रियते
भगवद्विष्णुमायया ॥ १ ॥ तया त्वमे पवैश्य श्व तथैवान्ये विवे-
किनः ॥ मोह्यंते मोहिताश्चैव मोहमेप्यंति चापरे ॥ २ ॥ तामुपैहि
महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥ आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्ग-
दा ॥ ५ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः
सनराधिपः ॥ प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं संशितव्रतम् ॥ ४ ॥
निर्विण्णोति मम त्वेन राज्यापहरणेन च ॥ जगाम सद्यस्तपसे
सच वैश्यो महा मुने ॥ ५ ॥

टीका—फिर ऋषि बोलते भये हे सुरथराजन् तुल्लारे अर्थ सर्ववस्तु का
साधन देवी का श्रेष्ठ माहात्म्य कहा सो देवी ऐसी है के जा करिके यथायो-
ग्य कालके विषे यह जगत् रचा जाता है और पालन किया जाता है और
संहार किया जाता है ॥ १ ॥ और तिस प्रकार भगवद्विष्णु की माया चंडिका
करिके ही ज्ञान उत्पादन किया जाता है और ता करिके तुम और यह वैश्य
और तिसी प्रकार अन्य जे विवेकी हैं ते सब मोहे जाते हैं और मोहित हैं और
मोहकों प्राप्त होंगे ॥ २ ॥ हे राजन् ऐसी भगवती की तुम शरण प्राप्त हो वही
भगवती मनुष्यों करिके आराधन करी दुई मनुष्यों को भोग और स्वर्ग और
मोक्ष देने वाली है ॥ ३ ॥ तब मार्कण्डेय ऋषि बोलते भये कि हे जैमिने इस प्र-
कार सुमेधा ऋषिका वचन सुनकर सुरथ राजा संपादन कियो है व्रत जाने
ऐसा महाभाग सुमेधा ऋषि जो है ताहि प्रणाम करिके पुत्र मित्र कलत्रादि नमें
अति मोह करिके और शत्रुओं करिके राज्य के हरने से दुःखित हुवा तपके
अर्थ वन को जाता भया और तिसी प्रकार वह वैश्य भी जाता भया ॥ ४ ॥ ५ ॥

संदर्शनार्थं मंवायानदीपुलिन्दमास्थितः ॥ सच वैश्यस्तपस्ते

पेदेवीसूक्तं परंजपन् ॥ ६ ॥ तौतस्मिन्पुलिनेदेव्याःकृत्वामू-
र्तिमहीमयीम् ॥ अर्हणांचक्रतुस्तस्याःपुष्पधूपाग्नितर्पणैः॥७॥
निराहारौयताहारौतन्मनस्कौसमाहितौ ॥ ददतुस्तौबालिंचैव
निजगात्रासृगुक्षितम् ॥८॥ एवंसमाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्म
नोः ॥ परितुष्टाजगद्धात्रीप्रत्यक्षंप्राहचंडिका ॥ ९ ॥ देव्यु-
वाच ॥ यत्प्रार्थयतेत्वयाभूपत्वयाचकुलनंदन ॥ मत्तस्तत्प्राप्यतां
सर्वपरितुष्टाददामितत् ॥ १० ॥

टीका—फिर वहां जाके देवीको प्रत्यक्ष करनेके वास्ते नदीके तटपर सु-
रथराजा और वैश्य देवीसूक्त जपता हुवा, तप कर्तेभये ॥ ६ ॥ फिर वे तिस
तटके विषे भगवतीकी मृन्मयी मूर्ति बनाके पुष्प धूप होम तर्पण इन करिके
तिसकी पूजा कर्तेभये ॥ ७ ॥ फिर हविष्य भोजन करनेवाले और निवृत्त
किया है विषयोते मन जिनोंने और ताके विषेही ध्यान करनेको है मन जि-
नोंका और सावधान ऐसे जे सुरथराजा और वैश्य वे भगवतीके अर्थ अपने
शरीरके मांसकी बलि देतेभये ॥ ८ ॥ इसप्रकार भगवतीके विषे मन लगाये
तीन वर्षोंकरिके भगवतीका सम्यक् प्रकार आराधन कर्ते जे सुरथराजा
और समाधिनामा वैश्य तिनके तप करिके प्रसन्न हुई जगत्तोंका धारण कर-
नेवाली चंडिका प्रत्यक्ष होकर बोलतीभई ॥ ९ ॥ देवी बोलतीभई कि हे
सुरथराजन् और हे समाधि वैश्य जो तुम याचना कर्तेहो सो संपूर्ण वस्तु मे-
रे प्रातहो मैं प्रसन्नहुई सब वस्तु दुंगी ॥ १० ॥

मार्कण्डेयउवाच ॥ ततोवन्नेनृपोराज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि ॥
अत्रैवचनिजंराज्यंहतशत्रुबलंबलात् ॥ ११ ॥ सोपिवैश्यस्त
तोज्ञानंवन्नेनिर्विण्णमानसः ॥ ममेत्यहमितिप्राज्ञःसंगविच्युति-
कारकम् ॥ १२ ॥ देव्युवाच ॥ स्वल्पैरहोभिर्नृपतेस्वरा-
ज्यंप्राप्स्यतेभवान् ॥ हत्वारिपूनस्त्वलितंतवतत्रभविष्यति ॥
॥ १३ ॥ मृतश्चभूयःसंप्राप्यजन्मदेवाद्विवस्वतः ॥ साव

णिकोर्नाममनुर्भवान्भुविभविष्यति ॥ १४ ॥ वैश्यवर्ष्यत्वया-
यश्चवरोस्मत्तोभिवाञ्छितः ॥ तंप्रयच्छामिसंसिद्धयैतवज्ञानं
भविष्यति ॥ १५ ॥

टीका—तब मार्कण्डेय ऋषि बोले हे जैमिने ताके अनंतर सुरथराजा
अगले जन्मके विषे भगवतीके सकाशते अचल राज्य मांगतोभयो और फिर
इसी अपने नगरके विषे नष्ट हुवाहे शत्रुबल जाके विषे ऐसो अपनो राज्य
मांगतो भयो ॥ ११ ॥ ताके अनंतर फिर वह बुद्धिमान् वैश्यजी संसारके दुःखों
करिके उद्दिग्धचित्तहुवा यह धनादि मेरा हे और इनका मैं स्वामी हूँ इसप्रकारके
अध्यास करिके उत्पन्न जो संग है ताको नष्ट करनेवालो ऐसो ज्ञान भगवतीके
सकाशते मांगतोभयो ॥ १२ ॥ फिर देवी बोलती भई कि हे सुरथ राजन्
थोडेसे दिनो करिके शत्रुको मार तुम अपने राज्यको प्राप्त होंगे फिर तहां
तुझारा अचल राज्य होगा ॥ १३ ॥ और मरता ही फिर सूर्यके सकाशते
सवर्णके विषे जन्म लेकर पृथ्वीके विषे तू सावर्णिनामा मनु होगा ॥ १४ ॥
और हे वैश्यवर्ष्य तुमने जो मेरेसे वरदान मांगा तांहि परमरूपकी प्राप्तिके
अर्थ देतीहूँ तेरेको ज्ञान होगा ॥ १५ ॥

मार्कण्डेयउवाच ॥ इतिदत्त्वातयोर्देवीयथाभिलषितंवरम् ॥
बभूवांतर्हितासद्योभक्त्याताभ्यामभिष्टुता ॥ १६ ॥ एवंदेव्या
वरंलब्ध्वासुरथःक्षत्रियर्षभः ॥ सूर्याज्जन्मसमासाद्यसावर्णिर्भवि
तामनुः ॥ १७ ॥ इतिश्रीमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरेदेवी
माहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

टीका—तब मार्कण्डेयऋषि बोलतेभये कि हे जैमिने तिनोकरिके भक्तिते
स्तुति किईहुई देवी इसप्रकार सुरथराजाको और समाधिवैश्यको जैसा वां-
छितथा वैसा वर देकर उसी वखत अंतर्द्धान होतीभई ॥ १६ ॥ इसप्र-
कार क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ सुरथराजा भगवतीके सकाशते वरको प्राप्तहोकर ताके

अनंतर सूर्यके सकाशते सवर्णामें जन्मकों प्राप्त होकर सावर्णिनामा मनु होण
॥ १७ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वंतरेदेवीमाहात्म्येभाषाटीकायां
त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

राठदेशांतर्गतलघुजवणायचारुग्रामनिवासिनाश्रीमत्पण्डितवदरीप्रसादा-
त्मजेनपण्डितमधोरामशर्मणामुंबापुर्याम् खशरखगक्षमामितेवत्सरेसप्तशत्या
भाषाटीकानिर्मिता ॥

इदं पुस्तकं श्रीकृष्णदासात्मजखेमराजेन मुंबय्यां स्वकीये

“ श्रीवेङ्कटेश्वर ” मुद्रणालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

शके १८१५ संवत् १९५०

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास

“ श्रीवेङ्कटेश्वर ” छापाखाना—मुम्बई.